बीकानेर ज़िले में स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी काव्य चेत

लेखक : बनवारी लाल साहू

प्रका
कल्प
दाऊ
बीकानेर

मूल्य
रु. १२.00

© सर्वाधिकार सुरक्षित

मुद्रक
राजश्री प्रिंटर्स
के. ई. एम. रोड
बीकानेर

BIKANER ZILLE ME
HINDI KA
BANWA

बीकानेर जिले में स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी काव्य चेतना

लेखक : बनवारी लाल सह

प्रकाशक—
कल्पना प्रकाशन
दाऊजी रोड
बीकानेर

मूल्य
१२.00

© सर्वाधिकार सुरक्षित

मुद्रक
राजश्री प्रिंटर्स
के. ई. एम. रोड
बीकानेर

BIKANER ZILLE MEN SWATANTRYOTTAR
HINDI KAVYA CHETNA
BANWARI LAL SAHU

बीकानेर जिले में स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी काव्य चेतना

लेखक : बनवारी लाल साहू

प्रका.
कल्पना प्रकाशन
दाऊजी रोड
बीकानेर

मूल्य
रु. १२.००

© सर्वाधिकार सुरक्षित

मुद्रक
राजश्री प्रिंटर्स
के. ई. एम. रोड
बीकानेर

BIKANER ZILLE MEN SWATANTRYOTTAR
HINDI KAVYA CHETNA
BANWARI LAL SAHU

बीकानेर जिले में स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी काव्य चेतना

लेखक : बनवारी लाल साहू

प्रकाशक—
कल्पना प्रकाशन
दाऊजी रोड
बीकानेर

मूल्य
रु. १२.००

© सर्वाधिकार सुरक्षित

मुद्रक
राजश्री प्रिंटर्स
के. ई. एम. रोड
बीकानेर

BIKANER ZILLE MEN SWATANTRYOTTAR
HINDI KAVYA CHETNA
BANWARI LAL SAHU

बीकानेर जिले में स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी काव्य चेतना

लेखक : बनवारी लाल सहू

प्रकाशक—
कल्पना प्रकाशन
दाऊजी रोड
बीकानेर

मूल्य
रु. १२.००

© सर्वाधिकार सुरक्षित

मुद्रक
राजश्री प्रिंटर्स
के. ई. एम. रोड
बीकानेर

BIKANER ZILLE MEN SWATANTRYOTTAR
HINDI KAVYA CHETNA
BANWARI LAL SAHU

बीकानेर जिले में स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी काव्य चेतना

लेखक : बनवारी लाल साहू

प्रकाशक—
कल्पना प्रकाशन
दाऊजी रोड
बीकानेर

मूल्य
रु. १२.००

© सर्वाधिकार सुरक्षित

मुद्रक
राजश्री प्रिंटर्स
के. ई. एम. रोड
बीकानेर

BIKANER ZILLE MEN SWATANTRYOTTAR
HINDI KAVYA CHETNA

BANWARI LAL SAHU

बीकानेर जिले में स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी काव्य चेत

लेखक : बनवारी लाल भट्ट

प्रकाशक—
कल्पना प्रकाशन
दाऊजी रोड
बीकानेर

मूल्य
रु. १२.००

© सर्वाधिकार सुरक्षित

मुद्रक
राजश्री प्रिंटर्स
के. ई. एम. रोड
बीकानेर

BIKANER ZILLE MEN SWATANTRYO
HINDI KAVYA CHETN
BANWARI LAL

भूमिका

८२२३
५।६।८०

स्वतंत्रता-प्राप्ति, जो परतंत्रता-काल में साध्य होती है, स्वतंत्रता-काल में साधन बन जाती है। दोनों कालों की चिन्तन-धारा व भाव-धारा में ऐसा अन्तर दिखाई देता है, जो अस्ताचल और उदयाचल में प्राप्त प्रकाश में होता है। प्रथम की लालिमा में रात्रि के अंधकार की आशंका निहित रहती है और द्वितीय की अरुणाभा आलोकमय भविष्य का संकेत लिए रहती है। प्रबुद्ध द्रष्टा अपने काल में सुदूर तक झांककर देख लेते हैं और अपना पथ सुनिश्चित कर लेते हैं। महात्मा गांधी ने जो मार्ग अपनाया था उस पर चलकर हम १५ अगस्त, १९४७ को गन्तव्य तक पहुंचे और स्वतन्त्र हुए।

परतंत्रता-काल में शासक-वर्ग का प्रभुत्व देश की आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनैतिक उन्नति को अवरुद्ध कर देता है। परतंत्र देश के व्यक्ति धीरे-धीरे निराशा और हीनता का अनुभव करने लगते हैं। उनका आत्म-सम्मान लुप्तप्राय हो जाता है और वे मृत का जीवन जीने लगते हैं। उनका हौसला पस्त हो जाता है और वे स्व-रूप को पहचानने में अक्षम हो जाते हैं। सन् १९४७ के पूर्व के भारतीय साहित्य में निराशा, व्यथा, हीनता आदि की अभिव्यक्ति अनेक नामवर कवियों में मिलती है और कहीं इसकी प्रतिक्रिया भी देखने में आती है। पलायन अथवा अदृश्य शक्ति पर आस्था भी ऐसे काल के साहित्य में मिलती है। संक्षेप में, ऐसे काल का साहित्य अस्वस्थ मस्तिष्क की उपज होता है।

१५ अगस्त, ४७ देश की राजनैतिक स्वतन्त्रता का दिन था, पर उसके बाद देश में अनेक महत्त्वपूर्ण घटनाएं घटित हुई हैं, जिन्होंने राष्ट्र-मन को प्रभावित किया है। देश का विभाजन और रक्त पात, गांधीजी की हत्या, संविधान की स्वीकृति, एक-एक करके चार पंचवर्षीय योजनाओं का क्रियान्वयन ऋण-रूप में विदेशी धन का विपुल मात्रा में आगमन, देशी राज्यों का विलीनीकरण और चीन और पाकिस्तान का आक्रमण, भाषाधार प्रान्तों का निर्माण, प्रजातांत्रिक विकेन्द्रीकरण, अवमूल्यन, बैंकों का राष्ट्रीयकरण, चुनाव तथा राजनैतिक अस्थिरता, बांधों और नहरों का निर्माण आदि ऐसी महत्त्वपूर्ण घटनाएं हैं, जो देशवासियों को अप्रभावित नहीं रख सकी हैं। संचार-व्यवस्था के विकास से देश के विभिन्न भागों की दूरी कम हुई है और इस विशाल देश के एक क्षेत्र में घटित घटना इसके दूसरे छोर को प्रभावित करने लगी है। अतः साहित्य-सर्जना, चाहे वगार

बीकानेर जिले में स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी काव्य चेतना

लेखक : बनवारी लाल साहू

प्रक [illegible]
[illegible]
[illegible]
बीकानेर

मूल्य
रु. १२.००

© सर्वाधिकार सुरक्षित

मुद्रक
राजश्री प्रिंटर्स
के. ई. एम. रोड
बीकानेर

BIKANER ZILLE MEN SWATANTRYOTTAR
HINDI KAVYA CHETNA
BANWARI LAL SAHU

[illegible]

भूमिका

८२५२
५।१०।६०

स्वतंत्रता-प्राप्ति, जो परतंत्रता-काल में साध्य होती है, स्वतंत्रता-काल मे साधन बन जाती है। दोनो कालो की चिन्तन-धारा व भाव-धारा मे ऐसा अंतर दिखाई देता है, जो अस्ताचल और उदयाचल मे प्राप्त प्रकाश मे होता है। प्रथम की लालिमा में रात्रि के अंधकार की आशंका निहित रहती है और द्वितीय की अरुणाभा आलोकमय भविष्य का संकेत लिए रहती है। प्रबुद्ध द्रष्टा अपने काल मे सुदूर तक झांककर देख लेते हैं और अपना पथ सुनिश्चित कर लेते है। महात्मा गांधी ने जो मार्ग अपनाया था उस पर चलकर हम १५ अगस्त १६४७ को गन्तव्य तक पहुंचे और स्वतन्त्र हुए।

परतंत्रता-काल मे शासक-वर्ग का प्रभुत्व देश की आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनैतिक उन्नति को अवरुद्ध कर देता है। परतन्त्र देश के व्यक्ति धीरे-धीरे निराशा और हीनता का अनुभव करने लगते हैं। उनका आत्म-सम्मान लुप्तप्राय हो जाता है और वे मृत का जीवन जीने लगते हैं। उनका हौसला पस्त हो जाता है और वे स्व-रूप को पहचानने मे असमर्थ हो जाते हैं। सन् १६४७ के पूर्व के भारतीय साहित्य मे निराशा, व्यथा, हीनता आदि की अभिव्यक्ति अनेक यादगत कवियों में मिलती है और वही इसकी प्रतिक्रिया भी देखने मे आती है। पलायन अथवा अदृश्य शक्ति पर आस्था भी ऐसे काल के साहित्य मे मिलती है। संक्षेप मे, ऐसे काल का साहित्य अस्वस्थ मस्तिष्क की उपज होता है।

१५ अगस्त, ४७ देश की राजनैतिक स्वतन्त्रता का दिन था, पर उसके बाद देश मे अनेक महत्त्वपूर्ण घटनाए घटित हुई हैं, जिन्होने राष्ट्र-मन को प्रभावित किया है। देश का विभाजन और रक्त पात, गांधीजी की हत्या, संविधान की स्वीकृति, एक-एक करके चार पंचवर्षीय योजनाओ का क्रियान्वयन ऋण-रूप मे विदेशी धन का विपुल मात्रा में आगमन, देसी राज्यों का विलीनीकरण और चीन और पाकिस्तान का आक्रमण, भाषाधार प्रान्तों का निर्माण, प्रजातांत्रिक विकेन्द्रीकरण, अवमूल्यन, बैंकों का राष्ट्रीयकरण, चुनाव तथा राजनैतिक अस्थिरता, बांधो और नहरों का निर्माण आदि ऐसी महत्त्वपूर्ण घटनाए हैं, जो देशवासियो को अप्रभावित नहीं रख सकी हैं। संचार-व्यवस्था के विकास से देश के विभिन्न भागों की दूरी कम हुई है और इस विशाल देश के एक क्षेत्र मे घटित घटना
: छोर को प्रभावित करने लगी है। अतः साहित्य-सर्जना, चाहे वह ग

में हो अथवा राजस्थान में, गुजरात में हो अथवा पंजाब में, देशव्यापी समान धर्मिता अपनाये हुए है। अतः बीकानेरी 'काव्य' का स्वतन्त्र विवेचन की प्रवृत्ति से प्रेरित न होकर समग्र हिन्दी-काव्य के अंश को समझने का प्रयास है। अंश से अंशी की ओर गति से पूर्ण की कल्पना संभव है और यह सोपान भी है।

राजनैतिक स्वतन्त्रता के पश्चात् परमुखापेक्षी पंचवर्षीय योजनाओं के कारण देश को ऋणी होकर जीना पड़ रहा है—आर्थिक गुलामी में जीना पड़ रहा है। परतन्त्रता स्वरूप बदलकर आज भी देश में बनी हुई है। हाँ, स्वामित्व इंग्लैंड से चल कर अमेरिका और रूस पहुंच गया है। देश का मस्तिष्क 'योरुप,' के संकेत पर अमेरिका को बेचा या भेजा जा रहा है या उसे 'लाल टोपी' पहनायी जा रही है। राजनैतिक दौड़धूप ने देश की पार्टियों के ध्रुवीकरण के साथ-साथ जनता को भी दो खेमों में से किसी एक में धकेल दिया है। इससे हीनता की भावना और अंधानुकरण को बल मिला है तथा चिन्तन के नाम पर अनुकरण उभरा है। हिन्दी साहित्य को भी अनुवाद और अनुकरण के रूप में बहुत-सी सामग्री इस काल में प्राप्त हुई है।

देश का आर्थिक विकास योजनाबद्ध हो रहा है, पर आलोच्य काल में जिस विपुल साहित्य की सर्जना हुई है वह आबद्ध होकर भी अनाबद्ध है। सन् १९४३ से आरम्भ प्रयोगवाद और १९५३ से आरम्भ नयी कविता' के घेरों में बंधकर चलनेवालों से बाहर भी पर्याप्त काव्य लिखा जा रहा है।

बीकानेर जिले में स्वतन्त्रता से पूर्व तत्कालीन नरेशों की संकीर्ण स्वार्थ प्रेरित विचारधारा के कारण शिक्षा का प्रचार अत्यन्त मन्द गति से हुआ। उन्हें जो अमर्यादित अधिकार परम्परा से प्राप्त थे उनके आतंक से राजनैतिक चेतना राख के नीचे सुलगती आग के समान धुआं ही दे पा रही थी, प्रकाश नहीं। स्वतन्त्र चेता, अनुभूतिशील मनुष्यों की अभिव्यक्ति वाणी-स्वातन्त्र्य के अभाव में कुंठित होकर रह जाती थी। एक खास ढर्रे की चारणी अभिव्यक्ति की धारा तब भी प्रवाहित थी। स्वतंत्रता के एक झोंके ने वाणी-स्वातन्त्र्य के स्फुलिंग को प्रज्वलित कर दिया और वाग्धारा अनेक स्रोतों में बह निकली।

कालक्रम से दृष्टिपात करने पर हिन्दी की खड़ीबोली-काव्यरचना की संक्षिप्त उद्धरणी बीकानेर के साहित्य में मिलती है। गत दो दशकों में देश प्रेम, उपदेशात्मकता, श्रमिक-कृषक-वर्ग के प्रति सहानुभूति, प्रयोगों का आधिक्य, बौद्धिकता का आग्रह आदि कालक्रम से आते से दिखाई देते हैं और फिर सब अपनी अपनी ढफली और अपना-अपना राग अलापने लगते हैं, पर उदयकालीन स्वर मद

है। बीकानेर में साहित्य-क्षितिज पर अब नयी पीढ़ी छायी हुई है, जो 'नयी कविता' के स्वरों में स्वानुभूतियों को व्यक्त करती है। अपने भुक्त क्षणों को, जो यथार्थ में प्रेरित होते हैं वह व्यक्त करती है। उसके द्वारा आस्था-अनास्था की अभिव्यक्ति हुई है और उसकी वैयक्तिकता तथा अह उसके काव्य में स्थान बना सके हैं। उसकी कविता बौद्धिकता से ग्रस्त है। इन्हीं कुछ स्थापनाओं को प्रस्तुत प्रबन्ध में लेखक ने चौथे अध्याय में व्यक्त किया है। इसमे पूर्व दूसरे अध्याय में उसने बीकानेर जिले के कवियों की काव्य-रचनाओं का सक्षिप्त परिचय दिया है। 'शिल्पचेतना' शीर्षक से कलापक्ष के विचार को सर्वांगीण बनाने का प्रयास किया है। प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध का अन्तिम अध्याय सन्धाकारी है पर महत्वपूर्ण है। लेखक ने कुछ शब्दों तथा भावों को चुनकर उनके द्वारा यह दिखाया है कि प्रत्येक क्षेत्र के साहित्य की निजी शब्द-सपति व भाव-सपति होती है, जो अपना राष्ट्रीय महत्त्व रखती है।

'बीकानेर जिले में स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी काव्य-चेतना, लघु शोध-प्रबन्ध श्री बनवारी लाल सहू के, जो मेरे शिष्य हैं मनोयोग से किये गये परिश्रम का सफल परिणाम है। बिखरी सामग्री को सकलित करने से लेकर उसका विश्लेषण, वर्गीकरण, प्रस्तुतीकरण आदि की जटिलताओं में से निकलते हुए प्रस्तुत शोध प्रबन्ध को जो सुव्यवस्थित रूपाकार दिया है, उसे देखकर मुझे प्रसन्नता हुई है।

सहू का यह प्रथम प्रयास बीकानेर के शोध-छात्रों को दिशा और प्रेरणा दे रहा है और मेरा विश्वास है कि भविष्य में भी देता रहेगा। मैं इसका स्वागत करता हू।

डॉ० कन्हैयालाल शर्मा
अध्यक्ष, हिन्दी-विभाग
डूंगर महा विद्यालय, बीकानेर

में हो अथवा राजस्थान में, गुजरात में हो अथवा पंजाब में, देशव्यापी समान धर्मिता अपनाये हुए है। अतः बीकानेरी 'काव्य' का अध्ययन विखंडन की प्रवृति से प्रेरित न होकर समग्र हिन्दी-काव्य के अंश को समझने का प्रयास है। अंश से अंशी को और खंड से पूर्ण की कल्पना संभव है और यह सोपान भी है।

राजनैतिक स्वतंत्रता के पश्चात् परमुखापेक्षी पंचवर्षीय योजनाओं के कारण देश को ऋणी होकर जीना पड़ रहा है—आर्थिक गुलामी में जीना पड़ रहा है। परतन्त्रता स्वरूप बदलकर आज भी देश में बनी हुई है। हाँ, स्वामित्व इंग्लैंड से चल कर अमेरिका और रूस पहुंच गया है। देश का मस्तिष्क 'बोहरे,' के संकेत पर अमेरिका को बेचा या मेजा जा रहा है या उसे 'लाल टोपी' पहनायी जा रही है। राजनैतिक खेमे बंदी से देश की पार्टियों के ध्रुवीकरण के साथ-साथ जनता को भी दो खेमों में से किसी एक में धकेल दिया है। इससे हीनता की भावना और अंधानुकरण को बल मिला है तथा चिन्तन के नाम पर अनुकरण उभरा है। हिन्दी साहित्य को भी अनुवाद और अनुकरण के रूप में बहुत-सी सामग्री इस काल में प्राप्त हुई है।

देश का आर्थिक विकास योजनाबद्ध हो रहा है, पर आलोच्य काल में जिस विपुल साहित्य की सर्जना हुई है वह वादबद्ध होकर भी अनाबद्ध है। सन् १९४३ से आरम्भ प्रयोगवाद और १९५३ से आरम्भ नयी कविता' के घेरों में घुसकर चलनेवालों से बाहर भी पर्याप्त काव्य लिखा जा रहा है।

बीकानेर जिले में स्वतन्त्रता से पूर्व तत्कालीन नरेशों की गर्वीली स्वार्थ प्रेरित विचारधारा के कारण शिक्षा का प्रचार अत्यन्त मन्द गति से हुआ। उन्हें जो अमर्यादित अधिकार परम्परा से प्राप्त थे उनके कारण न राजनैतिक चेतना राख के नीचे सुलगती आग के समान धुआं ही दे पा रही थी, प्रकाश नहीं। स्वतन्त्र चेता, अनुभूतिशील मनुष्यों की अभिव्यक्ति वाणी-स्वातन्त्र्य के अभाव में होकर रह जाती थी। एक साथ दबे की चारणी अभिव्यक्ति की धारा प्रवाहित थी। स्वतंत्रता के एक झोंके ने वाणी-स्वातंत्र्य के स्फुरित कर दिया और काव्यधारा अनेक स्रोतों में बह निकली।

कालक्रम से दृष्टिपात करने पर हिन्दी की लोकी संक्षिप्त उद्धरणी बीकानेर के साहित्य में मिलती है। वन दो उपदेशात्मकता, श्रमिक-कृषक-वर्ग के प्रति सहानुभूति, प्रयोगों कता का आग्रह आदि कालक्रम से आते से दिखाई देते हैं अपनी दूसरी ओर अपना-अपना रास्ता बनाने लगते हैं, पर

राजाओं ने साहित्य-रचनाओं में जो योग दिया है, उसकी भी चर्चा हुई है। द्वितीय अध्याय में इस जिले के कवियों की प्रकाशित और अप्रकाशित रचनाओं का संक्षिप्त आलोचनात्मक परिचय दिया गया है और प्रयास यह किया गया है कि कोई महत्वपूर्ण रचना अनालोचित न रह जाये। वैज्ञानिक अध्ययन की दृष्टि से इस अध्याय में आलोच्यकाल के पूर्व के हिन्दी कवियों पर तनिक विस्तार से विचार इसलिए किया है कि उन्हीं कवियों की रचनाएं हमारी परम्परा के आधार शेष अध्यायों में बनी हैं। तृतीय अध्याय काव्य-रूप-विषयक है। इस क्षेत्र में केवल गीत और मुक्तक आलोच्यकाल में मिले हैं। विविध गीत-रूपों और मुक्तक प्रकारों के आधार पर यहां के काव्य का रूप निर्धारण किया गया है। चतुर्थ अध्याय का शीर्षक जिले के काव्य की अन्तश्चेतना है। इस अध्याय में इस क्षेत्र में जो बहुमुखी विषय-वस्तु सामने आयी उसका गहराई से अध्ययन किया गया है। पांचवा अध्याय बहिश्चेतना का है जिसमें काव्य के बाह्य पक्ष, भाषा, छन्द, अलंकार आदि पर विचार हुआ है; जिसमें यह ध्यान रखा गया है कि इस क्षेत्र के काव्य में उपर्युक्त शीर्षकों के अन्तर्गत विचारित विषयों में क्या मौलिकताएं और विशिष्टताएं हैं। वैशिष्ट्य और योगदान इस लघुशोध-प्रबन्ध का अन्तिम और महत्वपूर्ण अध्याय है, जिसमें मैंने यह दिखाया है कि भाव-पक्ष और कला की दृष्टि से यहां के काव्य ने शेष हिन्दी काव्य को क्या दिया है और निष्कर्ष रूप में यह बताया है कि यहां का काव्य हिन्दी काव्य की सही प्रतिलिपि नहीं है, अपितु उसमें मौलिक क्षमताएं हैं।

विषय की क्षेत्रीयता मेरे लिए अवश्य ही समस्या बनकर आयी है। साधन और समय के अभाव ने इस अध्ययन को जटिल बनाया है। पत्र-व्यवहार, मित्रवर्ग और अध्यापक मेरे इस अध्ययन में सहायक बने हैं। लेखक का प्रयास सदैव यह रहा है कि इस काल की कोई महत्त्वपूर्ण सामग्री छूट न जाये, फिर भी किसी कवि-विशेष के असहयोग या मेरी असमर्थता से कुछ छूटा है तो इसमें लेखक की विवशता ही समझनी चाहिए।

प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध डॉ० कन्हैयालाल जी शर्मा के निर्देशन में पूरा हुआ है। गुरुवर के पाण्डित्यपूर्ण निर्देशन एवं असीम स्नेह के लिए मैं उनका अत्यन्त ही अनुगृहीत हूँ। आदरणीय श्री हरिराम जी तिवारी का मैं अत्यन्त आभारी हूँ

वाचस्पति श्री विद्याधर जी शास्त्री एवं स्वर्गीय श्री नाथूराम जी खड़गावत ने बीकानेर के प्राचीन साहित्य के सम्बन्ध में मेरी तत्सम्बन्धी जिज्ञासाओं का समाधान किया है, इसके लिए मैं इन विद्वानों का अत्यन्त आभारी हूं। डूंगर महाविद्यालय के व्याख्याता डॉ० मदन केवलिया, डॉ० ब्रजनारायण पुरोहित, श्री रामदेव आचार्य, वातायन के सम्पादक श्री हरीश भादानी, सादूंल स्कूल के अध्यापक आचार्य चन्द्रमौलि जी आदि सभी गुरुजनों एवं विद्वानों के प्रति मैं अपना हार्दिक आभार प्रकट करता हूं जिन्होंने समय-समय पर इस प्रबन्ध से सम्बन्धित मेरी कठिनाइयों का निवारण किया है। मैं उन सभी कवियों का भी आभारी हूं जिन्होंने अपनी अप्रकाशित रचनाओं का उपयोग करने दिया है। सेनानी, लोकमत वातायन, मरुदीप आदि पत्र-पत्रिकाओं के सम्पादकों का आभार मानना मैं अपना कर्त्तव्य समझता हूं; जो मुझे आवश्यकतानुसार पत्र एवं पत्रिकाएं देते रहे हैं। नरेन्द्र कुमार, कृष्णचन्द्र शर्मा, 'सरल' कन्हैया ओझा, रामस्वरूप विश्नोई, किसन लाल पाराशिया आदि मित्र भी धन्यवाद के पात्र हैं, जिन्होंने इस प्रबन्ध से सम्बन्धित सामग्री एकत्र करने में मेरी सहायता की है। डॉ० पूनम दईया एवं 'सरल' ने यदि इसके मुद्रण की व्यवस्था न की होती तो शायद मैं इसे आप तक पहुंचाने में असमर्थ ही रहता, इसके लिए मैं उनका आभारी हूं।

आदरणीय डॉ० कन्हैयालाल जी शर्मा ने अपने व्यस्त समय में इस प्रबन्ध की भूमिका लिख कर गुरु-स्नेह दिखाया है। श्रद्धेय गुरुवर के प्रति मैं श्रद्धानत हूं।

अन्त में, मैं यही निवेदन करना चाहूंगा कि यह प्रबन्ध जैसा भी बन पड़ा है उसे ही नीर-क्षीर विवेकी सरस्वती-पुत्रों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए सतोष का अनुभव कर रहा हूं।

बनवारी लाल सहू

स्वतन्त्रता दिवस, १९७०

बीकानेर जिले में स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी काव्य-चेतना

बनवारी लाल सहू

बीकानेर जिले का काव्य परिवेश १

बीकानेर का प्रागैतिहासिक स्वरूप बीकानेर की स्थापना, बीकानेर जिले का विस्तार और सीमा, बीकानेर जिले का इतिहास, बीकानेर जिले की भौगोलिक विशिष्टताएं, बीकानेर की परिस्थितियाँ, राव बीका से लेकर शार्दूलसिंह के पूर्व तक के इतिहास पर एक दृष्टि, राष्ट्रीय आन्दोलन और बीकानेर, शार्दूलसिंह से लेकर भारत के पुनर्गठन तक बीकानेर की राजनैतिक स्थिति, बीकानेर राज्य में शरणार्थी और शार्दूलसिंह, शार्दूलसिंह और एकीकरण, १९४७ से आजतक की राजनैतिक स्थिति, सामाजिक परिस्थिति, धार्मिक परिस्थिति बीकानेर जिले की साहित्यिक परिस्थिति ।

बीकानेर जिले में हिन्दी काव्य सर्जना २१

स्वातन्त्र्य पूर्व काव्य, स्वातन्त्र्योत्तर काव्य

बीकानेर जिले के काव्य रूप ८६

काव्य के तत्व, काव्य का वर्गीकरण, बीकानेर के काव्य के रूप, गीति काव्य, मुक्तक काव्य

बीकानेर काव्य की अन्तश्चेतना (कथ्य) १०१

बीकानेर के काव्य मे प्रकृति-चित्रण, नारी एवं प्रेम का चित्रण, राष्ट्रीय भावना का चित्रण, शोषक-शोषितों के प्रति प्रगतिवादी दृष्टि, रूढ़ियो

[illegible]
[illegible] वस्तुओं का चित्रण, चरित्र, कथाएं और मौलिकता का चित्रण,
वैज्ञानिकता एवं तर्क की क्षमता, कल्पना और आदर्श का स्तर

बीकानेर काव्य की शिल्पचेतना १२३

रस, अलंकार, उपमानों की नवीनता, प्रतीक, बिम्ब, शैली, भाषा
शब्द-समूह, मुहावरे, शब्द-शक्तियां, काव्य गुण, छंद।

हिन्दी साहित्य में बीकानेर काव्य का वैशिष्ट्य और योगदान १४३

भाव-वैशिष्ट्य और योगदान, शिल्प वैशिष्ट्य और योगदान

पुस्तकों की सूचि १५८

बीकानेर जिले का काव्य परिवेश

भारतवर्ष सभ्यता और संस्कृति की दृष्टि से विश्व में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है। प्राचीन काल मे इस देश मे बहुत सी जातियों का उत्थान और पतन हुआ, किंतु इतना-कुछ होने पर भी इसकी सभ्यता एव सस्कृति को आंच नही आयी, वह ज्यो की त्यों बनी रही। अपनी समन्वय की विशेषता के फल-स्वरूप इसमे अनेक जातियो का समन्वय हुआ है। बाहर से आने वाली जातियो ने भारतीय सभ्यता एव संस्कृति से बहुत कुछ सीखा है।

बीकानेर का प्रागैतिहासिक स्वरूप

भारतवर्ष कई प्रातो मे विभक्त है जिसमे से एक राजस्थान है। यही राजस्थान पहले राजपूताना के नाम से जाना जाता था। इस प्रदेश को हम भारतवर्ष की वीर भूमि कह सकते हैं। बीकानेर इसी प्रदेश का एक भाग है, जो कि राजस्थान के उत्तर पश्चिम मे है। बीकानेर जिले दूर-दूर सैकड़ो मीलो तक बालू के टीले ही टीले दृष्टिगत होते हैं। पौराणिक मतो के अनुसार बीकानेर का प्राचीन नाम जागल देश था।[1] जागल देश से अभिप्राय खेजड़ा, कैर और आक के शुष्क प्रदेश का भी है।[2] दूसरा कारण यह भी है कि बीकानेर के राजा जागल देश के स्वामी होने के कारण आज भी जगलधर बादशाह कहलाते हैं। इसकी पुष्टि बीकानेर राज्य-चिन्ह के लेख से होती है।[3] परन्तु भूगोल-शास्त्रियों के अनुसार यह प्रदेश प्रारभ मे रेगिस्तान नहीं था, अपितु जूरेसिक, कीटेशियम और इमोसीन के युगो मे बीकानेर और जैसलमेर का भाग समुद्र से घिरा हुआ था

१— गौरीशकर हीराचन्द ओझा – बीकानेर राज्य का इतिहास (पहला भाग) पृ० १

२— गौरीशकर आचार्य बीकानेर परिचय पृ० २

३— गौरीशकर हीराचन्द ओझा – बीकानेर राज्य का इतिहास (पहला भाग) पृ० १

जो समुद्र टेथिस के नाम से था ।[1] टेरसरी युग में इस स्थिति में परिवर्तन हुआ और यह भाग पृथ्वी की आन्तरिक शक्तियों के परिवर्तन के कारण ऊपर उठने लगा। इस युग मे अमेरिका का बहुत सा भाग ग्लेशियरों से ढ़का हुआ था। धीरे-धीरे इस भू परिवर्तन से भूमि ऊपर उठती गई और समुद्र समाप्त हो गया तथा रेतिला भाग निकल गया । इस प्रकार इस प्रदेश का जागल नाम याद का प्रतीत होता है। इसके अतिरिक्त वाल्मीकि रामायण मे इसके मरुस्थल में परिणत होने की एक सुन्दर गाथा मिलती है।[2]

इन सभी बातों से यह स्पष्ट होता है कि यह भाग पहले समुद्र से ढका हुआ था और धीरे-धीरे पृथ्वी की आन्तरिक शक्तियों के परिवर्तन से समुद्र में विलीन हो गया तथा इस भूभाग की सृष्टि हुई। यही कारण है कि इस प्रदेश में आज भी शख, सीप, कोड़ी, गोल पत्थर (Round-Stone) आदि मिलते हैं, जो इस बात को प्रमाणित करते हैं कि इस विशाल रेतीले भू-भाग पर कभी समुद्र लहराता था।

बीकानेर के इस रेतीले भाग पर आज कोई भी नदी नहीं बह रही है। लेकिन पुरातत्व की खोजों के आधार पर यह कहा जाता है कि इसकी पश्चिमी सीमा पर पहले सरस्वती नदी बहा करती थी, जो आज बिलकुल सूख गई है।[3] इसके अतिरिक्त सिन्धु नदी की सहायक नदी घग्गर थी, जो पहले हाकड़ के नाम से प्रसिद्ध

१— गौरीशंकर ओझा — बीकानेर परिचय पृ० ५

२— वाल्मीकि रामायण के युद्ध कांड के बाइसवें सर्ग में लिखा है कि जिस समय रामचन्द्र जी ने लंका पर चढ़ाई की और उस समय जब समुद्र ने रामचन्द्र जी को मार्ग देने से इन्कार कर दिया तो रामचन्द्र ने समुद्र से मार्ग के लिए प्रार्थना की, लेकिन उस प्रार्थना का कोई प्रभाव नहीं पड़ा। आखिर रामचन्द्र ने क्रोधित होकर अपना तीर सम्भाला। इस पर समुद्र स्वयं रामचन्द्रजी के सामने उपस्थित हुआ और प्राण रक्षा की भीख मांगी। समुद्र ने रामचन्द्र के इस बाण को उत्तर में स्थित द्रुमकुल्य भाग पर चलवाकर अपने प्राण बचाये। ऐसा कहा जाता है कि उसी दिन से वहाँ से जल सूख गया और इस मरुस्थल की उत्पत्ति हुई।

३— गौरी

थी, इसके उत्तरी भाग में बहती हुई सिन्धु में जाकर मिलती थी।[1] भूमितल के ऊपर उठ जाने से आज वह बंद हो गई है, किंतु उसके सूखे मार्ग का तो पता अब भी चलता है। वर्षा ऋतु में पानी इसी मार्ग से हनुमानगढ़, सूरतगढ़ होता हुआ, अनूपगढ़ पहुंच जाता है जिसे आजकल 'नाली' कहा जाता है।

बीकानेर की स्थापना

जहां सोने की चिड़िया भारतवर्ष ने विदेशी आक्रमणकारियों को शताब्दियों से ललचाया है वहां उसका यह भूभाग राजस्थान अपने कुशल और प्रतापी शासकों की वीरता और भौगोलिक कारणों से जनित दुर्गमता के फलस्वरूप अपनी स्वाधीनता और अखंडता को अक्षुण्ण बनाये रहा है। इसके भी एक खंड बीकानेर जिसे ने अपनी रेतीली प्रकृति और जनसंख्या की स्वल्पता के कारण आक्रमकों को अपनी ओर तनिक भी आकर्षित नहीं किया है। राठौड़ों का बीकानेर राज्य पर अधिकार होने से पूर्व यह राज्य बहुत से भागों में विभक्त था। इसके पूर्व यहां बहुत सी जातियों ने राज्य किया।[2] इन जातियों का क्रम किस-किस प्रकार से रहा इसके बारे में निश्चित रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता। हां, इतना अवश्य कहा जा सकता है कि राव बीका से पहले इस क्षेत्र पर जाटों का अधिकार था।[3]

बीकानेर के राजा जोधपुर के राव जोधा के पुत्र बीका के ही वंशधर हैं। ऐसा कहा जाता है कि एक दिन राव जोधा अपना दरबार लगाये बैठे थे और बीकाजी दरबार में कुछ देर से आये और आते ही अपने चाचा (कांधल) के कान में धीरे-धीरे कुछ कहने लगे। इस पर राव जोधाजी ने मजाक करते हुए कहा कि आज चाचा भतीजे में क्या कानाफूसी (Whisper) हो रही है, क्या कोई नये राज्य की स्थापना करने की योजना है? कहते हैं कि इस ताने को सुन कर उसी

जिस से इन दोनों ने नये राज्य की स्थापना करने का दृढ़ निश्चय कर लिया।[1]

राव बीकाजी नये राज्य की स्थापना करने के लिए एक छोटी सी सेना का संगठन करके ३० सितम्बर, १४६५ (वि० सं० १५२२) को जोधपुर से रवाना हुए। कहते हैं कि इस समय राव बीका के साथ केवल १०० घोड़े और ५०० राजपूत थे।[2] बीका ने प्रथम पड़ाव मंडोर में डाला। उसके उपरान्त वे देशनोक पहुंचे जहां उन्हें करणीजी के दर्शन हुए तथा उनका आशीर्वाद प्राप्त करके और उनके कहने के अनुसार चांडासर में रहने लगे। इस स्थान के बाद उन्होंने कोडमदेसर में प्रवेश किया और यहां इन्होंने अपने आप को राजा घोषित किया। यहां से जांगलू पहुंच कर सांखलों के ८४ गांवों पर अपना अधिकार कर लिया। करणीजी की सहायता से ये पुगल के भाटी राव शेखा की पुत्री रंग कंवरी से विवाह करने में सफल हुए।[3] यही कारण है कि आज भी बीकानेर के नरेश करणी माता में विश्वास रखते हैं।

सन् १४७८ में बीकाजी ने कोडमदेसर में एक गढ़ बनवाना प्रारम्भ किया जिसके फलस्वरूप इन्हें भाटियों से युद्ध करना पड़ा। इस युद्ध में बीकाजी सफल अवश्य हुए परन्तु भाटियों की छेड़ छाड़ बंद नहीं हुई। इस पर राव बीकाजी ने और किसी स्थान पर गढ़ बनवाने का निर्णय किया। इस नये किले के लिए नापा सांखला से सलाह की गयी। सन् १४८५ (सं० १५४२) में नये किले की नींव राती घाटी पर डाली, जो वर्तमान किले से लगभग दो मील दक्षिण-पश्चिम में अवशेष रूप में आज भी मिलता है। इसी किले के आस-पास बीकाजी ने

१— Captain P. W. Powlett — Gazetter of the Bikaner State P. 9

— (ख) गौरीशंकर हीराचन्द ओझा –बीकानेर का इतिहास (पहला भाग) पृ० ९०

२— ,, ,, ,, ,, ,, ,, ९१

३— Captain P. W. Powlett — Gazetteer of the Bikaner State P. 23

१२ अप्रेल, सन् १४८८ (सं० १५४५) को अपने नाम पर बीकानेर नगर बसाया।[1] बीकानेर की स्थापना के सम्बन्ध में यह दोहा भी प्रसिद्ध है:—

पनरं सै पैंतालवे सुद वैशाख सुमेर
थावर बीज थरप्पियो, बीके बीकानेर[2]

Bisakh, the month, the day, tha second, fifteen four five the year. And sixth day of the week when Bika founded Bikaner[3]

बीकानेर जिले का विस्तार और सीमा

वर्तमान बीकानेर जिला २७ १५ से २९ १५ अक्षांश उत्तर में तथा ७२ २० से ७४'४० पूर्वी देशान्तर में स्थित है। इसका कुल क्षेत्रफल १०,१५० वर्ग मील है। प्रशासन की सुविधानुसार यह जिला दो उप खण्डों में विभाजित है। बीकानेर तथा लूनकरनसर उत्तरी खंड में तथा नोखा और कोलायत दक्षिणी उप-खंड में है। यही इस जिले की चार तहसीलें हैं। इस जिले में १२३ ग्राम पंचायतें तथा २६ न्याय पंचायतें, चार पंचायत समितियाँ और ६६० ग्राम हैं। इसके उत्तर पूर्व में गंगानगर और चूरू, पूर्व में चूरू, दक्षिण पूर्व में नागौर और चूरू, दक्षिण में जोधपुर और नागौर, दक्षिण पश्चिम में जैसलमेर और जोधपुर तथा पश्चिम

१— बीकानेर की राजधानी के निर्माण के लिए उसने जो स्थान पसंद किया था, उसका अधिकारी एक जाट था। उस जाट से बीका ने उस स्थान की मांग की और कहा — राजधानी बनाने के लिए यदि आप यह स्थान हमें दे देंगे तो अपने और आपके नाम को जोड़कर मैं इस राज्य का नाम रखूंगा। उस जाट ने हर्ष पूर्वक बीका की इस मांग को स्वीकार कर लिया। इसके बाद राजधानी का निर्माण हुआ और मरुभूमि में बीका ने जिस राज्य की प्रतिष्ठा की, उसका नाम बीकानेर रखा गया। उस जाट का नाम नेरा था।

कर्नल टाड — राजस्थान का इतिहास पृष्ठ ५१५

२— गौरीशंकर हीराचन्द ओझा —बीकानेर राज्य का इतिहास (पहला भाग) पृष्ठ ९३

३— Captain P. W. Powlett — Gazetter of the Bikaner State P. 3

मे पाकिस्तान है । और उत्तर पश्चिम में गंगानगर जिला है ।

बीकानेर जिले का इतिहास

बीकानेर जिले का इतिहास राव बीका से प्रारंभ होता है । १२ अप्रै १४८८ से लेकर २० मार्च १९४९ तक बीकानेर एक राज्य के रूप मे रहा जिसमे वर्तमान बीकानेर, चूरू और गंगानगर जिलो का क्षेत्र जाना जा स है ।[1] अर्थात् बीकानेर, चूरू और गंगानगर जिले का सम्मिलित रूप ही १९४९ से पहले बीकानेर राज्य के नाम से जाना जाता था । लगभग ५०० व तक बीकानेर राज्य पर एक वंश (राठौड़) का अधिकार रहा है । सन् १९४ बीकानेर राज्य का विलीनीकरण हो गया और राजस्थान का निर्माण हु इस समय बीकानेर राज्य तीन जिलो[2] मे बाट दिया गया ।

बीकानेर जिले की भौगोलिक विशेषताए

बीकानेर जिले का अधिकाश भाग रेतीला है जिसमे २७ से १०० फीट की ऊचाई तक रेतीले टीले पाये जाते हैं । बीकानेर मे कुछ कडी भूमि है जो 'मगरा' कहलाती है । समुद्रतट से बीकानेर जिले की ऊचाई लगभग ७०० से १२०० फीट है । बीकानेर स्वय आसपास के धरातल से ७३६ फीट ऊचे चट्टान पर बसा हुआ है । जिले मे कोई स्थायी नदी नही है. नाले है जो वर्षा ऋतु मे पानी से भर जाते हैं ।

यहा की जलवायु शुष्क एव गर्म है । वर्षा के अभाव मे इस जिले मे जगलो का अभाव है । यहा खेजडा, नीम तथा बबूल के पेड प्राय मिलते हैं । रेत के टीलों पर भी सेवान, चना फोग, भुरट, करील तथा गाँठिया घास मिलता है । यहाँ की मुख्य उपज बाजरा, मोठ, ग्वार है । खाद्यान्न की दृष्टि से यह जिला आत्मनिर्भर नही है । बीकानेर जिले का मतीरा प्रसिद्ध है ।

इस जिले का मुख्य उद्योग पशु पालन है । बीकानेर का ऊट काफी प्रसिद्ध है । राजस्थान भर मे अच्छी नस्ल के ऊट यही से भेजे जाते हैं । यहा क

१— डॉ० करणीसिंह — बीकानेर के राजघराने का केन्द्रिय सत्ता से सम्बन्ध पृ० १

२— बीकानेर, गगानगर, चूरू ।

इसका प्रमुख पशु भेड़ है । राजस्थान में सबसे अधिक ऊन बीकानेर जिले में ही होती है । यह जिला ऊन उद्योग के लिए भारत में प्रसिद्ध है । प्रति वर्ष लगभग बीस लाख पौंड बढ़िया किस्म की ऊन बीकानेर में उत्पन्न होती है ।

भूगर्भ की दृष्टि से यह जिला बहुत ही सौभाग्यशाली है । यह जिला जिप्सम के लिए प्रसिद्ध है । भारत में पाये जाने वाले जिप्सम की सबसे अधिक ९० प्रतिशत मात्रा राजस्थान तथा राजस्थान में सबसे अधिक मात्रा जामसर में उपलब्ध होती है । बीकानेर जिले में कोयले और लाल पत्थर की भी खानें हैं ।

बीकानेर की परिस्थितियां

साहित्य और जीवन का अटूट सम्बन्ध है । जीवन की प्रतिच्छाया साहित्य में झलकती है । एक ओर साहित्य जीवन का अनुकरण करता है और दूसरी ओर यह जीवन का मार्ग प्रदर्शन भी करता है । मानव जीवन पर कई बातों का गहरा प्रभाव पड़ता है जैसे उसका राजनैतिक, धार्मिक और सामाजिक जीवन । राजनैतिक वातावरण मानव के जीवन में बहुत परिवर्तन ला देता है । यही राजनैतिक परिवर्तन साहित्य को भी प्रभावित करता है । विश्व के इतिहास को देखें तो यह स्पष्ट हो जाता है कि जहां पर भी क्रान्ति हुई उसको साहित्य से बहुत अधिक प्रेरणा प्राप्त हुई ।

अतः बीकानेर में काव्य चेतना को समझने से पूर्व यहां की परिस्थितियों को समझना उचित ही होगा ।

राजनैतिक परिस्थिति (स्वतन्त्रता से पूर्व)

राव बीका से लेकर शार्दूलसिंह के पूर्व तक के इतिहास पर एक दृष्टि :–

बीकानेर की स्थापना से लेकर स्वतन्त्रता–प्राप्ति तक यहां पर एक ही वंश (राठौड़) का राज्य रहा है । इसका कारण यह था कि यहां के नरेशों ने अपने राज्य रक्षा के लिए कभी भी अपने प्राणों का मोह नहीं किया । ऐसे बहुत से अवसर आये जब इन्होंने अपनी वीरता का परिचय दिया । राजनैतिक दृष्टिकोण से इस काल को दो भागों में विभक्त किया जा सकता है । प्रथम वह, जब भारत वर्ष पर मुगलों ने राज्य किया और दूसरा वह, जब यहां पर अंग्रेजों ने राज्य किया बीकानेर राज्य की यह विशेषता रही है कि इसका सम्बन्ध मुगलों के साथ

मित्रता का रहा है, किंतु यह मित्रता किसी दुर्बलता के कारण नहीं थी। समय आने पर इन्होंने मुगलों से युद्ध भी किये। बाबर की मृत्यु के बाद जब काम ने सेना सहित भटनेर (हनुमानगढ) पर चढ़ाई कर दी और उस समय यह कि खेतजी (कांधल के पौत्र) के अधिकार में था। इस समय खेतजी इस युद्ध में वी गति को प्राप्त हुए और यहां मुगलों का अधिकार हो गया। इसके बाद का की सेना बीकानेर की ओर बढ़ी। जब जैतसी को इस बात का पता चला तो भी अपनी सेना लेकर चल पड़ा और उपयुक्त अवसर देख कर एक रात को अपनी सेना सहित मुगलों की सेना पर टूट पड़ा, जिससे कामरां को युद्ध से भा पड़ा। जैतसी की यह उल्लेखनीय विजय है।[1] जैतसी जोधपुर के राजा मालदेव से युद्ध करता हुआ मारा गया। इससे बीकानेर का बहुत सा भाग जोधपुर के अधिकार में चला गया। लेकिन कल्याण मल ने अपनी चतुरता से मुसलमानों से मित्रता स्थापित करके तथा शेरशाह की सहायता से यह भाग फिर अपने अधिकार में कर लिया। शेरशाह के पश्चात देश में मुगलों का बोलबाला हुआ और हुमायूं ने पुनः शासन हस्तगत किया, पर हुमायूं का जीवन भटकते ही बीता। अकबर के समय बीकानेर के महाराजा कल्याणमल ने जो मित्रता मुगलों के साथ की वह मुगलों के पतन तक बनी रही। बीकानेर के नरेशों में से महाराजा अनूप-सिंह, महाराजा गजसिंह तथा महाराजा रतनसिंह को मुगल बादशाहों की ओर से विभिन्न अवसरों पर "माहीमरातिब" का सर्वोच्च सम्मान प्राप्त हुआ, जो इस बात का सूचक है कि मुगलों के दरबार में बीकानेर का स्थान बड़ा ऊंचा रहा।[2]

कालान्तर में औरंगजेब की धार्मिक कट्टरता और असहिष्णुता के कारण राज्य के केन्द्र से सम्बन्ध टूट गये। ज्यों-ज्यों मुगल साम्राज्य पतन की ओर जाने लगा त्यों-त्यों बीकानेर के नरेशों ने अपनी मित्रता में भी कमी कर दी। इस समय जोधपुर ने कई बार बीकानेर को हड़पने का असफल प्रयत्न किया। यह समय बहुत ही संकट का था। देश में कई स्थानों पर ईस्ट इण्डिया कम्पनी का अधिकार हो गया। मरहठों की शक्ति छिन्न-भिन्न हो गई। राजपूत आपस में लड़ रहे थे। इतनी अव्यवस्था में भी महाराजा गजसिंह ने अपने राज्य को रक्षा

१— डॉ० गौरीशंकर हीराचन्द ओझा – बीकानेर राज्य का इतिहास (पहला भाग) पृष्ठ १३०, १३२

२— गौरीशंकर आचार्य – बीकानेर एक परिचय, पृष्ठ ४२

बड़ी कुशलता पूर्वक की। अंग्रेजों के साथ बीकानेर के प्रारम्भ से ही अच्छे सम्बन्ध रहे, जिनसे बीकानेर में हर तरफ से सुधार हुए। आवश्यकता पड़ने पर बीकानेर नरेशों ने अंग्रेजों की धन और जन से सहायता भी की। बीकानेर में डूंगरसिंह ने सुधार के कार्य किये। डूंगरसिंह के कोई सन्तान न होने के कारण उन्होंने अपने भाई गंगासिंह को अपना उत्तराधिकारी बनाया,[1] जो सात वर्ष की आयु (दिसम्बर ३१, १८८७) में बीकानेर के स्वामी बने।[2] गंगासिंह का शासनकाल बीकानेर राज्य के इतिहास में स्वर्णयुग माना जाता है। गंगनहर के निर्माण का कार्य उनका बहुत ही प्रशंसनीय है। गंगासिंह ने कई बार अन्तर्राष्ट्रीय मामलों में भारत का प्रतिनिधित्व किया।[3]

राष्ट्रीय आन्दोलन और बीकानेर —

अंग्रेजों के चुंगुल से देश को निकालने का प्रयत्न कांग्रेस की स्थापना के साथ ही हो गया था, परन्तु महात्मा गांधी के राजनैतिक क्षेत्र में आने से पहले यह आन्दोलन कुछ सीमित था। गांधी-युग के साथ सार्वजनिक जीवन में एक नये अध्याय का श्री गणेश हुआ। इस समय राष्ट्र ने परावलम्बी वृत्ति को त्याग कर स्वावलम्बन, असहयोग और सत्याग्रह के मार्ग को अपनाया। एक वर्ष में (सन् १९२१-२२) स्वराज्य प्राप्ति की आकांक्षा इतनी तेजी से फैली कि देशी राज्यों की जनता जो अब तक सो रही थी वह भी जाग उठी।

बीकानेर की जनता में भी इन्हीं दिनों में जागृति का श्रीगणेश हुआ। इस समय में यहां पर अफसरों की रिश्वत खोरी और अन्याय के विरुध आवाज उठायी गई। इसी समय में "सद् विद्याचारिणी" सभा की स्थापना हुई जिसके प्रधान श्री मुक्ता प्रसाद वकील और मंत्री श्री कालूराम बरड़िया बने।[4] इस सभा ने जन-जागृति के लिए "सत्य विजय" और "धर्म विजय" दो नाटक खेले। इन्हीं दिनों बीकानेर में विदेशी कपड़ों की होली जलाई गई। यह पहला सार्वजनिक राजनैतिक आयोजन था।

१— गौरीशंकर हीराचंद ओझा — बीकानेर राज्य का इतिहास (दूसरा भाग) पृष्ठ ४८९

२— ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ४९२

३— ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ५४०

४— सम्पादक श्री सत्यदेव विद्यालंकार — बीकानेर का राजनैतिक विकास और

बीकानेर राज्य और अंग्रेजों के आपसी सम्बन्ध मित्रता के रहे हैं अतः तत्कालीन महाराजा गंगासिंह इस प्रकार के आन्दोलनों को कैसे पनपने देते ? इसलिए उनसे जहां तक हुआ वे किसी बाहर के राष्ट्रीय नेता को राज्य में प्रवेश नहीं करने देते थे । यही कारण था कि जब सन् १९२७–२८ में स्वर्गीय देश भक्त सेठ जमनालाल बजाज रतनगढ़ में ब्रह्मचर्याश्रम के उद्घाटन पर आये तो उन्हें गाड़ी से उतरने का भी अवसर नहीं दिया ।[1]

जितनी तेजी से बीकानेर राज्य में जागृति प्रारम्भ हुई शासन की ओर से उतना ही दमन-चक्र तेज चला । सन् १९३२ में दमन-चक्र प्रारम्भ हुआ जिसके फलस्वरूप कुछ नेताओं पर मुकदमा चलाया गया । वास्तव में राष्ट्रीय आन्दोलन के लिए दमन, उत्पीड़न और निर्वासन उनकी (महाराजा) शासन नीति के मूलमन्त्र बन गये थे ।[2] सेवा समितियों, वाचनालयों, पुस्तकालयों और शिक्षा संस्थाओं के रूप में किंचित हलचल भी राज्य को उस समय सह्य न थी । यहां तक कि खादी भंडार को भी वे राष्ट्रीय आन्दोलन का एक अड्डा मानते थे । "प्रजामंडल" नाम की संस्था से तो महाराजा बहुत भय खाते थे । वे प्रजामंडल की हत्या तो गर्भकाल में करते रहे । निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि न तो प्रजामंडल जैसी किसी संस्था को और न ही इस प्रकार की प्रवृत्तियां रखने वाले किसी नेता को पनपने दिया ।[3]

परन्तु राष्ट्रीय भावना को दबाना बहुत कठिन होता है । जब प्रजा-मंडल की स्थापना करना बीकानेर में सम्भव न हुआ तो सन् १९३५ में स्वर्गीय श्रीमती लक्ष्मीदेवी आचार्या की अध्यक्षता में बीकानेर राज्य प्रजामंडल की स्थापना कलकत्ता में की गई । ४ अक्टूबर १९३६ को रात्रि के ८ बजे प्रजामंडल के सदस्यों की प्रथम बैठक रतन बाई ट्रस्ट के मकान (बीकानेर) में हुई, जिसमें श्री मघाराम इसके प्रधान चुने गये, परन्तु सन् १९३७ में इसके अध्यक्ष और मंत्री बन्दी बना लिया गया । इससे प्रजामंडल समाप्त प्रायः हो गया । अब जनता ने नई युक्ति खोज निकाली और प्रजामंडल के स्थान पर श्री रघुवरदयाल गोयल

१— स० श्री सत्यदेव विद्यालंकार — बीकानेर का राजनैतिक विकास और पंडित मघाराम वैद्य पृष्ठ १९

२— ,, ,, ,, ,, ,, ,, २५

३— ,, ,, ,, ,, ,, ,, २५

आदि ने २२ जुलाई १६४२ को 'प्रजा परिषद्' नामक राजनैतिक संस्था की स्थापना की इसका जीवन काल भी ५–७ दिनों से अधिक न रहा।

६ दिसम्बर, १६४२ को बीकानेर में झंडा सत्याग्रह प्रारम्भ हुआ और पहली बार उसी दिन दो बजे वैद्यों के चौक में श्री मघाराम वैद्य के पुत्र श्री नारायण ने तिरगा झंडा फहराया। २६ जनवरी १६४३ को स्वतन्त्रता दिवस भी मनाया गया।[1] श्री शार्दूलसिंह ने प्रारम्भ में तो गद्दी पर बैठते ही राजनैतिक बन्दियों को मुक्त कर दिया, परन्तु इन सत्याग्रहियों ने मुक्त होते ही अपना वही काम प्रारम्भ कर दिया। इसके कुछ दिन पश्चात तत्कालीन गृहमंत्री महाराज नारायणसिंह भाटी के विरुद्ध एक परचा छपा उसके लिए श्री मघाराम वैद्य को दोषी समझ कर बन्दी बना लिया गया।[2] सन् १६४५ को फिर २६ जनवरी गुप्त रूप से मनाई।

बीकानेर राज्य मे प्रथम राजनैतिक सम्मेलन का आयोजन ३० जून व १ जुलाई १६४६ को रायसिहनगर में करने का निश्चय हुआ। इस आयोजन के सभापति थे श्री सत्य नारायण वकील। राज्य की ओर से झंडा न फहराने का आदेश पहले से ही था। जनता झंडो सहित पंडाल मे पहुची।

इसमें श्री गगानगर के श्री बीरबलसिंह शहीद हुए। इस घटना को सुन कर जब बीकानेर के गृह मन्त्री २ जुलाई को हनुमानगढ पहुचे तो जनता ने उनके हाथ में ही झंडा दे दिया और उस गाडी पर भी झंडे लगा दिये।

स्वतन्त्रता प्राप्ति पर १५ अगस्त १६४७ को बीकानेर मे भी खुशियां मनाई गई। स्टेडियम में झंडारोहण स्वय महाराजा शार्दूलसिंह ने किया। रात्रि के प्रथम समारोह मनाने के लिए लालगढ पैलेस मे एक राजकीय भोज दिया गया।[3]

शार्दूलसिंह से लेकर भारत के पुनर्गठन तक बीकानेर की राजनैतिक स्थिति —

मार्च १६४३ को महाराजा गगासिंह का देहान्त बम्बई में हो गया और

१— सम्पादक श्री सत्यदेव विद्यालकार – बीकानेर का राजनैतिक विकास और पंडित मघाराम वैद्य पृष्ठ १३१

२— ,, ,, ,, ,, १४१-१४२

३— डॉ० करणी सिंह – बीकानेर के राजघराने का केन्द्रिय सत्ता से सम्बन्ध पृष्ठ ३६३

उनके उपरान्त राज्य का भार उनके पुत्र श्री शार्दूलसिंह ने सम्भाला । गद्दी पर बैठते ही श्री शार्दूलसिंह ने राजनैतिक बन्दियों को मुक्त कर दिया । इसी तरह श्री शार्दूलसिंह ने गांवों को दुर्दिनों का उपयोग लाभ उठाने के लिए छूट दे दिया । नौकरी के क्षेत्र में भी जनसाधारण को पहले से अधिक लिया जाने लगा। बीकानेर में जिस धारा सभा की स्थापना सन् १९१३ में हुई, उसके अधिकारों में सन् १९४४ में वृद्धि कर दी । इस सभा को व्यापक और जन-प्रतिनिधि बनाने का प्रयास किया गया जिसके लिए एक विधान समिति की भी नियुक्ति की गई । श्री शार्दूलसिंह की बहुत सी योजनाएं कार्यान्वित नहीं हो पायीं थीं । विनियोग (बजट) की कुछ मदों पर राय देने का अधिकार धारा सभा को दिया गया । पर चुनाव-प्रणाली इतनी सदोष थी कि उसके द्वारा जनता के किसी भी प्रतिनिधि का चुना जाना सम्भव नहीं था ।

बीकानेर राज्य में शरणार्थी और शार्दूलसिंह —

१५ अगस्त सन् १९४७ को भारत स्वतन्त्र अवश्य हुआ लेकिन साथ ही ये देश के दो टुकड़े हो गये । पाकिस्तान से हिन्दू भारतवर्ष में और भारतवर्ष से मुसलमान पाकिस्तान में जाने लगे । पाकिस्तान के साथ लगभग २०० मील तक बीकानेर राज्य की सीमा लगी हुई थी । इस समय के तत्कालीन महाराजा जाति-धर्म से ऊपर उठ कर मनुष्य मात्र की रक्षा में तत्परता दिखाई और उदारता की नीति का परिचय दिया । पाकिस्तान से आये हुए बहुत से शरणार्थियों के पास कुछ नहीं था, उनके भोजन और आवास की व्यवस्था भी महाराजा ने की यहां तक कि सुजानगढ़ में महाराजा शार्दूलसिंह ने निजी भवन को भी शरणार्थियों को सौंप दिया ।[1] इसी समय शरणार्थियों के लिए स्थान स्थान पर शिविर खोले गये । कोलायत में बहुत सी धर्मशालाएं होने के कारण यह शरणार्थियों का केन्द्र सा बन गया था ।

शार्दूलसिंह और एकीकरण —

१५ अगस्त सन् १९४७ को भारतवर्ष में स्वतन्त्रता का सूर्य उदय हुआ । इस समय भारत स्वतन्त्र अवश्य हो गया था परन्तु हमारे देश में इस समय भी बहुत सी समस्याएं थी, जैसे– बेकारी, भुखमरी और इससे भी बढ़ कर थी रियासतों के एकीकरण की । इस समस्या में राजाओं के सहयोग की बहुत

1 — डॉ॰ करणीसिंह — बीकानेर के राजघराने का केन्द्रीय सत्ता से सम्बन्ध पृष्ठ ३८८

परतन्त्रता थी। ब्रिटिश सरकार की ओर से इन्हें पूर्ण स्वतन्त्रता थी, पर रियासतों का इस प्रकार से अलग-अलग रहना देश की एकता के लिए हानिकारक था। राष्ट्रीय एकता के लिए इनका एकीकरण बहुत ही आवश्यक था। राजपूताने का एकीकरण चार सोपानों से पूरा हुआ। सर्व प्रथम संयुक्त राजस्थान राज्य में दक्षिण पूर्व की नौ[1] रियासतों का एकीकरण हुआ। थोड़े समय बाद मेवाड़ को भी इसमें मिला लिया गया। इसी काल में अलवर, भरतपुर, धौलपुर और करौली इन भागों को मिलाकर मत्स्य नाम का एक नया संघ बनाया गया। परन्तु थोड़े समय बाद इस मत्स्य संघ को भी वृहद् राजस्थान में मिला लिया गया। इतना कुछ होने पर भी अब तक एकीकरण अधूरा ही था। जैसलमेर, जयपुर, जोधपुर और बीकानेर की रियासतें इस संघ से अलग थीं। अथक परिश्रम के बाद ३० मार्च १९४९ को सरदार पटेल द्वारा वृहद् राजस्थान संघ का उद्घाटन किया गया और जयपुर इसकी राजधानी निश्चित हुई।[2] इस एकीकरण में बीकानेर के महाराजा शार्दूलसिंह का त्याग और देश-प्रेम प्रशंसनीय है। तत्कालीन भारत के राष्ट्रपति डॉ० राजेन्द्रप्रसाद द्वारा ५ सितम्बर, १९५४ को बीकानेर में दिये गये भाषण से उनके देश-प्रेम व त्याग की भावनाओं का पता चलता है। उन्होंने अपने भाषण में कहा है "जो लोग उस समय (विलीनीकरण से पहले) का इतिहास जानते हैं और जिन लोग, उस समय जो कुछ हो रहा था, जानकारी रखते हैं उनको यह बात अच्छी तरह मालूम है कि महाराजा शार्दूलसिंह जी ने भारत देश की कितनी बड़ी सेवा की — —उन्होंने समझौता करके दूसरे नरेशों को रास्ता दिखला कर केवल बीकानेर को ही नहीं बल्कि और राज्यों को भी भारत के साथ मिलाने का प्रोत्साहन दिया और मदद की। इसलिए भारतवर्ष उनका बड़ा ऋणी है और रहेगा।'[3]

१९४७ से लेकर आज तक की राजनैतिक स्थिति —

१५ अगस्त, सन् १९४७ को भारत वर्षों की परतन्त्रता के बाद स्वतन्त्र हुआ। इस स्वतन्त्रता का कारण जनता में राष्ट्रीय भाव की जागृति थी।

१—बांसवाड़ा, बूंदी, डूंगरपुर, झालावाड़, किशनगढ़, कोटा, प्रतापगढ़ शाहपुरा और टोंक।

२—डॉ० करणीसिंह — बीकानेर के राजघराने का केन्द्रीय सत्ता से सम्बन्ध पृष्ठ ४००

राष्ट्रीय आन्दोलन की जो लहर स्वतन्त्रता से पूर्व देश मे आरम्भ हुई वह स्वत-न्त्रता प्राप्ति तक देश के कोने कोने में फैल गई। बीकानेर में भी राष्ट्रीय भाव के कारण स्वतन्त्रता के लिए काफी आन्दोलन चले, जिसमे कांग्रेस का यहां प मुख्य हाथ रहा है।

स्वतन्त्रता से पूर्व का इतिहास राजाओ और उनके कार्यों का इतिहा है पर स्वतन्त्रता के पश्चात का इतिहास जनता की पार्टियो का इतिहास है। दे मे १९५२ में प्रथम आम चुनाव हुए जिसमें बीकानेर जिला भी अछूता नही रहा इस समय बीकानेर जिले में कांग्रेस, जन-संघ समाजवादी आदि पार्टियों ने चुना मे भाग लिया। इस समय प्रायः सभी पार्टियों की बुरी स्थिति रही और जी केवल स्वतन्त्र उम्मीदवारों की ही हुई। नोखा क्षेत्र से कांग्रेस की विजय हुई साम्यवादी (Communist) पार्टी का इस समय यहां कोई स्थान नहीं अतः उसने इस चुनाव में भाग भी नहीं लिया।

सन् १९५७ में बीकानेर में राजस्थान की विधान सभा के लिए एक प हरिजनों के लिए सुरक्षित कर दिया गया था। इस समय कांग्रेस ने अपनी स्थि पहले से सुदृढ़ बनाली थी। अतः बीकानेर को छोड़कर अन्य सभी तहसीलों कांग्रेस की ही विजय हुई और बीकानेर मे समाजवादी पार्टी की विजय हुई भारतीय लोक सभा के लिए इस समय भी फिर स्वतन्त्र उम्मीदवार की ही विज हुई। इस चुनाव में साम्यवादी पार्टी ने भी भाग लिया परन्तु विजय कहीं नहीं हुई। सन् १९६२ मे भी यहां पर समाजवादी और कांग्रेस ने ही सब स्था प्राप्त किये परन्तु भारतीय संसद के लिए स्वतन्त्र उम्मीदवार ही जीता। इ समय [illegible] कांग्रेस की विजय बीकानेर से बाहर ही हुई पर शहर मे उनके पैर इ समय से भी नहीं जमे। सन् १९६७ में कांग्रेस को अद्भुत विजय हुई और य यह कि इस समय उसने बीकानेर शहर से भी अपना स्थान बना लिया और अन्य क्षेत्रों में भी विजय प्राप्त की। सन् १९५२ से लेकर भारतीय लोकसभा के लि स्वतन्त्र उम्मीदवार की ही विजय होती रही है। इसका कारण बहुत कु महाराजा करणीसिंह का व्यक्तित्व ही है।

बीकानेर जिले की सामाजिक परिस्थिति —

आज बीकानेर जिले में प्रायः सभी जाति के लोग निवास करते हैं। हिन्दुओं में ब्राह्मण, राजपूत, महाजन, खत्री, कायस्थ, जाट, विश्नोई, चारण, सुनार, सुथार, दर्जी, कुम्हार, तेली, लुहार, माली, नाई, धोबी, गूजर, बैरागी, गोसाई, स्वामी, छीपा, भड़भूंजा, रैगर, मोची, चमार आदि कई जातियां है। इन जातियों में आज कई ऐसी उप जातियां बन गई जिनमें आपस में विवाह भी नहीं होता। जंगमी जातियों में भोपे, बावरी और थोरी आदि हैं। मुसलमानों में सैयद, शेख, मुगल और पठान आदि कई जातियां है।[1] यहां के लोगों में अधिकांश खेती करते हैं। राजपूत लोग प्रमुख रूप से सैनिक सेवामें नियुक्त हैं। वैश्य वर्ग का प्रमुख धंधा व्यापार करना है। यहां के मोहता, डागा, मूंधड़ा, रामपुरिया, सेठिया आदि वैश्य लोग भारत के प्रमुख व्यापारियों में गिने जाते हैं। अन्य जातियों के लोग प्रधान रूप से नौकरी, दस्तकारी और अन्य प्रकार की मजदूरी का कार्य करते है।

गावों के लोगों का मुख्य खाद्यान्न बाजरा व मोठ है। आजकल गेहूं और चावल का भी बहुत प्रचलन हो गया है। चावल किसी विशेष त्यौहार पर ही प्रयोग में लिये जाते हैं। गांवो में प्रायः दूध, दही व सूखी सब्जियां काम में ली जाती है, जिनमें सांगरी, फली, काचर, सेलरी, केर आदि प्रमुख है। शहर में लोग गेहूं और हरी सब्जी का प्रयोग करते हैं। मूंग और मोठ को विभिन्न प्रकार से प्रयोग में लाते हैं। भुजिया और रसगुल्ला तो बीकानेर के भारत प्रसिद्ध है।

आज शिक्षा के प्रसार से स्त्रियों की दशा में काफी सुधार हो गया है और इनका अपने समाज में पुरुष के समान ही स्थान है। गावों में पढ़ी-लिखी स्त्रियों की संख्या अवश्य ही कम है। शिक्षा के कारण बाल-विवाह भी कम हो

१-गौरीशंकर हीराचन्द ओझा-बीकानेर राज्य का इतिहास (प्रथम भाग) पृष्ठ २१

गये हैं, परन्तु कुछ जातियों में अब भी यह प्रथा प्रचलित है, पर है बहुत कम। शिक्षा से आज समाज में छूआछूत भी बहुत कम हो गई है। इससे समाज में पहले की तरह किसी प्रकार की ऊंच-नीच की भावना नहीं है। यहाँ की शिक्षण संस्थाओं में गरीब छात्रों को निशुल्क शिक्षा दी जाती है। बीकानेर जिले के प्रत्येक गांव में आज स्कूल अवश्य है तथा सभी गांव सड़कों द्वारा शहर से जुड़े हुए हैं। यातायात में सब प्रकार की सुविधाएं उपलब्ध हैं। पहले-जैसा यात्रा में किसी भी प्रकार का भय नहीं है। इस जिले में धोती और कुर्ता पुरुषों की तथा लहंगा और चोली स्त्रियों की मुख्य पोशाक है। नगर में पुरुष व स्त्रियां अधिकतर आधुनिक ढंग से वस्त्रों का प्रयोग करते हैं। पर्दा-प्रथा प्रायः समाप्त सी हो गई है। यहां तक कि मुसलमानों में भी बुर्के की प्रथा कम हो रही है परन्तु पूर्णतया समाप्त नहीं हुई है। विवाह में दहेज आदि की प्रथा भी प्रचलित है, पर इसकी अधिकता नहीं है। मुर्दों को यहां पर जलाया एवं जमीन में गाड़ा जाता है। मुसलमान मुर्दों को जमीन में ही गाड़ते हैं।

बीकानेर जिले की धार्मिक परिस्थिति:—

बीकानेर जिले में मुख्यतः वैदिक (ब्राह्मण), जैन, सिक्ख और इस्लाम धर्म के मानने वालों की संख्या अधिक है। ईसाई आर्य समाजी और पारसी धर्म के अनुयायी भी यहां थोड़े बहुत हैं। वैदिक धर्म मानने वालों में शैव, वैष्णव, शाक्त आदि अनेक भेद हैं, जिनमें यहां वैष्णवों की संख्या अधिक है। इस्लाम धर्म के अनुयायियों के दो भेद-शिया और सुन्नी हैं। इनमें से इस जिले में सुन्नियों की संख्या अधिक है। इनके अतिरिक्त यहां अलखगिरि नाम का नवीन मत भी प्रचलित है तथा बिश्नोई नाम का दूसरा मत भी हिन्दुओं में विद्यमान है।[1]

बीकानेर जिले में त्योहारों का बहुत महत्व है त्योहारों में शील सप्तमी, अक्षय तृतीया, रक्षा बन्धन, दशहरा, दिवाली, होली आदि मुख्य त्योहार है। तीज और गनगोर स्त्रियों के मुख्य त्योहार हैं। इन त्योहारों के दिन शहर में बहुत ही चहल-पहल रहती है। इस दिन स्त्रियां लोक गीत गाया करती हैं। त्योहारों के अतिरिक्त यहां मेले भी बहुत लगते हैं। प्रतिवर्ष कार्तिक पूर्णिमा को कोलायत में बड़ा मेला लगता है, जिसमें ऊंट बैल आदि का व्यापार भी होता है। बीकानेर से ३० मील दक्षिण पश्चिम में यह स्थित है। यहां पर

१-गौरीशंकर हीराचन्द ओझा-बीकानेर राज्य का इतिहास (पहला भाग) पृ० १८

विशाल तालाब है जिसके किनारे कपिलमुनि का मंदिर है। ऐसा कहा जाता है कि यहां कपिलमुनि का आश्रम था जहां उन्होंने अपनी माता को सांख्य और योग का उपदेश दिया।[1] मुख्य मन्दिर के अतिरिक्त अन्य भी छोटे-छोटे मन्दिर हैं। गजनेर बीकानेर से २० मील दक्षिण-पश्चिम में बसा हुआ है। यहां पर मकरसक्रान्ति का मेला लगता है जिसे 'कुत्तों का मेला' कहते हैं। श्रावण के महीने में शिवबाड़ी और भाद्र पद देवीकुंड सागर में भी मेले लगते हैं, जिनमें बहुत से लोग इकट्ठे होते हैं।[2] देशनोक में, जो कि शहर से २० मील दक्षिण में है, करणी जी का विशाल मन्दिर है। इस मन्दिर की विशेषता यह है कि यहां चूहे बहुत संख्या में हैं। वर्ष में दो बार चैत्र और आसोज के शुक्ल पक्ष में प्रतिपदा से नवमी तक भारी मेले लगते हैं। मुकाम जो बीकानेर से लगभग ५० मील है, वहां प्रतिवर्ष आसोज और फाल्गुन में मेले लगते हैं। यहां पर भारतवर्ष के प्रत्येक कोने-कोने से विश्नोई लोग आते हैं और हवन आदि करते हैं। यहां पर एक रेत के धोरे का बहुत अधिक महत्व है।[3] इन मन्दिरों के अतिरिक्त बीकानेर में मन्दिरों की संख्या इतनी अधिक है कि नगर का कोई भी भाग ऐसा नहीं है, जहां मन्दिर न हो। चिन्तामणि का मन्दिर, भांडासरजी का मन्दिर, धूनीनाथजी का मन्दिर, रतन बिहारी जी का मन्दिर, श्री लक्ष्मीनाथजी का मन्दिर, नागणेची जी का मन्दिर आदि शहर के मुख्य मंदिर हैं।[4] चाहे कितने भी मंदिर आज हैं पर यह बात स्पष्ट है कि धर्म पर लोगों का पहले जैसा विश्वास नहीं रहा है, पर फिर भी मंदिरों पर भीड़ बहुत रहती है। यहां पर बहुत से देवी देवताओं की पूजा की जाती है। मूर्तिपूजा की प्रधानता है। इसके अतिरिक्त स्त्रियां यहां पर पीपल और खेजड़ी की भी पूजा करती हैं।

१-(क) गौरीशंकर आचार्य — बीकानेर परिचय पृष्ठ ८५

(ख) 'स करुणाकर कृपालु भगवान्कपिल स्वकीये
मातरं बर्थाम स्वमार्गे देव हृदय आग दुद्धरकारक सांख्य योग च
सविस्तर प्रोवाच उपदिष्टवान्'

पण्डित विष्णुदत्त शर्मा— श्री कपिलायतन तीर्थ माहात्म्यम् पृष्ठ ३५

२-गौरीशंकर हीराचंद ओझा-बीकानेर राज्य का इतिहास (पहला भाग) पृष्ठ २६

३— ऐसा माना जाता है कि विश्नोई सम्प्रदाय के प्रवर्तक श्री जम्भेश्वर इसी धोरे पर रहा करते थे। इसी धोरे पर उनकी मृत्यु हुई थी परन्तु उनके शव को मुकाम में दफनाया गया था जहां पर आज भी मन्दिर बना हुआ है।

४-गौरीशंकर हीराचन्द ओझा-बीकानेर राज्य का इतिहास (पहला भाग) पृष्ठ २६

बीकानेर की साहित्यिक परिस्थिति (स्वतन्त्रता से पूर्व) :-

'बीकानेर क्षेत्र का साहित्यिक और सांस्कृतिक विकास बहुत प्राची नहीं है। राव बीका द्वारा बीकानेर राज्य की स्थापना के बाद ही यह विका प्रारम्भ हुआ है।[1] बीकानेर की स्थापना से पूर्व यहां पर पूजा पाठ से सम्बन्धि साधारण पुस्तकों के अतिरिक्त अन्य प्रकार की पुस्तकें प्राप्त नहीं हुई है बीकानेर की स्थापना के पश्चात यहां के प्रायः सभी नरेश साहित्यिक प्रेमी हैं। बहुत से राजाओं ने तो स्वयं भी बहुत-कुछ लिखा है। इसके विपरीत कु ऐसे हुए हैं जिन्होंने स्वयं तो कुछ नहीं लिखा, पर अनेक विद्वानों को काव्य-रच करने की ओर प्रेरित किया है, जिससे बहुत से विद्वानों ने यहां रह कर काव ग्रन्थों की सर्जना की है। राव कल्याणमल के पुत्र पृथ्वीराज कृत "वेली क्रि रुकमणी री" का राजस्थानी काव्य मे बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। इसके अतिरि भी उन्होंने राम और कृष्ण तथा अन्य विषयों पर फुटकर छन्दों की रचना की पृथ्वीराज अकबर के नौ रत्नों में से थे। रायसिंह (सन् १५७४—१६१२) भा और संस्कृत दोनों मे अच्छी कविता कर लेता था। उसने "रायसिंह महोत्स और 'ज्योतिष रत्नाकर" नाम के दो अमूल्य ग्रंथ लिखे।[3] इस समय अं विद्वानों ने अनेक ग्रन्थों की रचना की। जैन साधु ज्ञान विमल ने इन्हीं के आश मे रह कर 'शब्द भेद' की टीका समाप्त की।[4] कर्णसिंह के समय (सन् १६३ १६६९) में अनेक ग्रंथों की रचना हुई। अब तक उस समय के प्राप्त ग्रंथ प्रकार हैं।[5] :—

१. साहित्य कल्पद्रुम – यह ग्रंथ विद्वानों की सहायता से महाराजा ने लिखा है
२. कर्ण भूषण (पं० गंगादास मैथिल रचित)
३. काव्य डाकिनी (पं० „ „)
४. कर्णावितस (भट्ट होसिहक कृत)

१— दिवाकर शर्मा – संस्कृत साहित्य के विकास मे बीकानेर क्षेत्र का योगदान (अप्रकाशित) पृष्ठ ५४२
२— „ „ „ „ „ २१
३— गौरीशंकर हीराचन्द ओझा – बीकानेर राज्य का इतिहास (पहला भाग) पृष्ठ २०१, २०२
४— „ „ „ „ „
५— „ „ „ „ „

४ कर्णपोष (कवि गुमान कृत)
६. हंस मालावली ।

इस से स्पष्ट है कि अनूपसिंह से पहले बहुत से ग्रंथ बीकानेर में लिखे गये थे, परन्तु साहित्य का विकास अनूपसिंह के समय में सबसे अधिक हुआ । वह स्वयं भी विद्वान था और उसने बहुत से विद्वानों को आश्रय भी दे रखा था । अनूपसिंह के समय में सबसे अधिक ग्रंथों की रचना हुई । उसने स्वयं ने "अनूप विवेक" (तंत्र शास्त्र) "काम प्रबोध (काम शास्त्र)" श्राद्ध प्रयोग चिन्तामणि और गीत गोविन्द की अनूपोदय नाम की टीका आदि ग्रंथ लिखे ।[1] अनूपसिंह के दरबार में संस्कृत के अनेक विद्वान रहते थे जिन्होंने बहुत से ग्रंथ लिखे । इन विद्वानों द्वारा लिखे ग्रंथ निम्नलिखित हैं ।[2]

१— ज्योतिपतिसार (वैद्यनाथ कृत)
२— अनूप व्यवहार सागर (मणिराम दीक्षित)
३— अनूप विलास (मणिराम दीक्षित)
४— अनूपरत्न होम कोटि प्रयोग (भट्ट राम)
५— शौर्य रत्नाकर (अनन्त भट्ट)
६— पाण्डित्य दर्पण (श्वेताम्बर उदयचन्द्र कृत)

संस्कृत के अतिरिक्त अनूपसिंह को राजस्थानी से भी बहुत प्रेम था । उसने कुछ साहित्य की कथाओं का अनुवाद भी कराया तथा कुछ और भी राजस्थानी ग्रंथ लिखे गये । अनूपसिंह को संगीत से भी बहुत प्रेम था । अतः इसके समय में भाव भट्ट ने "संगीत अनूपांकुश" अनूप संगीत विलास, अनूप संगीत रत्नाकर, नष्टोद्दिष्ट प्रबोधक, ध्रुपद टीका आदि ग्रंथों की रचना की ।[3]

महाराजा जोरावरसिंह संस्कृत और भाषा का अच्छा विद्वान था । उसके बनाये हुए दो ग्रंथ "वैद्यसागर और पूजा पद्धति" बीकानेर के पुस्तकालय में है । भाषा में उसने रसिक-प्रिया और कवि प्रिया की टीकायें बनायी थी ।[4]

१-गौरीशंकर हीराचन्द ओझा-बीकानेर राज्य का इतिहास (प्रथम भाग) पृष्ठ २८०
२ „ „ „ „ २८१, २८२
३— „ „ „ „ २८७
४— „ „ „ „ ३२२

महाराजा गजसिंह के समय में (सन् १७४६–१७८७) गोपीनाथ और सिढ़ायच फतेराय ने क्रमशः 'ग्रन्थराज' अथवा महाराजा गजसिंह जी रो रूपक तथा महाराजा गजसिंघ जी रा गीत कवित्त दूहा नामक ग्रंथ लिखे।[1] इसी प्रकार महाराजा रत्नसिंह के समय में रत्न विलास, रतन रूपक और जस रत्नाकर आदि काव्य ग्रन्थ मिलते हैं।[2] इन सभी ग्रंथों से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि बीकानेर में जितने राजा हुए वे सभी साहित्यिक प्रेमी अवश्य रहे हैं। उनमें से बहुतों ने तो स्वयं ही बहुत कुछ लिखा है। साहित्यिक दृष्टि से अनूपसिंह के शासन काल को 'स्वर्णयुग' कहा जा सकता है। आज भी पृथ्वीराज कृत 'वेलि क्रिसन रुकमणी री' का महत्व बना हुआ है। डूंगरसिंह ने शिक्षा के लिए बहुत सी पाठशालाएं खुलवायी। सन् १९१२ में अपनी रजत जयन्तीके अवसर पर महाराजा गंगासिंह ने डूंगर मेमोरियल कॉलेज का उद्घाटन किया और इसी समय कचहरियों की भाषा हिन्दी घोषित की।[3]

बीकानेर में साहित्य की उन्नति में चारणों, जैनों एवं भाटों का भी विशेष योगदान रहा है, जिसके परिणाम स्वरूप आज भी बीकानेर के विविध जैन संग्रहालयों में लगभग पचास हजार हस्तलिखित प्रतियां विद्यमान हैं।[4]

१— गौरीशंकर हीराचन्द ओझा — बीकानेर राज्य का इतिहास (दूसरा भाग) पृष्ठ ३५८
,, ,, ,, ,, ५२५
,, ,, ,, ,, ५२६
[illegible] आचार्य — बीकानेर परिचय पृष्ठ [illegible]

बीकानेर में हिंदी काव्य सर्जना

स्वातन्त्र्यपूर्व काव्य —

यों तो डिंगल, ब्रज भाषा एवं उर्दू के माध्यम मे बीकानेर का कवि-समाज अपनी अभिव्यक्ति पहले से करता आया है, किन्तु इस काव्य-चेतना का प्रकटीकरण हिन्दी के माध्यम से सर्व प्रथम ई० सन् १९१९ मे माना जा सकता है। इस समय के प्रारम्भिक कवियों मे श्री नरोत्तम दास स्वामी का नाम सर्व प्रमुख माना है। स्वामी जी ने भक्ति सम्बन्धी कुछ पदावलियां लिखी। छायावादी काव्य प्रवृतियो मे इतर बीकानेर काव्याकाश के अन्य सितारे रामनिवास हरित, रावतमल सारस्वत, सूर्यकरण पारीक, रामसिंह, वासुदेव गोस्वामी, रतनलाल गोस्वामी, मास्टर कालाप्रसाद और नरपतसिंह आदि थे। इसी समय शम्भुदयाल सक्सेना ने बीकानेर के काव्य क्षेत्र मे अपने प्रथम काव्य संग्रह "मन्वन्तर" द्वारा पदार्पण किया। इस संग्रह मे कवि ने प्राचीन आर्य संस्कृति के उत्कर्ष और आदर्शों को बहुत ही सुन्दर ढंग से व्यक्त किया है। कवि अपने देश वासियों को प्राचीनता का आदर्श बताना चाहता है। इसलिए कविता के लिए प्राचीन विषय चुने हैं। कवि ने फिर से प्राचीन गौरव को जगाने की चेष्टा की है। इसमें 'सती', 'नवयुग के मानव से', 'विश्व भारती' आदि कविताएं विशेषत पठनीय हैं। 'मन्वन्तर' में भाषा और भाव दोनों का सुन्दर समन्वय है। सारांश रूप में यही कहा जा सकता है कि 'मन्वन्तर' मे भारतीय संस्कृति की आत्मा का अनूठा चित्र है।

इसके अतिरिक्त सन् १९३७ मे सक्सेना ने 'उत्सर्ग' और सन् १९३३ में 'अमरलता' दो खण्ड काव्य लिखे। 'उत्सर्ग' मे चूंडावत और हाडा रानी की कथा के साथ-साथ मेवाड़ के राणा और रूपनगर की राजकुमारी चारुमती की कथा को भी प्रस्तुत किया है। ऐसा करने से इस खण्ड काव्य में किसी घटना और पात्र का पूर्ण विकास नहीं हो पाया है। यद्यपि शास्त्रीय लक्षणों के अनुसार खण्ड काव्य में कोई उपकथा नहीं होनी चाहिये और यदि हो तो वह प्रधान कथा के

सहायक रूप में होनी चाहिये, पर 'उत्सर्ग' में ऐसा नहीं हो पाया है। दोनों कथाएं एक दूसरे से दबी हुई हैं।

सक्सेना का 'अमरलता' वास्तव में एक सफल खंड काव्य है, जिसमें राजस्थान के मोहिल पति माणिकराज की कन्या कोड़मदे की कथा है। कोड़मदे मंडोरपति अड़कमल से विवाह न कर, सादूल के साथ विवाह करती है। उस समय माणिकराज सादूल को अड़कमल से सावधान, रहने की बात कहता है पर सादूल कोई परवाह नहीं करता। रास्ते में युद्ध होता है और सादूल मारा जाता है। कोड़मदे अपना एक हाथ ससुराल और दूसरा हाथ अपने नैहर भेज कर सती हो जाती है।

इस खण्ड काव्य का कथा प्रवाह स्वाभाविक गति से हुआ है। कोड़मदे और सादूल के चरित्र का विकास भी पूर्ण हुआ है। कोड़मदे का चरित्र शौर्य एवं करुणा का संगम है। कवि ने मध्ययुगीन राजपूती शौर्य और वीरता की एक सुन्दर झलक प्रस्तुत की है। परन्तु उसमें करुणा और अवसाद की भी छाया पड़ी हुई है। '... और तब तक हम पतन के गर्त से कदापि नहीं निकल सकेंगे जब तक अपने पूर्व कृत्यों का अच्छी तरह प्रायश्चित नहीं करते।' [1] भाषा शैली की दृष्टि से इसमें सहजता देखी जा सकती है।

स्वतन्त्रता से पूर्व बीकानेर में राजस्थानी और हिन्दी कविता के क्षेत्र में भरत व्यास का योगदान रहा है। कवि ने अपनी कविताओं के विषय अपने अंचल से चुने हैं। इनकी प्रत्येक कविता में मरुदेश प्रेम झलकता है। स्वतन्त्रता से पूर्व इनकी अधिकतर कविताएं वर्णनात्मक हैं। कवि कभी तो इस मरुधरा की महिमा बताता है :—

'मरुधरा सरस, मनहर, मधुरा
माँ का आँचल है प्यार भरा' [2]

\+ \+ \+

बाजरा बबूली और कीकर बेर
धोरे-धोरे के मधा मरा' [3]

१—शम्भूदयाल सक्सेना —'अमरलता' पृष्ठ
२—भरत व्यास —मरुधरा
३—भरत व्यास —मरुधरा

मरुधरा इसकी उर्वरता के लिए प्रख्यात है। जब देश के अन्य कवि वहाँ की शस्य भूमि की उर्वरता पर मुग्ध होकर गीतों में बरस पड़ते हैं उस समय यह कवि भी इसकी उर्वरता के गीत गाने लगता है, पर इसकी उर्वरता भिन्न प्रकार की है— इसमें वीर उपजते हैं।

'वीरों की फसल यहाँ होती
रहता नित यौवन हरा भरा
इसने उपजाया सुकवि यह'[1]

6258-
5/10/60

+ + +

कवियों की फसल यहाँ होती
है काव्यमयी यह वसुधरा।'[2]

स्वतन्त्रता से पूर्व की कविताओं में कवि की 'केसरिया पगड़ी' बहुत ही प्रसिद्ध कविता है। इस कविता में कवि ने केसरिया पगड़ी का महत्व बताया है और अपने प्रदेश के वीरों को ललकारा है कि इस केसरिया पगड़ी को धारण करके वीरों ने सदैव अपनी मातृभूमि की आन को रखा है। अतः इस समय में इसको बाँधने वालों को भी पीछे नहीं हटना चाहिये —

"कितनों के सर कुर्बान हुए
कितनों के महल मसान हुए
इस पगड़ी की लौ में कितने
परवाने थे बलिदान हुए।"[3]

अन्त में कवि यही आशा रखता है कि यह केसरिया पगड़ी बनी रहे :—

'इससे भी अभिमानी मुख की
भौंहें धराल हो तनी रहें
यह गगन-ग्रहों में सगा सी
मरु के कण कण में सनी रहे

---

1. तथ्यास — मरुधरा पृष्ठ ६-७
2. — " " ७
3. — " " १८

मेगरिया पगरी बनी रहे ।' [1]

स्वतन्त्रता से पूर्व की सभी कविताओं में कवि ने कहीं 'चितौड़' क महत्व बताया है तो कहीं मरुधरा के 'चौमासे' (वर्षाकाल) का वर्णन कि है, तो कहीं इस प्रदेश की हरियाली का वर्णन किया है। निष्कर्ष रूप में यही कहा जा सकता है कि स्वतन्त्रता के पूर्व कवि मरुधरा से यहीं बाहर निकला है जहां उसने वीरता की ज्योति जलती देखी है, अन्यथा उसने विषय चयन में अपने आसपास को ही देखा है। इसलिए इनकी कविताओं में स्थानीय रंग (Local Colour) अधिक है। इसके अतिरिक्त भी कवि ने देश प्रेम की भावना को फूकने का प्रयास भी किया है और सोई हुई जनता को जगाने का प्रय भी किया है :—

"उठो राष्ट्र के सजग सिपाही
मां के धन, गोदी के लाल
विजय बुलाती तुम्हें खड़ी
उस पार लिये पूजा का थाल।[2]

स्वतन्त्रता से पूर्व कवि की कविताओं की भाषा बहुत ही सरल है, प उस पर राजस्थानी का प्रभाव भी कम नहीं है। पर इससे कविता में प्रभावोत् दकता ही आयी है।

आचार्य चन्द्रदेव शर्मा ने अपनी कविता का प्रारम्भ हास्य और व्य की कविताओं से किया। परन्तु हास्य की अपेक्षा व्यंग्य का पुट अधिक है। क अपने समाज से अवश्य ही प्रभावित होता है। स्वतन्त्रता से पूर्व हिन्दू मुसलमानों में वैमनस्य की भावना व्याप्त थी, उसका वर्णन भी इन्होंने अप एक कविता में किया है। इनकी ऐसी कविता में उनका मानवतावादी स्वर मु है, जो जाति व वर्ग-भेद से ऊपर उठकर, इन्सानियत की प्रतिष्ठा करना चाह है। प्रत्येक मनुष्य हिन्दू और मुसलमान आदि होने [illegible] पहले मानव होता है फि कुछ और जैसे :—

१—भरतव्यास —मरुधरा पृष्ठ
२— " — " "

"हम मुसलमान या हिन्दू होने से पहले मजदूर यहा
हम मुसलमान या हिन्दू होने से पहले इन्सान यहा।
फिर कैसा यह दगा फिसाद है झगड़ा हम मे कौन यहाँ।"[1]

इस स्वर के साथ-साथ इनकी प्रारम्भिक कविताओ मे आशावादी स्वर भी स्पष्ट रूप से झलकता है जैसे :—

"हम नवयुग की भावी आशा हम सोते भाग्य जगा देंगे
काटों को फूल बना देंगे, रोडो को धूल बना देंगे।" [2]

इस प्रकार चन्द्रदेव शर्मा की कविता मे व्यग्य के साथ-साथ मानवतावादी दृष्टिकोण भी मिलता है। कवि समाज की विद्रूपता से क्षुब्ध है और इसी ने उन्हें व्यग्य का आश्रय लेने के लिए प्रारम्भ मे ही विवश किया है। ज्यों-ज्यो ये विद्रूपताए' बढ़ती गई कवि का व्यग्य भी तीव्र होता गया। इसको हम उनकी स्वातन्त्र्योत्तर रचनाओ में देख सकते हैं। पर आशावादी स्वर जो इस समय की कविताओ मे मिलता, वह स्वातन्त्र्योत्तर कविताओं मे नहीं दिखाई देता है।

मेघराज मुकुल ने स्वतन्त्रता से पूर्व अधिकतर राजस्थानी मे ही कविताए लिखी है, जो किसी न किसी ऐतिहासिक कथा पर आधारित है। 'मुकुल' की 'सेनाणी' कविता उस समय मे बहुत ही प्रसिद्ध हो गई थी, पर राजस्थानी के अतिरिक्त कवि ने हिन्दी कविता की ओर भी अपना ध्यान लगाया और स्वतन्त्रता से पूर्व कुछ छुट-पुट कविताए लिखी थी।

मेघराज मुकुल की राजस्थानी कविता और हिन्दी कविता के विषयो मे अत्यधिक अन्तर है। राजस्थानी कविता मे जहां एक ओर भारतीय गौरव गाथा सुनाई पड़ती है, वहा हिन्दी कविता मे इनका स्वर प्रगतिवादी बन गया है। भारतीय गरीबो और इस गरीबों पर होने वाले अत्याचार के चित्रण में कवि पूर्ण सफल हुआ है :—

१—आचार्य चन्द्रदेव शर्मा —'सुहागन' कविता से
२—" " " —'भावी आशा' कविता से

गया हुआ कुहराम देश में,
आज कमेरी जान न बोरे।
भूखों की आंखों के सम्मुख
ज्योति बिना दिखते हैं रोरे।"[1]

शोषकों का भयावह और स्वार्थी जीवन का यह चित्रण भी कितना सुन्दर ब
पड़ा है :—

"चोर और चोर के शोषक,
भूखों का ले मांस उड़ रहे।
+ + +
मुर्दों की दावत में देखो,
पापी साहूकार मिले हैं।
हँसा-हुआ करते नगे
भूखों पर इनके दांव चले हैं।"[2]

गरीबी और अत्याचार के आगे जनता विवश हो जाती है। ऐसे समय में कि
पर भी किसी का विश्वास नहीं रहता :—

"चित्र लिखी सी खड़ी आज,
जनता अपना परिहास देखती।
अपनों पर से अपना ही वह,
उठा हुआ विश्वास देखती।"[3]

एक बात जो मुकुल की कविता में विशेष रूप से देखी जा सकती है वह यह है कि
इस प्रकार की गरीबी और अत्याचारों से पीड़ित मानव को जैसी दशा में है वैस
दशा में नहीं छोड़ा है, अपितु उन्हें एक मार्ग दिखाया है जैसे :—

नए दौर की नई जिन्दगी
को बुलन्द करने अब आओ।
गड़ हुए मुर्दों को थोड़ा,
और अधिक गहरा दफनाओ।

१—मेघराज मुकुल —उमंग पृष्ठ २७
२— " " —" " २८
३— " " —" " ३१

खेत-खेत को बांटो देकर
भाव नया स्वर पुन उठाओ।
कांधे और कर्मठ जीवन को
हाथों पर बस दिखाओ।"[1]

इस प्रकार से मुकुल की प्रारम्भिक हिन्दी कविता का स्वर प्रगतिवादी था और बाद में चल कर परिपक्वता को प्राप्त हुआ है ।

इसके अतिरिक्त आशाएं चन्द्रमौलि और मानदान मनुज का स्वतन्त्रता से पूर्व की काव्य सर्जना में योगदान रहा है । यह काल बीकानेर जिले की हिन्दी कविता का प्रारम्भ काल कहा जा सकता है । इस काल की कविता में अपरिपक्व कल्पना, अस्फुट अभिव्यक्ति और असाधारण भाषा उस गड़बड़ाहट की द्योतक है जो प्रत्येक प्रारम्भ काल के कवियों में देखी जा सकती है । स्वतन्त्रता से पूर्व इन कवियों ने जो कुछ कहा वह सब दबी जबान से कहा । इसी कारण इस समय के काव्य में गाम्भीर्य नहीं आ पाया था जो स्वातन्त्र्योत्तर काव्य में बन पड़ा है ।

स्वातन्त्र्योत्तर काव्य —

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि बीकानेर में काव्य के क्षेत्र में छुट-पुट प्रयास तो हो रहे थे पर काव्य की धीर गम्भीर धारा उसमें नहीं प्रवाहित हो पायी थी । कवियों की संख्या भी स्वल्प थी और उनके द्वारा लिखा गया काव्य आकार और गुण दोनों दृष्टियों से महत्त्वपूर्ण नहीं था । जब शेष हिन्दी काव्य जगत में काव्य के विविध प्रयोग स्वतन्त्र और पाश्चात्य अनुकरण पर कर चुका था तब तक यहां का कवि देश से कटा हुआ अपनी प्राचीन डिंगल परम्परा या ब्रज काव्य की विषय वस्तु को लेकर हिन्दी में उन्हें व्यक्त कर रहा था । न उसके पास विषय की विविधता थी और न नवीनता । भाषा शैली में अभिव्यक्ति का वह सामर्थ्य नहीं दिखाई देता है जो १९४७ तक हिन्दी के काव्य में अर्जन कर लिया था । इस प्रकार उसमें प्राचीनता थी और मौलिक उद्भावनाओं का अभाव था । शिल्प की दृष्टि से उसका स्वरूप अविकसित और पिछड़ा हुआ था ।

ऐसे काव्य के ही पश्चात् आलोच्यकाल में काव्य-सर्जना को अनेक दिशाएं मिली । यहां का कवि कवि-सम्मेलनों और कवि गोष्ठियों, साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओं, साहित्यिक संस्थाओं से प्रेरणा प्राप्त कर सहसा उठ खड़ा हुआ और

१—मेघराज मुकुल —उमंग पृष्ठ ३२

एक के बाद अनेक कवियों का उदय हुआ और उन्होंने काव्य लिखना प्रारम्भ कर दिया. यह भिन्न बात है कि इस आलोच्यकाल में भी किसी महाकाव्य या प्रबन्ध काव्य की सृष्टि बीकानेर जिले में नहीं हुई क्योंकि शेष हिन्दी जगत से विच्छिन्न इस क्षेत्र में जब प्रथम बार स्वस्थ काव्य चेतना का उदय हुआ तब उसने अस्तित्व और जीवन को सार्थक करने के लिए अनेक रूपता के स्थान पर मुक्त रूपों में स्वयं की अनुभूतियों को व्यक्त करने के लिए चुना गया । इसके पूर्व गीतों और मुक्तकों में ही प्राय: अनुभूतियां व्यक्त हुई और शिल्प की अनेक रूपता हिंदी में विकसित हो गई थी उसे यहां के कवियों ने सहज ही में अपना लिया । इस प्रकार ये देश के काव्य के साथ जुड़ गये ।

फिर भी बीकानेर में आलोच्यकाल में काव्य की चेतना जो प्रस्फुटित हुई उसमें हिन्दी के सभी वादों और प्रवृत्तियों का स्वरूप देखा जा सकता है । इस प्रकार यहां के कवियों ने हिन्दी के काव्य की थोड़े समय तक नकल की जो अधिक वर्षों तक नहीं चली ।

एक के बाद अनेक कवियों का उदय हुआ और उन्होंने काव्य लिखना प्रारम्भ कर दिया, यह भिन्न बात है कि इस आलोच्यकाल में भी किसी महाकाव्य या प्रबंध काव्य की सृष्टि बीकानेर जिले में नहीं हुई क्योंकि शेष हिन्दी जगत से विछिन्न इस क्षेत्र में जब प्रथम बार स्वस्थ काव्य चेतना का उदय हुआ तब उसमें अपने परिवेश और जीवन को सार्थक करने के लिए अनेक रूपता के स्थान पर मुक्त रूपों में स्वयं की अनुभूतियों को व्यक्त करने के लिए चुना गया । इससे गीतों और मुक्तकों में ही प्रायः अनुभूतियां व्यक्त हुई और शिल्प की अनेक रूपता हिंदी में विकसित हो गई थी उसे यहां के कवियों ने सहज ही में अपना लिया । इस प्रकार ये देश के काव्य के साथ जुड़ गये ।

फिर भी बीकानेर में आलोच्यकाल में काव्य की चेतना जो प्रस्फुटित हुई उसमें हिन्दी के सभी वादों और प्रवृत्तियों का स्वरूप देखा जा सकता है । इस प्रकार यहां के कवियों ने हिन्दी के काव्य की थोड़े समय तक नकल की जो अधिक वर्षों तक नहीं चली ।

सन् १९४७ से पूर्व जो कवि काव्य सर्जना में तत्पर थे उन्होंने तो अपनी सर्जनशीलता को बनाये रखा । अनेक और नये कवि जो इस काल के काव्य क्षेत्र में आये उनका भी आगे के पृष्ठों में कालक्रम की दृष्टि से परिचय दिया जा रहा है इस परिचय में उनकी रचना और प्रवृत्तियों पर मूल रूप से विचार किया गया है । उनके जन्म और शिक्षा-दिक्षा आदि के सम्बन्ध में परिशिष्ट में उल्लेख किया गया है ।

लाए प्रकृति चित्रण की है। कुछ स्वच्छ प्रेम की है। इस संग्रह को पढ़ने से ऐ
लगता है कि शायद कवि नागरिक जीवन से ऊब गया है. इसलिए वह गाँव
ओर जाने की बात कहता है —

'अब चलो गाँव की ओर चलें
नगरों से नाता तोड़ चलें।"[1]

कहीं-कहीं कवि ने गरीबी का भी चित्र खींचा, पर कवि का मन यहाँ
पर रमा नहीं है। 'वेदना मानस में जगी' कविता में कवि अपने प्राचीन गौरा
का स्मरण करके दुखी होता है। 'महायुद्ध' कविता में कवि ने युद्ध ■ दुष्परिणाम
एव प्रलयकारी चित्रों को प्रस्तुत किया है। प्रकृति का चित्रण भी कवि ने कि
है, पर जहां प्रकृति चित्रण हुआ है वहां उसमें वेदना, त्याग आदि का वर्ण
उनके द्वारा कर दिया है। फिर भी कवि की कुछ कविताएं वास्तव में सुन्द
बन पड़ी है। 'झिलमिलाता सन्ध्या तारा,' 'क्यों रोता है गूंगाल मन में,' 'वेदन
मानस में जगी' 'गांवों की ओर' आदि कविताएं विशेष रूप से पठनीय है।

कवि अपने युग के साथ चलता है। समाज सदैव एक जैसा नहीं रह
है, समय के साथ-साथ समाज बदल जाता है और समाज के साथ साहित्य भी
कवि अपनी खाद्य सामग्री समाज से ग्रहण करता है इसलिए जैसा उस कवि क
समाज होगा उसका साहित्य भी निश्चित रूप से वैसा ही होगा। यदि ऐसा न
होता तो वह कवि अपने उद्देश्य में सफल नहीं माना जा सकता है। कवि अप
समय और समाज के साथ चलता है यदि वह इनका साथ छोड़ देता है तो य
बात भी निश्चित है कि समय और समाज भी उसे छोड़ देते हैं। श्री शम्भूदया
ने भी युग के बढ़ते चरणों के अनुरूप अपने चरण बढ़ाये हैं. इसीलिये वे जो क
थे वे आज नहीं है —

"कल था जो अब न रहा हू
कह दे यह कोई आकर।"[2]

लेकिन कवि 'नीहारिका' की भूमिका में लिखता है "काव्य की पिछली
धारा के साथ उसका सम्पर्क सूत्र स्थापित है।" वास्तव में देखा जाय तो यह बात
कवि के लिए अधिक ठीक जान पड़ती है। बहुत प्रयत्न करने पर भी वह

---

१. शम्भूदयाल सक्सेना —रैन बसेरा पृष्ठ २६
१. शम्भूदयाल सक्सेना नीहारिका पृष्ठ ३५

रेणु'' में अपने आपको और अधिक नया सिद्ध करने के प्रयत्न में है। वह नई पीढ़ी के साथ चलना चाहता है। पर कवि ऐसा कर नहीं पाया है। नई कविता के विषय हैं—होटल, चाय, सिगरेट आदि और कवि ने पुराने छायावादी विषय ग्रहण किये हैं जैसे आकाश, चांद, प्रभात आदि। कवि यहां भी छन्द का मोह नहीं छोड़ पाया है। उसने शब्दों को अवश्य तोड़ा मरोड़ा है। इन कविताओं में वह गहराई नहीं जो कि वास्तव में कविता में होनी चाहिए। एक हल्का स्पर्श है और संग्रह की कोई भी कविता पाठक के हृदय पर स्थायी प्रभाव नहीं छोड़ती। कवि ने केवल विषय के ऊपरी स्तर को छुआ है। उसने नई कविता लिखने के लिए नवीन उपमान अवश्य नई कविता के ग्रहण किये हैं।

इसलिये वे भी इन कविताओं में आकर एक साधारण सा अर्थ देकर मौन हो जाते हैं। कहने का अर्थ यह है कि इसमें कवि का कथ्य कुछ दुर्बल ही है। पर इसमें कवि का अधिक दोष नहीं है। दोष कवि के सस्कारों का है जो उसके रग-रग में व्याप्त है और उसके लिये सस्कारों से पीछा छुड़ाना भी सरल नहीं है, उसने सस्कारों को छोड़ने का प्रयत्न अवश्य किया है। कवि की सफलता हो इसी प्रयत्न में है। इतना कुछ होने पर भी इस काव्य सग्रह की कुछ कविताएं अवश्य सुन्दर है, जैसे युद्ध का अंत और रेखा, अकवि से आदि। इन कविताओं के विषय भी नये हैं, कथ्य भी शक्तिशाली है और शैली में भी दीप्ति है।

आचार्य चन्द्रमौलिः—

स्वतन्त्रता के पूर्व से लेकर आज तक बीकानेर में काव्य साधना करने वाले शम्भूदयाल सक्सेना के बाद दूसरा स्थान आचार्य चन्द्रमौलि का है। इनकी प्रारम्भ से लेकर आज तक जितनी कविताएं हैं उन कविताओं के आधार पर यह कहा जा सकता है कि कवि का इन सब कविताओं में एक रूप नहीं रहा है। कवि बीकानेर की काव्य धारा के साथ परिवर्तित होता रहा है। इनके मुख्य रूप में दो काव्य सग्रह है—वैजयन्ती और दीपिका। इनके अतिरिक्त कवि ने दो छोटी-छोटी पुस्तकें—'पाक को चुनौती' और 'चीन को चुनौती, करके भी निकाली हैं। इन दोनों ही में देश भक्ति की कविताएं हैं और प्रकाशन काल में इनका प्रचार भी बीकानेर में बहुत हुआ। इनके द्वारा कवि ने समय की माग को पूरा किया है। यह समय ही ऐसा था जब देश का समस्त कवि वर्ग अपनी स्थायी साहित्य साधना छोड़कर देश में स्फूर्ति और

उत्तेजना की लहर उत्पन्न करने के लिये इसी प्रकार के प्रचारात्मक साहित्य की सर्जना कर रहा था।

वैजयन्ती इनका प्रथम काव्य संग्रह है जिसमें सन् १९४७ से लेकर ५४ तक की रचनाएं संग्रहीत है। 'वीथिका' दूसरा काव्य संग्रह है जिसमें इनकी सन् १९५४ से लेकर ६२ तक की कविताएं है। इन दोनों संग्रहों में कवि हमारे सामने दो रूपों में आता है। प्रथम छायावादी कवि रूप में और दूसरा प्रगतिवादी कवि के रूप में। दोनों ही संग्रहों में प्रथम प्रकार की ही कविताएं अधिक मिलती है, दूसरे प्रकार की कविताएं तो अंगुली पर गिनने योग्य है।

स्वतंत्रता प्राप्त होने पर देश भर में चारों ओर प्रसन्नता की लहर दौड़ गई थी और इस बात को कवि ने अपनी कविताओं में बांधा है, जैसे:—

" मिट गई कालिमा है नभ से
मस्तक पर कुंकुम राग विमल
आई स्वतन्त्रता ले ऊषा
खिल गया देश का हृदय कमल।" [1]

उस समय हम स्वतंत्र अवश्य हो गये थे, परन्तु फिर भी हमारे सामने बहुत सी समस्याएं मुंह बाए खड़ी थी और वे हमें निगल जाना चाहती थी। इस प्रकार की स्थिति में चैन की सांस नहीं ली जा सकती थी। कवि ने भुखमरी, अन्न वस्तु की कमी की ओर संकेत करते हुए लिखा है —

" कहीं भुखमरी, रोग कहीं है ——
दाने-दाने को नर रोते
अन्न बिना भूखों ही सोते
तन ढकने को वस्त्र न पाते।" [2]

कवि ने न केवल देश की प्रसन्नता का ही चित्रण किया है अपितु देश में व्याप्त भुखमरी, गरीबी आदि का भी चित्र प्रस्तुत किया है।

---

१. आचार्य चन्द्रमौलि —वैजयन्ती
२. " " — "

इन संग्रहों की अनेक कविताएं कवि सम्मेलनों की कविताओं के स्तर से ऊपर नहीं उठ सकी हैं। कवि का कर्तृत्व पक्ष इनमें अधिक प्रबल है। कुछ कविताएं चमत्कारवाद की कोटि में भी आती हैं। सृजनामय, रहस्यमय, प्रियतम, मनचाही मूर्ति, चिन्तन-प्रसून इन आदि इसी प्रकार की कविताएं हैं। इनमें कवि की स्वानुभूत भावना का अभाव है और इसलिये इनमें अनुभूति का छिछलापन दिखाई देता है। आचार्य चन्द्रमौलि की "वैजयन्ती" और 'वीथिका' दोनों काव्य ग्रन्थों की कविताओं के आधार पर यह कहा जा सकता है कि इनकी कविताओं में भावों की पुनरावृत्ति अधिक है। वे एक ही बात को कई कविताओं में कह जाते हैं। इसके अतिरिक्त इनकी कविताओं में हृदय स्पर्श करने की क्षमता कम दृष्टिगत होती है। कवि भाषा का धनी है और छन्द योजना भी अच्छी बन पड़ी है।

आचार्य चन्द्रमौलि ने हास्य और व्यंग्य की कविताएं भी लिखी हैं। 'कम्पोमीटर' इनकी हास्य रस की कविता है। इसके अतिरिक्त 'पत्नीव्रत ऐलान करो,' 'क्यूं' और 'ये कालेज के स्टूडेन्ट' आदि इनकी हास्य और व्यंग्य की कविताएं हैं। यह ठीक है कि आज स्त्री और पुरुष को हर क्षेत्र में समान अधिकार हैं पर इस अधिकार में स्त्रियों ने आज घर का कार्य छोड़कर अपने पतियों को सौंप दिया है। इस तथ्य को उन्होंने 'पत्नी व्रत ऐलान करो' कविता में सुन्दर व्यंग्यात्मक ढंग से प्रकट किया है —

> 'खाली घड़ा पड़ा है कब से
> जल लाकर जलदान करो......
> मुन्नी के बालों में कंघी
> करके चोटी गूंथ देना........
> साड़ी जम्फर मैले प्रियतम
> धोकर हिम्मत दान करो।'[1]

इससे और अधिक क्या हो सकता है कि पत्नी पति से अपने कपड़े धुलवाये। इसी प्रकार का करारा व्यंग्य आज की इस 'क्यूं' व्यवस्था पर कवि ने किया है :—

१—आचार्य चन्द्रमौलि —पत्नी व्रत ऐलान करो— कविता से

इनके अतिरिक्त "वैजयन्ती" में कुछ प्रकृति सम्बन्धी और ... सम्बन्धी कविताएं भी है, पर कवि का अधिक ध्यान तो स्वतन्त्रता-... पश्चात् के समय को चित्रण करने में ही रहा है।

इनका दूसरा काव्य संग्रह "वीथिका" है, इसमें भी ... और प्रकृति सम्बन्धी कविताएं हैं, और कुछ शृंगार रस की कविताए है। ... का प्रकृति वर्णन अधिकांश मे आलम्बन रूप मे हुआ है या उसका ... किया गया है।

"चूम चली जाती है लहरें
तृषित कूल का आनन प्यारा।"[1]
\+ + +
"इठलाती आई ऊषा है।"[2]

पर फिर भी इनके प्रकृति-चित्रण मे कही भी विशेष आकर्षण दृष्टिगत ... होता।

राष्ट्रीय कविताओं मे कवि ने अपने देश का गौरव गाया है ...
इन्होने जो कुछ कहा है उसमे ...
अपेक्षा 'वैजयन्ती' की राष्ट्रीय
कविताओं मे गाम्भीर्य का

इस कवि की एक बहुत बडी विशेषता यह रही है कि कवि अपने समय की काव्य प्रवृत्तियो से पिछडा नही है, उसने बीकानेर मे आगत समस्त साहित्यिक प्रवृत्तियो के स्वर मे स्वर मिलाया है और कवि सम्मेलनो मे पहुंच कर अपना नवीनतर रूप प्रस्तुत किया है।

चन्द्रदेव शर्मा

१५ अगस्त सन् १९४७ से एक नया युग आरम्भ हुआ। स्वतन्त्रता प्राप्ति के साथ ही कवियों की जबान पर जो पाबन्दी थी वह पूर्णतया हट गई और कवि राजनैतिक, सामाजिक सभी बातो को स्पष्ट रूप स कहने लगा। इस प्रभाव से बीकानेर भी अछूता नही रहा। चन्द्रदेव शर्मा, मनुज, मेघराज मुकुल और गंगा-राम पथिक उन कवियो मे से है जिन्होने इस स्वतन्त्रता का खूब कर उपयोग किया। ये सब कवि प्रगतिशील थे। इन्होने अपनी रचनाओ को जन साधारण तक पहुचाने के लिए 'नई चेतना'' पत्रिका भी निकाली।

चन्द्रदेव शर्मा प्रगतिशील कवियो मे अग्रणी है। इनका मुख्य स्वर विद्रोह का है। इनकी कविताए व्यग्य और हास्य से ओत-प्रोत है। चन्द्रदेव शर्मा ने हिन्दी जगत को बहुत कुछ दिया और बीकानेर की काव्य धारा मे एक तीव्र गति ला दी। उन्होने कम समय मे बहुत अधिक लिखा है। उनकी मृत्यु के उपरान्त उनका एक काव्य सग्रह 'पडित जी गजब हो रहा है'' निकला है, जिसमे उनकी हास्य और व्यग्यपूर्ण कविताए है।

साहित्यकार अपने युग का प्रतिनिधित्व करता है। चन्द्रदेव ने अपने समाज को खुली आखो से बहुत समीप से देखा। उनसे समाज की अच्छाइया और बुराइया छुप न सकी। रूढिवादी समाज उसकी थोथी परम्पराए, खोखली मान्यताए, राग विराग और जर्जरित कुरीतियों आदि ने कवि को विवश कर दिया कि उसने जैसा उन्हे देखा है उनका वैसा ही चित्रण कर दे, जिससे भावी पीढी सचेत हो जाय। कवि के अपने शब्दो मे 'वर्तमान समाज मे सड़ान पैदा हो गई है कवि का उसी व्यवस्था से विरोध है। वह देखना चाहता है, रुग्ण समाज के स्थान पर स्वस्थ समाज का निर्माण, तभी वह विद्रोह करता है।''[1]

'पडित जी गजब हो रहा है'' कविता पुराण पथ पर करारी चोट है।

"सर खिसक गया है ईश्वर का

१— स्व० चन्द्रदेव शर्मा —हमारे कवि (निबन्ध से)

महाराजा को, नेता, मन्दिर के पंडित आदि सभी को कवि ने आड़े हाथ लिया है और इन सब को जैसे ये हैं वैसा ही इनको चित्रित किया है :—

> 'ताजमहल होटल में बैठे सब राजा महाराजा
> सोच रहे सामंती युग का उठता देख जनाजा ... .
> इस जीवित रहने से अच्छा दारू पी मर जाना ।"[1]

'बेटी तेरे बेटा होगा", अद्‌भुत भोपा, रूप का बाजार आदि अनेक व्यंग्यात्मक कविताएं उन्होंने लिखी है जो आज पत्रिकाओं मे बिखरी पड़ी है या अप्रकाशित है ।

इसके अतिरिक्त कवि ने शुद्ध शुद्ध हास्य रस की भी कविताएं लिख कर हिन्दी साहित्य की कमी को पूरा किया है । मालिन, साजन का भ्रम आदि उनकी इसी प्रकार की रचनाएं हैं । रोमांटिक कविताएं कवि ने कम लिखी है, जितनी लिखी है उनमे "पनिहारिन" उनकी श्रेष्ठ सुन्दर रचना है । पर कवि का मन ऐसी रचना मे अधिक नही रमा है । चिनौने समाज की नंगी दुनिया मे उसे कभी प्यार नही करने दिया ।

सरकारी पद पर प्रतिष्ठित होने के कारण वह राजनैतिक विषयो पर खुल कर नही लिख सकता था । अत उसे छद्‌म नाम का आश्रय लेना पड़ा । इनके जितने छद्‌म नाम है उतने हिन्दी साहित्य मे किसी भी साहित्यकार के नहीं है । चन्द्रदेव शर्मा ने जो कुछ लिखा निर्भीकता से लिखा । नई और अनोखी सूझ-बूझ, अछूती कल्पना, सीधी-सादी भाषा मे करारी चोट, विनाश मे नये सृजन की प्रेरणा उनके काव्य की विशेषता है । बीकानेर के काव्य जगत मे इनका अपना एक युग रहा है और अपने समय मे वे बीकानेर काव्य जगत पर छाये रहे । चन्द्र-देव शर्मा ने बहुत से कवियो का निर्माण किया और व्यंग्य की शैली को नया रूप दिया । ये किसी भी वाद मे सम्बन्धित नही रहे परिन्तु स्वतन्त्र लेखक रहे । आज भी बीकानेर और हिन्दी साहित्य उनका ऋणी है ।

पर बीकानेर और हिन्दी काव्य-जगत का यह दुर्भाग्य हुआ कि १९ जन-वरी, १९५९ को चन्द्रदेव शर्मा का अकस्मात निधन हो गया । फिर यह भी समा-चार मिले कि उनके हृदय मे गति था गई है । लोगो ने यही समझा कि चन्द्रदेव यमराज से मजाक करने गया होगा और लौट आया है ।

१— सन् १९५१ मरुवाणी पृष्ठ १२

"जीर्ण पुरातन परम्परा से पल्ला छूटा ।"[1]

कवि देव मनुष्य को अधिक श्रेष्ठ समझता है । इसलिए कहता है :—

'आज कितने देव जिनको मनुजता स्वीकार है ?
मैं नया मानव जिसे देवत्व से इन्कार है ॥'[2]

इस संग्रह मे अधिकतर लय युक्त कविताए है । वर्ण्य विषय को चित्रित करने मे कवि सफल हुआ है । कवि की भाषा मे राजस्थानी शब्दो का प्रयोग हुआ है ।

मेघराज मुकुल का दूसरा काव्य संग्रह 'अनुगूंज' सन् १९६७ मे प्रकाशित हुआ जिसमे उसकी ४१ कविताए है । इस संग्रह की अधिकतर कविताएं उस समय की लिखी हुई है जब चीन ने भारतवर्ष पर आक्रमण किया था । स्वयं कवि ने इस बात को स्वीकार किया है, "अनुगूंज' कविता संग्रह शक्ति के क्षणो का सृजन है, जिसमे देश की भावनाए एक रस होकर व्यक्त हुई है । अधिकांश कविताए सन् १९६३ की है जब आततायी ने इस पावन भूमि पर अपनी कुदृष्टि डाली थी ।'[3]

कवि अपने समय से बहुत अधिक प्रभावित होता है । समय की मांग को वह ठुकरा नही सकता है । कवि ने इसमें जिस प्रकार की कविताएं लिखी उनकी उस समय वास्तव मे आवश्यकता थी । क्योंकि इस संग्रह की अधिकतर कविताएं सन् १९६३ मे लिखी हुई है । इन कविताओ के आधार पर एक बात यह भी कही जा सकती है कि इनमे कवि का आशावादी स्वर बहुत प्रबल होकर उभरा है ।

राजस्थान मे चारण परम्परा बहुत समय तक रही है । यद्यपि मुकुल का यह काव्य चारण परम्परा मे नहीं आता । फिर पाश्चात्य के संदर्भ मे उनका वह रूप उभरा ही जिसमें त्याग और शौर्य की प्रमुखता रही है । माता, बहन पत्नी आदि सभी अपने देश की रक्षा के लिए बड़े से बड़ा त्याग करने को सदैव तैयार रही है । युद्ध के समय मे किसी भी वीर के रास्ते मे पारिवारिक बन्धन नहीं

१—मेघराज मुकुल —उमंग पृष्ठ १
२— " " " " २३
३— " " —अनुगूंज—'शक्ति के क्षणों का सृजन' एप्रिल मे

है, परन्तु उसकी माँ, बहन और पत्नी उसे मातृभूमि की रक्षा के प्रति उसका कर्तव्य समझाती है, जैसे वीर की जननी कहती है :—

'बेटा मेरी कोख उजागर तब ही होगी
जब तू तेरी माँ पर मिट जाएगा ।'[1]

वीर पत्नी की भावनाएं भी वीर के उत्साह को ही बढ़ाती है :—

'धन्य होऊंगी अगर तुम, घाव से निजतन सजाये,
ले विजय श्री साथ अपने, देहरी पर लौट आये ।
और यदि संयोग वश, तुमको वहाँ मरना पड़े तो,
धन्य होऊंगी, यही सुन, देश के तुम काम आए ।'[2]

एक तरफ सीमा का प्रहरी सिपाही है दूसरी ओर उसकी पत्नी है। पत्नी विजय श्री पाने को लिख कर भेजती है, माँ का अनुरोध है कि वह भारत माता को ही अपनी असली माँ माने। बहन अपने धागे की याद दिलाती है :—

'भैया अपनी यह मजबूत कलाई देखो,
इसमें मैंने दो धागों की राखी बाँधी ।
ये दो धागे आन-बान के ही प्रतीक हैं ।'[3]

कवि अपने देश के सिपाहियों को अपनी इसी मातृभूमि के लिये न्योछावर होने वाले शहीदों की याद दिलाता है :—

'यहाँ शिवाजी लक्ष्मी बाई, [illegible] की कहें कहानी ।
[illegible] को जन्म-भूमि, [illegible] को दे रही जवानी ।'[4]

भारतवर्ष की प्राकृतिक [illegible] भी भारतवर्ष की रक्षा [illegible] का इस दृष्टि से बहुत महत्व है :—

[illegible] हिमगिरी का [illegible] रहा है,
[illegible] के कोटा [illegible] रहा है ।

---

१ —[illegible] पृष्ठ [illegible]
—" " [illegible]
—" " [illegible]
—" " [illegible]

इस समय (सन् १९४०-५३) श्री कविराज् लिखी जा रही थी उनमें विद्रोह का स्वर प्रमुख था। अत: 'मनुज' का उससे विरत रहना कठिन था। इस संग्रह (विप्लवगान) की मूल कविताएं क्रांतिकारक हैं। कवि राजस्थान में पैदा हुए, यहीं बड़ा हुआ। अत: जन्मभूमि से उनका प्रेम होना स्वाभाविक ही था। कवि के निज मरुधर का मान इन्द्रपुरी से भी बढ़कर है —

'सुर इन्द्रपुरी से सुन्दर है
मेरे मरुधर के सुखद धाम,
तेरे रेतीले धोरों पर
उन्माद बिखराती सुखद शाम।'[1]

कवि अपनी कविताओं में त्यौहारों और उनके गीतों का मोह भी नहीं छोड़ पाता है :—

'फिर 'तीजड़ी' का त्यौहार सुखद
सखियों के मादक गीत मधुर,
झूलों के मस्त झकोरों पर
जाते-उड़ उर के अरमान बिखर।'[2]

कुछ कविताएं उद्‌बोधनात्मक हैं। ऐसी सभी कविताओं में कवि अपने युग की पतनोन्मुखता से पीड़ित है और उसे जगाना चाहता है। इसलिए वह युग के कवि को नवीन रूप में प्रस्तुत होने के लिए आह्वान करता है। वह चाहता है कि वह वसुन्धरा के उर के छाले भी देखे :—

'तुमने उस मादक मस्ती के
मधुमय गीत बहुत लिख डाले,
किन्तु कभी क्या देखे तुमने
वसुन्धरा के उर के छाले ?'[3]

कवि को इतने से ही सन्तोष नहीं होता, वह तो युग कवि पर व्यंग्य करता है :—

१—मालदान देपावत 'मनुज' —विप्लवगान पृष्ठ ३३-३४
३— " " " " " ३३
४— " " " " " ४५

"मौत यहां पर नाच रही
तुम परियों का आह्वान कर रहे।"[1]

संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि कवि ने चाहे किसी भी प्रकार की कविताएं क्यों न लिखी हो उसमें विप्लव का स्वर मुख्य दृष्टिगोचर होता है। कवि को किसी भी प्राचीन आस्था के प्रति विश्वास नहीं रहा है, जैसे—

"उस पत्थर के परमेश्वर का अभिसार मिटाने आया हूं।"[2]

\+ + +

उस प्रबल पाप के पुंज, धर्म की धूल बनाने आया हूं"[3]

कवि को तो केवल इसी बात का विश्वास है—

'मानव खुद अपना ईश्वर है
साहस उसका भाग्य विधाता,
प्राणों में प्रतिशोध-जगाकर
वह परिवर्तन का युग लाता।"[4]

इसके अतिरिक्त इस संग्रह में कुछ प्रकृति सम्बन्धी कविताएं भी हैं। हर स्थान पर प्रकृति मानवीकरण का बाना पहन कर उपस्थित हुई है —

'चन्दा के दर्पण में आकर
निशा झांकती है निज यौवन
तारों का शृंगार सजा कर।"[5]

मनुज ने बहुत कम समय में बहुत कुछ लिख डाला पर उनके पूर्ण विकास के लिए अभी समय की आवश्यकता थी। इनकी कविताएं समय-समय पर देश की विभिन्न पत्रिकाओं में छपती रहती थी। कवि सम्मेलन की तो आप जान थे। आज उनकी स्मृति स्वरूप हमारे पास केवल "विप्लवगान" ही है।

डॉ० पुष्करदत्त शर्मा –

बीकानेर से आचार्य नन्दकिशोर द्वारा सम्पादित "संवेदन दर्शन"

१— मालदान देपावत 'मनुज'	–विप्लवगान	पृष्ठ	५५
२— ,,	,,	,,	३६
३— ,,	,,	,,	३६
४— ,,	,,	,,	५६
५—			[illegible]

काव्य संग्रह मे डॉ० पुष्कर दत्त शर्मा की कुछ कविताएं है। इस संग्रह की कविताए और उसके बाद की कविताओं से ऐसा लगता है कि बहुत ही प्रयास करके कविताएं लिखी है। जिस प्रकार से कवि भाव मग्न हो कर कविता लिखता है वह बात इनकी कविताओं में नही है। इसलिए इनकी कविताए भावनाओं का स्पर्श कम करती है। कविताओं मे बौद्धिकता की अधिकता है और अनुभूति की कमी पायी जाती है। 'सासों का चक्रव्यूह' और 'रात का डिनर' ऐसी ही कविताएं है जिनमे अनुभूति की कमी है। इनकी कुछ एक कविताओं में रूपक काफी लम्बे हैं। 'संवेदन इति' में एक इसी प्रकार की कविता है:—

"मायूसियों की मेल-ट्रेन पर
भागता सा जा चढा है
बिना टिकट
बिना पूछे
+ + +
अन्तश्चेतना का टी० टी० सामने खड़ा है
+ + +
टी० टी० चला गया है
प्रताड़न की पनरटी लगा कर"[1]

डॉ० पुष्करदत्त शर्मा की कुछ एक कविताएं काफी सशक्त भी है। जिनमें अनुभूति की कमी नहीं खटकती। "माइसकोप" इनकी इसी प्रकार की कविता है। निश्चित मान्यताओं और विचारों की पुष्टि मे लिखी गई कविताए बौद्धिकता धरातल पर बैठी प्रतीत होती है। जिनमें विषय की एकरूपता अधिक है।

कवि ने कुछ राष्ट्रीय कविताएं भी लिखी है। चीन के आक्रमण में लिखी हुई इनकी यह कविता जिसमे इन्होंने अपने देश की एकता। दुश्मनों का ध्यान दिलाया है और साथ ही अपने सिपाहियों को भी बताया है कि दुश्मन के पास अपना कुछ भी नहीं है। सब पराया है और दूसरे देश की रक्षा नहीं कर सकती :—

"आज उसकी फौज में ताकत पराई
आज उसकी योजनायें सब पराई

[1] अन्तर्विरोध "संवेदन इति"

वह भूखा बैठा
पराए शस्त्र से कब तक लड़ेगा
पराई बुद्धि भी कब तक चलेगी ।"[1]

इधर वह दुश्मन को ललकारता हुआ कहता है कि :—

"याद रक्खे वह
कि भारत झुक नहीं सकता
कहीं फिर रुक नहीं सकता
सहन वह कर नहीं सकता
किसी का आक्रमण
किसी का अतिक्रमण"[2]

कवि ने अपनी इस कविता में दुश्मन की कमजोरी और भारत का गौरव दोनों को ही साथ-साथ चित्रित किया है । भाषा पर कवि का पूर्ण अधिकार है । राष्ट्रीय कविताओं में तो कवि ने बहुत ही सरल भाषा का प्रयोग किया है । अन्य कविताओं में अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग भी किया है ।

राजानंद भटनागर —

बीकानेर के आज के कवियों में राजानन्द भटनागर का भी अपना एक स्थान है । यहां की काव्य चेतना में इनका योगदान रहा है । इन्होंने जितनी भी कविताए लिखी है वे सब "नई कविताए" हैं । कवि ने समय की मांग को अवश्य ही समझा है । इनकी ऐसी अनेक कविताएं है जो किसी प्रकार का बिम्ब प्रस्तुत नहीं करती । "युग विवेक", "आयाम" और "विश्वास" आदि कविताओं में अति साधारण अभिव्यक्ति है । इनकी कुछ कविताए रूढ़िग्रस्त है और शिल्प की दृष्टि से भी प्राचीन खडहर जैसी लगती है । "शायद देवता" इसी प्रकार की कविता है । कवि ने कुछ अनास्था युक्त कविताएं लिखी है । जिनको उन्होंने "घुटन नं०-१", "घुटन नं०-२", और "घुटन नं० ३" शीर्षकों में बांधा है । "घुटन नं०-१" में सपाट अभिव्यक्ति है । "घुटन नं० २" में अवश्य ही कहने का ढंग बहुत अच्छा है और व्यंग्य रूप में समाज में प्रचलित और परिचित चित्र प्रस्तुत किये हैं ।

१— सं० संहिता -विजय हमारी है पृष्ठ २१
२— " " " २२

कुछ कविताओं में कवि का चिन्तन बहुत गम्भीर है और अभिव्यक्ति में भी गाम्भीर्य बना हुआ है। "जिन्दगी" और "पोर्ट्रेट" इनकी ऐसी ही कविताएं हैं। राजानन्द की कुछ कविताओं में व्यंग्य भी है। कवि का जीवन भीड़ से आबद्ध है। वह भीड़ में एकाकीपन अनुभव करता है और अपने आप को छिपाना चाहता है, जैसे –

"मेरा भीड़ में सिकुड़ा हुआ
व्यक्तित्व
\+ \+ \+
मेरा अकेलापन
स्वतन्त्र नहीं, प्रतिबद्ध है
उनमें
जिनसे मैं भीड़ में
हमेशा अलग
तटस्थ
और अनमिला रहता हूं।"[1]

भाषा भावानुकूल है। कवि ने कहीं-कहीं अंग्रेजी शब्दों का भी प्रयोग है। परन्तु उससे भावाभिव्यक्ति में किसी प्रकार की कमी नहीं।

हर्षि

कान्ह महर्षि ने राष्ट्रीय, हास्य और प्रेम सम्बन्धी कुछ कविताएं लिखी ...एं पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई हैं तथा एक कविता भी प्रकाशित हुई है। कवि जितना राष्ट्रीय कविता में ...न्य कविताओं में नहीं। इसलिए कवि ने इससे सम्बन्धित कुछ अधिक है। आजादी को बनाये रखने के लिये कवि है :–

रहती है आजादी
दानों से नये से
कव हुए

क कविता से

[illegible] है
[illegible] ।"[1]

[illegible] की कविता में कवि [illegible] का वर्णन करता हुआ लिखता —

"[illegible] के [illegible]
[illegible] है
[illegible]
[illegible] है ।"[2]

कवि का यह एक प्रधान स्वर है। कवि ने प्रेम का भी चित्रण किया है —

'[illegible] जवानी बन जाती है
[illegible] कहानी बन जाती है ।"[3]

कवि की इन सभी रचनाओं को देखने से एक बात तो स्पष्ट है कि कवि अपने [illegible] और समय से बहुत पीछे है। कवि आज भी छायावादी युग में बैठा प्रकृति व प्रेम की रंगीली दुनिया में विचरण कर रहा है।

बल्लभेश दिवाकर —

कवि और गीतकार बल्लभेश दिवाकर का प्रथम काव्य संग्रह "नई वाणी" सन् १९५५ में कलकत्ता से प्रकाशित हुआ। इसमें कवि की केवल सोलह रचनाएं हैं। "नई वाणी" का कवि पूर्ण रूप से चेतनाशील है। कवि ने इसमें भौतिकवादी युग की ओर इशारा किया है। आज नगरों में मनुष्य से पैसे की कीमत कहीं अधिक है। इसी बात को कवि कहता है —

"पूंजी की महिमा बढ़ी, विषमता छाई
मानव मानव के बीच पड़ गई खाई।"[4]

दिवाकर का दृष्टिकोण आशावादी है। उन्हें मनुष्य की अच्छाइयों से प्यार है। इस बात को डा० सत्येन्द्र ने भी "नई वाणी" के "दो शब्दों" में लिखा है।

१— कान्ह महर्षि 'बहनो लोहित तिलक लगाओ गाओ गीत तराना'
२— ,, ,, "दाढ़ी" कविता से
३— ,, ,, "प्यार" कविता से
४— बल्लभेश दिवाकर "नई वाणी" पृष्ठ ८

"कवि आशावादी है और यह उसकी रचनाओं की एक बहुत बड़ी विशेषता है।"[1] कवि के जीवन का यह प्रथम प्रयास है। पर इस आशावादी दृष्टिकोण के कारण आज इतना सफल हो पाया है।

"ओ समाज के कुण्ठित प्राणी" कविता विशेष रूप से भारतीय समाज को लक्ष्य करके लिखी गई है।

"दिवारों में बंद नारियां
सिसक-सिसक दम तोड़ रही हैं।"[2]

कवि की यह 'नई वाणी" वास्तव में समाज के लिये एक नई वाणी है। मानव को मानवता का पाठ पढ़ाने का कवि ने बहुत प्रयत्न किया है। आज के समाज की कुरीतियों पर भी कवि ने चोट की है। कवि स्वयं कर्मशील है। इस बात को स्पष्ट व सरल शब्दों में व्यक्त करता है:—

"नाम जग दे या न दे मैं
काम निज करता रहूँगा।"[3]

कवि को नाम की भूख नहीं है वह तो अपना काम करना चाहता है।

"मैं गीत सुनाता जाऊंगा" कवि का दूसरा काव्य संग्रह है जिसमें सन् १९५५ से लेकर ६२ तक की रचनाएं हैं। इसमें इनकी रचनाएं आदर्शवाद व यथार्थवाद के बीच के पथ से गुजरती हुई प्रगतिवादी मैदान में खड़ी होकर प्रयोग... को सम्बोधित करती हैं। दिवाकर मूल रूप से गीतकार हैं। इस बात को ... स्वयं ने स्वीकारा है:—

"जिन्दगी पाई है मैंने गीत गाने के लिये
इसलिये बस जी रहा हूँ, गीत गाने के लिये।"[4]

संग्रह में कुछ तो राष्ट्रीय प्रेम की रचनाएं हैं जैसे "मेरा हिन्दुस्तान," "देश ..." आदि। अन्य रचनाओं में जिन्दगी का दर्द, मानव की पीड़ा और समाज बन्धनों को तोड़ने की दर्द भरी आवाज है, जिसमें हमारा सामाजिक जीवन हुआ है। इन बन्धनों को तोड़ने का कवि ने प्रयत्न किया है। दिवाकर के हृदय का दीपक जलाना चाहिये, मिट्टी के दीपक जलाने पर तो आत्म-

1. दिवाकर	—नई वाणी	पृष्ठ ८
2. "	— "	" २९
3. "	— "	पृष्ठ ३०
4. "	—मैं गीत सुनाता जाऊंगा	" २२

प्रकाश नहीं होगा और इसलिए उससे बहू-बेटियों का अस्मत बिकना नहीं रुकेगा।

"क्या इससे बहन बहू बेटी का अस्मत बिकना रुका कहीं।"[1]

कवि में प्रेम अवश्य है पर दर्द भरा हुआ है। वह प्रेम भी करना चाहता है पर ठोक बजा कर:—

"प्यार मुझ से है तो जलना सीखले
प्यार मुझ से है तो मरना सीखले।"[2]

इस संग्रह की सभी रचनाओं के बारे में यही कहा जा सकता है सारे संसार का दुःख दर्द अपने दामन में समेट कर इस संसार को अमन, चैन, राहत और खुशी के गीत बख्श देना इनका पूर्ण लक्ष्य है।

रचना शिल्प पुराना है पर रोचक अवश्य है।

'मैं एकाकी नहीं चलूँगा' दिवाकर का तीसरा संग्रह है जो सन् १९६६ में प्रकाशित हुआ। इसमें ६३ से ६६ तक की कविताएं हैं। समझ में नहीं आता कि किस कारण से कवि ने यह संग्रह निकाला है, क्योंकि इसमें कुल ३१ कविताएं और गीत हैं जिनमें से २३ मैं गीत सुनाता जाऊंगा' संग्रह में पहले ही प्रकाशित हो चुकी थी।

व्यक्तिवादी दृष्टिकोण से जीवन चलाने पर हम सब कहीं न कहीं लोक-तन्त्र की हत्या के कारण न बन जायें, इस वेदना से कवि पीड़ित है। कवि किसी भी प्रकार के वाद से बंधा हुआ नहीं है। इसका प्रमाण है उसकी राष्ट्रीय कविताएं 'विश्वास गीत', 'मैं', आग वर्फ में लगी खून से बुझायेंगे,' आदि कविताओं में जहां उसने हमारे राष्ट्रीय संकट के प्रति चुनौती पूर्ण आस्था प्रकट की है वहां 'मेरा हिन्दुस्तान,' 'देश निराला' 'बोल जय भारती' में राष्ट्रीय प्रेम भी प्रसर हुआ है। इन कविताओं से स्पष्ट हो जाता है कि कवि भारतीय आत्मा को समझा है—

'हमने मानव की सांसों को बख्शा शाश्वत प्यार है
हमें विश्व को कुछ कहने का इसीलिये अधिकार है।"[3]

इनकी कुछ कविताओं में यौवन का उद्दाम वेग है, पर वह श्मशानामुखी

---

१. ,, ,, —मैं, गीत सुनाता जाऊंगा पृष्ठ ४७
२. ,, ,, — ,, ,, पृष्ठ [illegible]
३. —मैं एकाकी नहीं चलूँगा पृष्ठ ४०

की विनाशकारी शक्ति नहीं है। यह सूर्य का प्रचण्ड ताप है जो जीवन को उष्मा और प्रकाश प्रदान करता है। कवि बिछुड़ने का नहीं मिलाने का काम कर रहा है—

'हर वियोगी को मिलन दे रहा हर प्रयोग को चरण दे रहा।'[1]

इस संग्रह की कुछ कविताएं भाव और कला दोनों दृष्टियों से बहुत प्रौढ़ रूप में प्रस्तुत हुई है।

मोतीचन्द खजांची :—

बीकानेर में छायावादी प्रवृत्ति की कविताएं लिखने वाले कवियों में मोतीचन्द खजांची भी है। वैसे इन्होंने काफी कविताएं लिख रखी है, पर इन्होंने सन् १९५६ के बाद कोई कविता नहीं लिखी।

कवि ने अधिकतर कविताओं में मिलन, विरह और प्रकृति का वर्णन किया है। कवि महादेवी के पदचिन्हों पर चल कर प्रेम मार्ग दर्शन और निर्वाण प्राप्ति का साधन मानता है :—

'चल अकेली दूर तट पर
प्रिय मिलन मत मोति भ्रम कर
स्नेह का दीपक जला ले
राह बीहड़ तू अकेली
प्रेम में निर्वाण है री।'[2]

'उस पार,' 'चल सखे उस पार' आदि कविताओं में भी इसी प्रकार से मिलन की बात है। कहीं इस प्रिय मिलन में कवि ने आध्यात्मिक मिलन की ओर भी संकेत किया है, पर यह संकेत बहुत अस्पष्ट और कम है।

विरह की कविताओं में कवि ने अपने आप को सुमित्रानन्दन पंत की तरह स्त्री के रूप में प्रस्तुत किया है। जैसे :—

'भग्न वीणा के तारों पर सखी
मैं विरह के गीत गाती
+ + +
गायिका मैं हूं अकेली, नींद कैसी।'[3]

१—वल्लभेश दिवाकर —'मैं एकाकी नहीं चलूंगा' पृष्ठ ६७
२—मोती चन्द खजांची —'प्रेम में निर्वाण है री' कविता से
३— " " —'मैं विरह का गीत गाती' कविता से

कही विरहिन की दीपक सी जलती रहती रूप मे चित्रित किया है। मिलन और विरह दोनो प्रकार की कविताओ के आधार पर ऐसा लगता है कि मिलन की अपेक्षा विरह वर्णन मे कवि का मन अधिक रमा है।

कवि की भाषा मे कही क्लिष्टता नहीं है।

रामदेव आचार्य.—

रामदेव आचार्य का प्रथम काव्य संग्रह 'अक्षरो का विद्रोह' अगस्त १९६८ मे प्रकाशित हुआ। इसमे इनकी दो तरह की कविताए हैं, लघु कविताएं और लम्बी कविताएं। इस संग्रह के अतिरिक्त रामदेव आचार्य की कुछ कविताए 'संवेदन इति' मे भी प्रकाशित हुई है (जो इस संग्रह मे आ गई है) तथा अन्य पत्र-पत्रिकाओ मे प्रकाशित होती रहती है।

दोनों प्रकार की कविताओ मे कवि का मुख्य स्वर व्यग्य का है। कवि ने बहुत ही तीखे और गम्भीर व्यग्य प्रस्तुत किये हैं। ये व्यग्य आज के मानव, आज के समाज आज की व्यवस्था आदि सभी पर है। आज की शासन व्यवस्था पर यह एक करारी चोट है।

'ओ रे भौंदू जीव !
यह नही भाग्य का गान
कि घोड़े ढोये बोझ
औ' गधे चबाये पान।' [1]

इस प्रकार इनकी 'मसीहा' कविता आज की दलबन्दी पर व्यग्य है। 'विद्रूपता', 'तीन समानताए', 'कौवे और आदमी' आदि कविताओ मे सामाजिक व्यग्य अधिक मुखरित हुआ है। इन कविताओ मे रामदेव आचार्य का कवि रूप निखरा है। जैसे इनकी 'विद्रूपता' कविता में यह व्यग्य का चित्र भी दृष्टव्य है :—

'सभी राक्षस
राम-भक्त हो गये हैं,
सभी निकम्मे
व्यस्त हो गये है
कुर्सियो से चिपक गये हैं,

अभी विभीषण
ऐसा बन रहे हैं
अभी [illegible] और [illegible]
'राम नाम' कह कर
लिपट हो रहे हैं।'[1]

आज के इस भौतिक युग में मनुष्य का अवमूल्यन हो रहा है और [illegible] पर आ रहा है, इससे कवि को असन्तोष है यह तो [illegible] समाज में है, और सामान्य वस्तु से [illegible] पृथक अस्तित्व सिद्ध करना चाहता है :—

'मैं कोई बादल तो नहीं हूं
कि जब चाहो तब सवारी करलो
मैं कोई चादर तो नहीं हूं
कि जब चाहो तब बिछा लो
जब चाहो तब ओढ़ लो,

\+ + +

मैं कुछ और हूं
मैं आदमी हूं।'[2]

कवि की कुछ कविताओं में सरलता की अधिकता है और गम्भीरता की कमी है। कवि की कुछ कविताओं में रोमांटिक स्वर है। कुछ कविताओं में कहीं-कहीं भावों की पुनरावृत्ति भी हो गई है जैसे इनकी 'आओ मेरे साथ आओ' कविता है। कवि ने बहुत सी कविताओं में कथोपकथन शैली को अपनाया है। कवि की भाषा ने उसके भावों का साथ दिया है। भाषा पर कवि का पूर्ण अधिकार दृष्टिगोचर होता है।

भवानीशंकर व्यास 'विनोद'

बीकानेर की नई पीढ़ी के कवियों में भवानी शंकर व्यास 'विनोद' हास्य रस के प्रसिद्ध कवि हैं। इनका काव्य संग्रह 'मुझे हंसी आती है' में सन्

१—रामदेव आचार्य —अक्षरों का विद्रोह पृष्ठ १२
२—" " —" " " ६

१९६६ तक की कविताएं है। इस संग्रह में दो प्रकार की कविताएं है—हास्य रस युक्त और राष्ट्रीय भावना युक्त। हास्य मे कही पर भी भद्दापन नहीं आया है। इनकी हास्य की कविताएं अनेक विषयो पर है। आपकी लोकप्रिय रचनाएं —रोबीला चश्मा, इसलिए तोंद को नमस्कार, मैं गधों का लोहा मानू, चोटी, दाढ़ी, मूछें आदि है। चश्में के अभाव में किसी चश्में बाज पर क्या गुजरती है :—

'माता सीता को ये सज्जन माताजिन्हा पढ़ जाए ।।
ये पढते भरत को मात और हल्का को पढ़ जाए हलवा।
+ + +
आ रहा सामने बैल उसी से मिलने भी जा सकते हैं ।।
हो भरत मिलाप वहीं ऐसा फुटबाल आप बन जाएगे।'[1]

इसी प्रकार तोंद का वर्णन भी हुआ है :—

'इनका है मोटा पेट सब जगह इनको मिलती है।
लेकिन द्वारो मे मुश्किल से ही इन्हें इजाजत मिलती है।'[2]
+ + +
सोए रहते हैं आप नाक मे बाजा बजता जाता है।'[3]

व्यास की कविता मे श्रोता एवं पाठक को हंसा कर लोट-पोट कर देने की शक्ति है।

इस संग्रह मे व्यास की हास्येतर कविताओं मे राष्ट्र प्रेम की झलक, शोषण, उत्पीड़न और सामाजिक कुरुताओं के विरुद्ध प्रबल विद्रोह है। शोषकों का तांडव नृत्य, भ्रष्टाचारी और उसके द्वारा जकड़े समाज का कारुणाजनक चित्रण भी अवश्य किया है पर कवि उसकी विभीषिका को देखकर मौन अवश्य हो जाता है। ऐसा प्रतीत होता है कि कवि का मन जितना हास्य रस की कविता मे रमा है उतना अन्य कविताओं मे नही।

१—भवानीशंकर व्यास 'विनोद' —मुझे हंसी आती है पृष्ठ ६-७
२—'' '' '' — '' '' १

प्रभाशंकर व्यास का दूसरा काव्य संग्रह 'हास्यमेव जयते' है। इस संग्रह में कुल बाइस कविताएं हैं जिनमें से दो कविताएं तो वही हैं जो 'मुझे ये पाती हैं' में हैं। बाकी सभी नवीन कविताएं भी हास्य रस की ही हैं, परन्तु इनमें की हास्य रस की कविता और इन कविताओं में एक विशेष अन्तर है। वह यह कि प्रथम संग्रह की हास्य रस की कविताओं में व्यंग्य नहीं है और इन कविताओं में हास्य व्यंग्य से मिश्रित हुआ। कहीं-कहीं पर तो व्यंग्य बहुत ही प्रधान हो गया है। कवि की इन कविताओं में व्यंग्य एक विशेष ढंग से प्रस्तुत हुआ है। कविता का प्रारम्भ साधारण हास्य से है। खटमल का वर्णन करते हुए कवि कहता है —

'गाड़ी स्टाइल, कुशर्ट पेन्ट सब जगह आप घुसपैठ करें।
भूमि सारी गोपाल की है वेगटके आप घरें विचरें ॥'[1]

परन्तु यह शुद्ध हास्य तिलक पर सामाजिक व्यंग्य में परिणत हो जाता है और सामाजिक खटमलों की बात करने लगता है —

'रातों के खटमल से ज्यादा दिन के खटमल हैं खतरनाक ॥
गद्दियों के खटमल अमर बेल ज्यों खुद ही पलते रहते हैं।'[2]

आज भारतवर्ष में जनसंख्या की समस्या बहुत प्रबल होती जा रही है और हर स्थान पर परिवार नियोजन के पखवाड़े मनाये जाते हैं। हर कोई परिवार नियोजन की बात करता है। बेटी चाहे लूप लगाले पर मा ऐसा नहीं करती :—

'बेटियाँ लूप लगवाती हैं माताएं जनती रहती हैं'[3]

+ + +

'छः छः बच्चों के बाप लाभ बतलाते लघु परिवारों का।'[4]

इसी प्रकार कवि ने रिश्वत खोरों, नेताओं, बनियों और चन्दा लेने वालों पर ... किया है।

'ये वसूल करके खा जाते हैं गौशाला के भी चन्दे ॥
गायों का लेकर नाम आप चंदा बटोरते फिरते हैं।

1 शंकर व्यास —हास्यमेव जयते पृष्ठ ...
" " " " ...
" " " " १३...
" " " " ...
"

गाने चरती है घास और यो सेवक मंश चरते हैं" ॥[1]

परन्तु ये सभी व्यंग्य हास्य से मिश्रित हैं। कवि हंसता भी है और तीखी मार भी करता जाता है। इस प्रकार की कविताओं के अतिरिक्त संग्रह में कुछ शुद्ध हास्य की कविताएं हैं जिनमें किसी भी प्रकार का व्यंग्य नहीं है। व्यंग्य और हास्य के लिए कवि ने प्रत्येक भाषा के शब्दों को अपना लिया है। ऐसा करने से कवि की कविता प्रभावशाली बन गई है।

बीकानेर में हास्य रस की बहुत कम कविताएं लिखी गई हैं। व्यास से पहले चन्द्रदेव शर्मा ने अवश्य ही हास्य रस की कविताएं लिखी थी, उसी कार्य को इन्होंने आगे बढ़ाया है। केवल बीकानेर ही नहीं यदि हम हिन्दी साहित्य के इतिहास पर भी एक दृष्टि डालें तो हमें पता चलेगा कि हिन्दी में हास्य रस का अभाव-सा है। वीरगाथा काल के कवियों का ध्यान अपने आश्रय दाताओं की प्रशंसा तक ही सीमित था। भक्तिकाल के कवियों का ध्यान अपने इष्ट देवता के सामने दीन दिखाने में या भगवान की लीलाओं में ही तल्लीन हुआ। रीतिकाल के कवियों की लेखनी नायिका के नख-शिख से आगे न जा सकी। आधुनिक काल में अवश्य ही हास्य की कुछ कविताएं लिखी गई हैं इस दृष्टि से भवानीशंकर व्यास का यह योगदान हिन्दी काव्य के लिए महत्वपूर्ण है।

डॉ० मदन केवलिया—

बीकानेर की नयी पीढ़ी के कवियों में डॉ० मदन केवलिया का भी स्थान है। आप कहानियां और कविताएं दोनों ही लिखते हैं। इनकी कविताएं प्रायः पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहती हैं। इनकी कविताएं अधिक लम्बी नहीं हैं, छोटी कविता में भी ये बहुत कुछ कह जाते हैं। इनकी बहुत सी कविताओं में मार्मिक व्यंग्य छिपा रहता है। लेकिन वह व्यंग्य कभी हास्य में लिपट कर और कभी रोमान्स में लिपट कर पाठकों के सामने आता है। इनका व्यंग्य समाज है। एक अस्पताल पर कविता है —

"खून रहित चेहरों की सफेदी
चादरों पर फैल जाती है
मौत के मंडराते सायों को देख कर
और इधर — कहकहे उठते हैं
ड्यूटी रूम में इन्कार के

1— भवानीशंकर व्यास — हास्यमेव जयते — पृ० ७०

और फिर इकरार के ।"1

आज की भौतिक सभ्यता ने भारत को फैशन के नाम पर नग्न या अर्द्ध नग्नता दी है । कवि की दृष्टि उस पर पहुँचती है और आ युवती पर जो व्यंग्य कवि करता है वह कहने की शैली में अधिक प्र सुन्दर हो गया है ।

"लाज
लड़कियों के कपड़ों में नहीं
पुरुष की आंखों में घर बना रही है ।"2

श्रौर फिर इकरार के ।"[1]

आज की भौतिक सभ्यता ने भारत को फैशन के नाम पर नग्नता (
ा अर्द्ध नग्नता दी है । कवि की दृष्टि उस पर पहुँचती है श्रौर श्राज की न
ुवती पर जो व्यंग्य कवि करता है वह कहने की शैली में श्रधिक प्रखर अं
ुन्दर हो गया है ।

"लाज

देखते हैं।[1]

कवि अनुभव करता है कि आज का युग अधिकतर औपचारिकता का युग है। हमें आज प्रत्येक बात में औपचारिकता निभानी पड़ती है। इसमें हम सदैव वास्तविकता से दूर रहते हैं। इसको कवि ने अपनी "सम्बन्ध" कविता में बहुत अच्छे ढंग से व्यक्त किया है। जिसे कवि पत्नी तक के सम्बन्ध में पाता है :-

"पत्नी अपना फिल्मी सम्बन्ध बढ़ाती है।"[2]

यह औपचारिकता कवि के शब्दों में नमक है, जिसकी उपस्थिति से कवि घुटन अनुभव करता है —

"लगता है मेरे दोस्त
कि हर चमकने वाली चीज
सोना नहीं होती।"[3]

आज इस भौतिक युग में मनुष्य की कोई कीमत नहीं है उसकी तुलना में मशीनें अधिक मूल्यवान हैं। इस बात को भी कवि ने अपनी कविता में कितने सुन्दर ढंग से कहा है —

"देखनी
जरा जिंदगी महगी नहीं
चीजें महगी है।"

संक्षेप में यह है कि कवि अपनी बात को बहुत ही सरल और स्पष्ट शब्दों में कह जाता है। भाषा की ओर उसने अधिक ध्यान नहीं दिया है। उर्दू और अंग्रेजी शब्दों का उनकी कविताओं में काफी प्रयोग हुआ है। कवि ने अपनी सभी कविताओं के लिए नवीन विषयों को चुना है और समय के साथ चलने का प्रयास किया है।

हरीश भादानी—

बीकानेर के काव्य जगत में हरीश भादानी का विशेष स्थान है। आज की कविता और गीतों में इनका अच्छा योगदान है। पर कवि आज हमारे सामने जिस रूप में है, उस रूप में प्रारम्भ में नहीं था। उसका स्वाभाविक ढंग से विकास

१— गणपति चन्द्र गुप्त — साहित्यिक निबन्ध पृ० ३१२

— डॉ० मदन केवलिया की एक कविता से।

— " " " ।

और फिर दरबार के ।"[1]

आज की भौतिक सभ्यता ने भारत को फैशन के नाम पर नग्नता या अर्द्ध नग्नता दी है । कवि की दृष्टि उस पर पहुँचती है और आज की युवती पर जो व्यंग्य कवि करता है वह कहने की शैली से अधिक प्रखर और मुखर हो गया है ।

"लाज
लड़कियों के कपड़ो में नहीं
पुरुष की आंखो में घर बना रही है ।"[2]

इसी प्रकार से आज की तथाकथित प्रेमिका पर व्यग्य है :—

"पर शायद तुमने मुझे परख लिया था
महगाई के साथ घटने वाली मेरी पूंजी
को निरख लिया था ।"[3]

इनके व्यंग्य बहुत ही स्पष्ट और सरल भाषा में व्यक्त हुए हैं । इनके अतिरिक्त इन्होने भारत-पाक आक्रमण के समय में कुछ राष्ट्रीय कविताएं भी लिखी है ।

आज की कविताओं मे प्रत्येक सामाजिक-असामाजिक बात का वर्णन निःसंकोच और बड़े ही चाव के साथ किया जा रहा है । डॉ॰ मदन केवलिया ने सुहागरात की तूफान से उपमा देकर कहा है कि सुहागरात भी तूफान की तरह गुजर जाती है । जैसे :—

"ज्यादा तर तूफान
जल्दी गुजर जाते हैं
और रह जाते हैं
खिंचे तुचे से
शामियाने और कनाते — तूफान की बातें ।"[4]

ऐसी कविताओं में भी डॉ॰ गणपति चन्द्र गुप्त हिन्दी के बड़े अभाव की पूर्ति मे

१— डॉ॰ मदन केवलिया की अस्पताल कविता से ।
२— " " " एक कविता से ।
३— " " " पृ॰ ५०
...—फरवरी १९६६

हरीश भादानी नये कवि के रूप में सामने आते हैं। इसमें कुछ नयी कविताएं है। इस संग्रह में कुछ गीत और कुछ मुक्तक भी हैं। इस संग्रह में कवि 'अधूरे गीत' की रचनाओं से बहुत अधिक दूर दृष्टिगोचर नहीं होता। कविता का शिल्प तो यहां अवश्य बदला हुआ है। पर कवि ने अपनी रोमान्स प्रवृत्ति को गीतों और मुक्तकों के माध्यम से व्यक्त किया है। इसमें कवि की सन् १९६१ तक की कविताएं हैं। इस संग्रह की कविताओं को देख कर ऐसा लगता है कि इस समय भी कवि पर प्रगतिवादी साहित्य की भावना हावी थी। यहां नवलेखन की मात्र सम्भावना दृष्टिगोचर होती है। अभिव्यक्ति अनेक स्थलों पर दुर्बल और सपाट है। परन्तु कुछ कविताएं ऐसी हैं जिनमें नवीनता के साथ अनुभूतियों की प्रखरता भी है। जैसे *'मेरी कविते', 'अंधेरा और किरण', 'अविश्वास की कूबड़', 'धूमा की धाम'*।

'हंसिनी याद की' हरीश भादानी का तीसरा संग्रह है जिसमें आदि से अंत तक मुक्तक ही है। इसमें कवि के सन् १९६१ तक के मुक्तक है। 'हंसनी याद की' में तीन तरह के मुक्तक हैं। कुछ तो राष्ट्रीय मुक्तक हैं। कुछ रोमेन्टिक मुक्तक हैं और कुछ आत्मपरक मुक्तक हैं। राष्ट्रीय मुक्तक भी दो तरह के हैं। एक तो वे जिनमें अपने देश का गौरव बताया गया है और दूसरे वे जिनमें अपने देश के गौरव की प्रतिष्ठा की गई है तथा साथ में दुश्मनों को ललकारा गया है। जैसे —

> दुश्मनों से कहो, हिमालय में केवल बरफ ही नहीं है,
> दुश्मनों से कहो दिल्ली में दोस्ती के हरफ ही नहीं है,
> चीनियो ! जंगे-आज़ादी की पोथी पढ़कर उतरना,
> हमारे लिये जिन्दगी-मौत में कोई फर्क ही नहीं है।"[1]

पर इसमें भी प्रधानता रोमान्स युक्त मुक्तकों की है। जिनमें संयोग और वियोग दोनों ही स्थितियों का चित्रण है। आत्मपरक मुक्तकों में जिनमें स्वानुभूत प्रेम और दर्द की अभिव्यक्ति हुई है।

> "प्यार अपना न मुझे दो, तो मेरा दर्द ही दे दो मुझको,
> अब जो किसी गैर की भूली सी अमानत ही सही।"[2]

१ भादानी	हंसिनी याद की	पृष्ठ ६६
२ "	"	" ३०

हुआ है । इस क्रमिक विकास द्वारा कवि आज की इस स्थिति पर पहुंचा है। यह बात भी ठीक है कोई भी व्यक्ति अचानक किसी मंजिल पर नही पहुंचता, उसके लिए उसे कई रास्ते पार करने पडते हैं।

"अधूरे गीत" कवि का प्रथम काव्य संग्रह है । प्रारम्भ में जिस प्रकार किसी कवि मे हल्की-फुल्की भावुकता होती है वह इनके इस संग्रह मे स्पष्ट रूप से झलकती है । इस संग्रह की अनेक कविताएं रोमांसयुक्त है । इनके अतिरिक्त "मेरा देश" "ऐशिया करवट बदल" आदि राष्ट्रीय कविताएं भी है। कवि को अपने चारो ओर सामाजिक असमानताएं दृष्टिगोचर होती है, उनका वर्णन कवि ने अपनी कविता मे किया है । शोषितो की दारुणिक स्थिति का चित्रण तथा शोषक समाज पर व्यग्य आदि कवि के काव्य मे उभरे हैं । "कफन की दुकान" "लेफ्टीनेन्ट चाहिए" आदि इसी प्रकार की कविताएं हैं । "सहजीव सीखलो", कवि की श्रेष्ठ व्यग्यात्मक कविता है जिसमे कवि पर भी व्यग्य मिलता है।

"बढ़ती है भुखमरी, गरीबी और पाखण्ड
पाप, अन्याय अगर बढ़ें तो बढ़ने दो ।
पर मेरा क्या उनसे नाता जो मर
मर भी जीते है, कई ठोकरें खाकर ।
तुम तो नेत्र मूद कर लिखो प्रीति,
के गीत कल्पना के सागर मे जाकर"[1]

व्यक्तिगत अभावों और पीड़ा का चित्रण भी कवि ने इस संग्रह मे किया है । यह बात कवि ने स्वयं स्वीकार की है । "अधूरे गीत" मे सामाजिक असमानताओं से उत्पन्न आवेश, व्यक्तिगत पीड़ा और अभाव अधिक उतावले होकर चले हैं ।[2] इस संग्रह के उत्तरार्द्ध मे कवि ने अपने प्यार का राग अलापा है ।

निष्कर्ष रूप मे यही कहा जा सकता है कि यह कवि का दूसरा संग्रह है । छायावादी प्रवृत्ति की झलक इन कविताओं मे स्पष्ट रूप से मिलती है । छायावादी विषय और उसकी ही कल्पना दोनों का आश्रय लिया गया है । पर प्रथम काव्य संग्रह होने के कारण कवि की इसमें सफलता कही जा सकती है।

हरीश भादानी का दूसरा काव्य संग्रह "सपन की गली" है । इसमें

१— हरीश भादानी अधूरे गीत पृ० १६
२— " " सपन की गली " ७

पाता ।

'हँसिनी याद की' हरीश भादानी का तीसरा संग्रह है जिसमें प्रायः सभी मुक्तक ही हैं। इसमें कवि के सन् १९६३ तक के मुक्तक हैं। 'हँसनी याद की' में तीन तरह के मुक्तक हैं। कुछ तो राष्ट्रीय मुक्तक हैं। कुछ रोमेन्टिक मुक्तक हैं और कुछ आत्मपरक मुक्तक हैं। राष्ट्रीय मुक्तक भी दो तरह के हैं। एक तो वे जिनमें अपने देश का गौरव बताया गया है और दूसरे वे जिनमें अपने देश के गौरव की प्रतिष्ठा की गई है तथा साथ में दुश्मनों को ललकारा गया है। जैसे —

दुश्मनो न कहो हिमालय में केवल बरफ ही नहीं है,
दुश्मनो से कहो दिल्ली में दोस्ती के हरफ ही नहीं है,
चीनियो ! जंग-आजादी की पोथी पढ़कर उतरना,
हमारे लिये जिन्दगी-मौत में कोई फर्क ही नहीं है।"[1]

पर इनमें भी प्रधानता रोमान्स युक्त मुक्तकों की है। जिनमें संयोग और वियोग दोनों ही स्थितियों का चित्रण है। आत्मपरक मुक्तकों में जिनमें स्वानुभूत प्रेम और दर्द की अभिव्यक्ति हुई है।

"प्यार अपना न मुझे दो, तो मेरा दर्द ही दे दो मुझको,
अब जो किसी गैर की भूली सी अमानत ही सही।"[2]

---

१. हरीश भादानी	हँसिनी याद की	पृष्ठ ६६
२. " "	"	" ३०

इनमें प्रतिशोध कुछ ऐसा मुखर होते भी है जो हृदयगत अधिक प्रभाव में है, पर कुछ का प्रभाव क्षणिक होता है।

"सुलगते पिण्ड" हरीश भादानी का चतुर्थ काव्य संग्रह है जिसमें सन् १९६१ से लेकर सन् ६६ तक की रचनाएं हैं। इसमें कवि का परिवर्तित रूप स्पष्ट रूप से सामने आता है। गीतकार रूप हरीश का यहां भी कुछ पीछे है। कवि ने कुंठा के प्रति बगावत की है तथा दीमक लगी मान्यताओं को झाड़ कर फेंकने का संकल्प लिया है। ऐसा लगता है कि कवि हरीश भावों की बाढ़ में बह गया है। इस संग्रह का मुख्य विषय भूख रहा है। उसने एक के बाद अनेक कविताएं इसी विषय वस्तु को लेकर लिखी हैं। "सुलगते पिण्ड" की ये कविताएं "एक जो चादर हमें दे दी गई है", नींद आ जाती बुरा होता, आज तक जितने जिये हैं, कुछ विश्वकर्माओं ने दी, ओ हमसे ही गर्भस्थ पिण्डो, ओ आदमी के सखा रे, आदि कविताएं विशेष रूप से पठनीय हैं। इनमें अनुभूति की गहराई के साथ-साथ अभिव्यक्ति की सहजता भी है। इस संग्रह में कवि ने नयी कविता की टेकनीक को समझा है इसलिए उसकी शिल्प में भी नवीनता है। शिल्प की दृष्टि से नवीन प्रयोग उसके उपमानों और लाक्षणिक प्रयोगों में देखे जा सकते हैं —

'मेरी यात्राओं का साक्षी
यह सजयी-सूरज।"[1]

× × ×

'कुमारे बाप सा भीरु अंधेरे"[2]

× × ×

'बूढ़े सूरज की सहचरी
नेवली सध्या ने पाये
कुछ अवैध सपने।"[3]

"सुलगते पिण्ड" की रचनाएं अवश्य कुछ बदली हुई हैं। कवि विषय, शिल्प, भाषा व शैली की दृष्टि से प्राचीन को पीछे छोड़ आया है, पर फिर भी उनके अतीत के संस्कार यहां वहां उनकी कविताओं में बिखरे पड़े हैं। कवि के

१. हरीश भादानी —एक उजली नजर की सुई पृष्ठ ११
२. " —" " " " १३
३. " —" " " " ४२

घर मे अनेक स्थलो पर अगरता आई है और कही वह साधारण रूप मे मिलता है। कवि के पास अनेक स्थलो पर कविता की रेशमी सवेदना होते हुए भी कथ्य का अभाव है। कुछ कविताए अस्पष्ट है और कथ्य को पकडने के लिए पाठक को प्रयास करना पडता है।

"सुलगते पिण्ड" और "एक उजली नजर की सुई" दोनो ही मई सन् १९६१ मे प्रकाशित हुए हैं। दोनो एक ही समय प्रकाशित संग्रह हैं। "एक उजली नजर की सुई" मे कुछ तो सन् १९६० से पहले के गीत है और बाकी सन् ६२ से बाद की कविताए और गीत है। ६० से पहले की रचनाओं के बारे में कवि ने 'एक उजली नजर की सुई" मे अपनी ओर से लिखा है "६० से पहले की रचनाएं वैयक्तिक पीडाओ की अभिव्यक्ति है।——सपने मे बने एक चेहरे की प्रतीक्षा है, प्रतीक्षा की निरन्तरता से उपजी वेदना है।" यहा पर भी कवि मुख्य रूप से गीतकार के रूप मे ही आया है। उनमे बहुत से नवीन उपमानो को ग्रहण किया गया है पर सग्रह मे उनके रूपक वास्तव मे ही कुछ बडे है। इस सग्रह मे कवि की अनुभूति की गहराई का आभास होता है, कही पर भी कवि की असमर्थता दृष्टिगोचर नही होती। 'अधूरे गीत" का कवि यहा तक पहुचते-पहुचते बहुत परिपक्व हो गया है।

कविताओ के साथ-साथ गीतो मे भी परिवर्तन हो गया है। इस सग्रह मे उनके कुछ नगर बोध से सम्बन्धित गीत है। प्रारम्भ मे जो एक रोमान्स इनके गीतो में रहता था वह प्राय यहा आते-आते पूर्ण रूप से समाप्त सा हो गया है। इनकी कविता और गीत दोनो मे ही साधारण जीवन का चित्रण हुआ है। इसके अतिरिक्त आज मानव मे जो एक अकेलेपन की भावना प्रबल होती जा रही है उसको भी कवि ने कविता और गीतो मे अभिव्यक्त किया है। "मैने नही", 'धागा धागा की ईंटो मे बाटो तो जानू", आदि हरीश भादानी के बहुत ही प्रसिद्ध गीत है।

वास्तव मे बीकानेर की काव्य चेतना मे हरीश भादानी का बहुत योग-दान रहा है। इन्होने "वातायन" पत्रिका प्रारम्भ करके तो इस कार्य को और अधिक आगे बढाया है जिससे बीकानेर के कवियो को भी एक सहारा मिलता रहा है।

गगाराम "पथिक"

गगाराम 'पथिक" की कविताओ के आधार पर यह कहा जा सकता

है कि कवि का मुख्य स्वर प्रगतिवादी है। पर कवि ने कुछ व्यंग्यात्मक कविताएं भी लिखी हैं। आज के नेताओं पर कवि ने बहुत ही करारे व्यंग्य किये है।

प्रजातन्त्र में सबसे अधिक मूल्य वोट का है। मत का महत्व है बुद्धि या विचारों का नहीं। अतः प्रत्येक नेता किसी न किसी प्रकार से अधिक से अधिक मत प्राप्त करना चाहता है जिससे वह किसी ऊंचे पद पर पहुंच सके। इसलिए आज के नेता अपनी जनता को झूठे आश्वासन देकर मत प्राप्त करते हैं। वे देश के अच्छे कार्यों के साथ अपना सम्बन्ध स्थापित करते हैं, जैसे :—

"हमने ही तो इस दिल्ली को,
राम राज्य का केन्द्र बनाया।
लोक राज के लाल किले पर,
सत्ता का सतरंज बिछाया।"[1]

ये नेता लोग वोट के लिये जनता को पहले से ही अपनी लम्बी लम्बी योजनाएं बता देते हैं। कवि ने अपनी कविता 'हम दिल्ली से बोल रहे हैं' में आज के नेताओं पर करारी चोट की है कि किस प्रकार से लोग झूठ बोल कर अपना स्वार्थ सिद्ध करना चाहते हैं। अब तक भी भारतवर्ष की बहुत सी जनता अनपढ़ है इसलिये हमारे नेता इस अनपढ़ जनता से लाभ उठाते हैं और इनसे अपना स्वार्थ सिद्ध करते रहते हैं। इस बात को कवि ने कहा है :—

"चौकस रह कर चोर बजारी करते रहते
भोली जनता को भरमाने
भ्रष्टाचार भगाओ के नारे लगवाते
अनपढ़ की आंखों पर पट्टी बांध।"[2]

पर कवि समाज के लूटने वालों को यह बताना चाहता है कि अब तुम्हारी दाल नहीं गलेगी और साथ में ही कवि उनको उनका कार्य भी बतलाता है —

"पथ सजा कर, सभा सजा कर
बरसा बातों का
गांधी जी की जय बोलो।"[3]

१— सेनानी —२६ दिसम्बर, १९५० पृ० ७
२— ,, —२५ फरवरी, १९५१ ,, ५
३— ,, ,, ,, ,, ५

कवि का मुख्य स्वर प्रगतिवादी है। किसी को कब्र पर महल बना कर आनन्द के साथ रहना कभी भी मानवीय कार्य नहीं कहला सकता है। पर आज के युग मे यह भी होने लगा है। जैसे :—

'घी के दीप जले, जीवन के दीप बुझा कर
अट्टहास कर रहे महल झोपड़ी जला कर
सब भूखे नंगे चिल्लायेंगे सड़को पर।[1]'

पथिक ने अपनी कविताओं मे श्रमिकों की दीन दशा का वर्णन किया है। साथ मे यह भी बताया है कि यह आजादी तब तक भारत मे व्यर्थ है जब तक यहां से गरीबी दूर नही की जाती। क्योंकि मनुष्य प्रत्येक काम से पहले अपने पेट की भूख को शान्त करना चाहता है। जैसे —

'आग लगाओ कागज की आजादी मे
भूखा है इंसान कि रोटी सपना है।'[2]

कवि ने अपनी कविता में आज के मानव का महत्त्व बताया है कि मनुष्य की कीमत आज पैसे से भी कम है। चारो ओर फैले हुए अत्याचार तो और भी अधिक खराब हैं जैसे —

"रोटी महगी, इंसान बहुत ही सस्त है।'[3]

"पथिक" की बहुत ही कम कविताएं प्राप्त हो सकी है। कवि समसामयिक बीकानेरी काव्य प्रवृत्तियो के अनुकूल स्वयं को ढालता रहा है। कवि ने जो कुछ भी कहा है उसे बहुत ही सरल शब्दो म कह दिया है। भाषा और भाव दोनो मे ही किसी प्रकार की क्लिष्टता नहीं है।

मंगल सक्सेना—

मंगल सक्सेना का प्रथम काव्य संग्रह "मैं तुम्हारा स्वर" सन १९६४ मे प्रकाशित हुआ। इस संग्रह मे गीत और कविताए है। जहां तक संग्रह के गीतों का प्रश्न है उनमें कवि के राष्ट्रीय, लौकिक प्रेम और प्रकृति सम्बन्धी गीत हैं। यद्यपि कवि ने राष्ट्रीय गीत कम लिखे है, पर जो लिखे हैं उनमे पूर्ण राष्ट्रीय गौरव झलकता है।

१— लोकमत —३० अक्तूबर, १९५१ पृ० ३
२— गंगाराम पथिक 'कागज की आजादी' कविता से
३— ,, ,, 'हीरों के बाजार' कविता से

[illegible]

सफाहत हो सभी जाए, अमन को कौन हरता है

बहुत अच्छा हो इसमें भी कि अपना न बने कोई

बिछुड़ना तो सभी मिलने बिछुड़ कर कौन मिलता है ।"[2]

कवि ने अपने भावों को बहुत ही सरल भाषा में और सीधे ढंग से व्यक्त किये हैं।

मानिकचन्द रामपुरिया

आज यदि इस संकट के युग में कोई वैभवशाली की बात करे तो उससे अधिक हंसी की बात और क्या हो सकती है। समय और वातावरण के अनुसार जो मनुष्य अपने आप को नहीं ढाल सकता वह कभी भी उन्नति नहीं कर सकता। मानिक चन्द रामपुरिया की कविताओं के साथ भी कुछ ऐसी ही बातें हैं। कवि समय से बहुत पीछे है। पर कवि ने लिखा बहुत कुछ है। कवि का प्रथम काव्य संग्रह "मधुज्वाल" सन १९५९ में प्रकाशित हुआ। उसके बाद निरन्तर 'स्वरालोक'', "आभास" कल्लोल" 'सवेग'' और सदीप्ति प्रकाशित हुए। काव्य संग्रहों की संख्या की दृष्टि से बीकानेर के काव्य में इनका दूसरा स्थान हो सकता है।

आज इस भौतिकवादी युग में मानव एक तरफ अपने लिए स्वर्ग के साधनों का निर्माण कर रहा है और दूसरी ओर अपने विनाश का। इस बात को कवि ने समझा है। 'मधुज्वाल' की कुछ एक कविताए इसी स्थिति को लेकर

१— मदन सक्सेना —मैं तुम्हारा स्वर पृ० २२ (तृतीय खंड)

२— ,, ,, ,, ३२ (,,)

लगी है। जैसे "विश्वप्रेम", 'रोटीभाजी' आदि।

> 'डग रहे इस भूमि को सब
> यह मनुजता रो रही है
> आज का विष-बीज कोई
> डालि भू पर जा रहा है।"[1]

इस संग्रह में कुछ तक कविताएं उपदेशात्मक और प्रकृति चित्रण की हैं। 'संदेश' 'प्यार' भावना की लौ जगाओ आदि।

'स्वरालोक' में छायावाद की सर्वात्मवादी दृष्टि के अनुरूप कवि ने प्रकृति का साक्षात्कार व्यापक प्राकृतिक व्यापारों में भी किया है :—

> "जागी ऊषा किरणों ने देखा मधुबन के ससार को
> बजा गया कोई अनजाने प्राण-प्राण के तार को।"[2]

कवि का प्रकृति मोह बहुत अधिक है। इसलिए इस संग्रह की बहुत सी कविता में प्रकृति पृष्ठभूमि, उद्दीपन और उपमान आदि विविध रूपों में उपस्थित है। प्रकृति नाना रूपों में भाव सहचरण करती है। कहीं असफल प्रेम की पीड़ा, स्मृ दश, टूटे सपने तथा निष्ठुर प्यार की गाथा है। कवि याद में तड़पता है :—

> "मन को और अभी रोने दो
> घाव जरा गहरा होने दो।"[3]

कुछ कविताएं मनुहार, उपालम्भ और अनुरोध सम्बन्धी हैं। इनमें कहीं पर उलझाव आदि नहीं है, पर कुछ कविताएं समय से बहुत पीछे हैं। छन्द-बन्धन कवि ने परम्परा का मोह नहीं छोड़ा है। कवि ने भाषा का व्यवहार-सिद्ध रूप ग्रहण किया है, जिसमें उर्दू के प्रचलित शब्द भी आ गये हैं।

आज मनुष्य को चारों ओर से संघर्ष करना पड़ रहा है। ऐसा लग है कि जीने के लिए मानो संघर्ष आवश्यक है। आज एक तरफ मस्तिष्क दुक रहा है और दूसरी ओर हृदय की आवाज गूंज रही है। प्रेम, श्रद्धा आदि मनु को ऊपर उठाना चाहते हैं, पर मनुष्य केवल मस्तिष्क की ही बात सुनता है मस्तिष्क और हृदय की दौड़ में हृदय पीछे रह गया है। इन्हीं बातों को कवि

१— माणकचन्द रामपुरिया -स्वरालोक पृ० ३१
२— ,, ,, -स्वरालोक ,, २२
३— माणकचन्द रामपुरिया -मधुज्वाल पृ० ४१

अपने संग्रह 'आभास' में प्रस्तुत किया है। आभास में कवि की एक लम्बी कविता है। आज मानव ने प्रकृति पर पूर्ण विजय प्राप्त करली है।

"खड़ी प्रकृति मानव के सम्मुख
खोने भेद भरा नित अन्तर।"[1]

कवि को मानव की बुद्धि से भय है :—

"सदा बुद्धि के इंगित पर नर
चलने वाला गिरा, सम्भालो।"[2]

कवि का इस कविता में मस्तिष्क पर हृदय की जीत कराने का उद्देश्य स्पष्ट झलक रहा है। इस संग्रह में कवि ने बहुत ही सरल भाषा में भावों को प्रकट किया है।

'कल्लोल' में कवि ने फिर पहले जैसे ही विषयों पर कविता लिखी है। शायद पहले कवि को पूर्ण सन्तोष नहीं हुआ होगा। पर कुछ भी हो कवि प्राचीनता का मोह नहीं छोड़ सका है। प्रभात को नये रूप में प्रस्तुत करता है। सूर्योदय से सबको प्रसन्नता होती है पर कवि कहता है —

"यह ऊषा मुस्कान आई बन दृगों में रात काली —
जब चले प्रिय दूर जाली
प्रात कितना क्रूर आली।"[3]

इस संग्रह में एक कविता तुलसीदास के जीवन पर है। कवि ने इस संग्रह में प्रेम प्रकृति आदि कुछ बातों का वर्णन कर अपने संग्रह को पूर्ण किया है।

आज इस भौतिकवादी युग में ईश्वर पर बहुत कम विश्वास किया जाता है, पर कवि इस बात को स्वीकार नहीं करता है। उसके अनुसार मानव आज किसी न किसी रूप में उस एक शक्ति से अपने भाग्य को निर्भर मानता है। इन भावों को व्यक्त करने वाली कविताएं कवि ने 'संदेश' में संकलन की है। प्रकृति प्रेम तो यहां भी साथ में बना हुआ है।

कवि ने अपने शब्दों में उनका संक्षिप्त प्रकार शब्दों में मुद्रित आत्म-

---

१— माणकचन्द रामपुरिया — आभास ,, ३८
२— ,, ,, — ,, ,, ४३
३— ,, ,, — कल्लोल पृ० १०

निष्ट भावनाओं का संग्रह है।"[1] कवि ने इसमें झरनों का गान, संध्या की मनो
छटा, तारों का टिमटिमाना आदि का वर्णन किया है। जिस प्रकार से प्र
के व्यापार चलते हैं उसी प्रकार के भाव मानव हृदय में पैदा हो जाते हैं। ह
भावों का वर्णन कवि ने इस संग्रह में किया है। कवि इस संसार की नश्वरता के बारे में वर्णन करता है।

"कुछ भी नित्य नहीं है जग में–
सदा काल की ही बस जय है।
अन्त सभी कुछ का निश्चय है॥"[2]

निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि कवि में किसी प्रकार का
विकास नहीं है। समय बहुत आगे चला जा रहा है और कवि को उसी छाया
वादी युग से सन्तोष है। कवि अपनी छन्द रचना में बहुत ही सफल है।
बद्धता को कवि कहीं पर भी नहीं भूलता चाहे वह कविता कैसी भी क्यों न हो
जब आवागमन के कोई साधन न थे उस समय तो अवश्य ही बैलगाड़ी का ब
महत्व था पर इस युग में नहीं। ठीक यही स्थिति माणकचन्द रामपुरिया
कविताओं की है। कवि ने समय के साथ चलने का प्रयास नहीं किया है।
की भाषा सर्वत्र भावानुकूल है।

योगेन्द्र किसलय

बीकानेर से प्रकाशित 'संवेदन इति' के छः कवियों में से एक योगे
'किसलय' है। इस संग्रह की कविताओं के अतिरिक्त भी इन्होंने बहुत सी कवि
ताएं लिखी हैं। कवि का व्यंग्य बहुत तीखा है। कवि अति साधारण शैली
बहुत ही तीखी बात कह जाता है। इनकी कविता की उपलब्धि भाषा और
में न होकर मर्म की गहराई में रहती है। इनकी छोटी कविताएं आकार में
होने के उपरान्त भी बहुत ही तीखा व्यंग्य प्रस्तुत करती हैं। इनकी कविता
समकालीन संदर्भों के समानान्तर चलती है।

व्यंग्य के क्षेत्र में तो कवि ने बीकानेर के काव्य में चार चांद ही लगा
दिये हैं। इनकी कविताओं में व्यंग्य बहुत ही तीखा और गम्भीर है। जैसे :—

१— माणकचन्द रामपुरिया — अशीति के भारतेन्दु म

२— " " " " २४

"लोग आजकल पैर दबाने वाली बीवियों को नहीं
रो फेंकने वाली लड़कियों को पसन्द करते हैं — ... —

+ + +

लोग सारा सीमेंट खा गए हैं
घरे हमारे ढह गयी है, लोग बहुत कुछ खा गए हैं ।"[1]

इस प्रकार इन्होंने आजकल के नेताओं पर बहुत ही करारे व्यंग्य प्रस्तुत किये हैं ।

अनास्थावादी स्वर इनकी बहुत सी कविताओं में है । सैक्स भावना, कुण्ठा और अनास्था का स्वर अधिक है, पर कवि का मूल स्वर तो इनको समाप्त करने का है । इनकी 'अभिशप्त' अनास्थावादी कविता है जिसमें आस्था का स्वर भी है । इनकी कुछ कविताओं में आक्रोश का स्वर भी है । रोमानियत कवि को बहुत अधिक घेरे हुए है जो इनकी कविताओं में स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है ।

'विसलय' के कुछ मुक्तक चमत्कार युक्त है, पर कुछ ऐसे हैं जो एक प्रभाव भी पाठक पर छोड़ते है जैसे —

'कोई मुझसे ले जाम दुःख के पिया जाता है
कोसी यादों का जहर भी तो पिया जाता है
ये इतना आसान नहीं जितना तुम सुनते हो
करके दिल साफ कहीं तक गीत लिखा जाता है ।"[2]

कवि अपने काव्य में अनुभूति पक्ष को अधिक महत्व देता है और उसकी सम्प्रेषणीयता का ध्यान भी कवि को सदैव रहता है । इसके अतिरिक्त इनके कुछ मुक्तक उर्दू शैली के काफी समीप है ।

एक विशेष बात तो इनकी कविताओं में पायी जाती है वह यह कि इनकी कविताएं संवेदना से परिपूर्ण होती है जबकि आज की कविता में सम्वेदना का अभाव दृष्टिगोचर होता है । इनकी कविताओं के प्रतीक अति नवीन होते हैं । आधुनिक रहन सहन को इन्होंने बहुत ही समीप से देखा है और इस दृष्टि से इनकी कविताएं उन्हीं सन्दर्भों में पाठक के सामने आती है । इनकी कुछ कविताओं का मध्य भाग कमजोर है ।

१— योगेन्द्र किसलय की एक कविता से
१— योगेन्द्र किसलय का एक मुक्तक

गौरी शंकर 'अरुण'

बीकानेर से प्रकाशित "संवेदन दृति" बीकानेर के छः कवियों की
कविताओं का संग्रह है । उन्हीं छः कवियों में से गौरी शंकर 'अरुण' है । पर
हमें जिस रूप में 'संवेदन दृति' में नजर आया है वह तो कवि का आज का रू
कवि का रचना काल तो इससे पहले ही प्रारम्भ होता है । अतः इन कवि
को देखने से पहले हमें कवि की प्रारम्भिक रचनाओं का विश्लेषण भी क
उचित होगा । अरुण की प्रारम्भिक कविताओं में केवल काव्य रचना का प्र
मात्र लगता है । विषय पुराने हैं, शिल्प भी प्राचीन है । कुछ गीत अवश्
सुन्दर है जिनमें आधुनिक समस्याओं को उठाया गया है । इन कविताओं में क
कहीं कवि का प्रगतिवादी स्वर भी उभरा है, पर फिर भी छायावाद से पूर्ण मु
नहीं हो सका है ।

कवि ने पाक आक्रमण के समय कुछ राष्ट्रीय कविताएं भी लिखी
कवि ने अपनी 'चेतावनी' कविता में शत्रु को चेतवानी दी है और उसे भारत
की वीरता की याद दिलाई है ।

'अगर नहीं विश्वास, खोल इतिहास, देखले'
हर पत्थर हमसे टकराकर, गल जाता है ।
जो भी कांटा चुभा हमारे, खाक हो गया,
आकर हर तूफान यहां पर ढल आता है ।"[1]

"संवेदन दृति" में कवि ने पुराना चोगा छोड़ा है और नवीन धा
किया है । इस संग्रह की भी अधिकतर कविताएं फैशननुमा है । कुछ इधर-उ
के मुहावरे और शब्दों को इकट्ठा करके कविताएं लिख डाली है । अधिकतर
शब्दों का प्रयोग किया गया है । इन कविताओं से पाठक को सुखद या
अनुभूति कम होती है और न ही प्रखरता पाठक को आलोडित कर पाती है ।

इतना सब कुछ होने पर भी कवि ने समय के महत्व को समझा है
समय के साथ चलने का प्रयास किया है । कवि ने नयलेखन में प्रयास किया
इसके अतिरिक्त "कृतघनता," 'अपरिपक्वता" आदि अच्छी कविताएं है जि
नवीन अभिव्यक्ति है । इस संग्रह के अतिरिक्त अरुण की कविताएं पत्र-
पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहती है । कवि की भाषा भावनुकूल एवं सरल है

प्रकाश परिमल

"संवेदन दृति" काव्य संग्रह में छः कवियों में प्रकाश परिमल भी एक है

१. म० संहिता—विजय हमारी है पृष्ठ ३६

न कविताओं के अतिरिक्त भी कवि की कविताएं पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहती है । इनकी कविताओं में बौद्धिकता का प्राचुर्य है । विचारों में उलझन होने से वह जो कुछ अभिव्यक्त करना चाहता है वह भी कभी कभी नहीं कर पाता । इस स्थिति में पाठक के द्वारा उन कविताओं को समझना और अधिक कठिन हो जाता है । कविताओं में सम्प्रेषण तत्व का अभाव है । इनकी कविताओं में कहीं-कहीं इतर सदर्भ भी आ जाते हैं, इसका कारण यह है कि जब यह अनुभूति क्षेत्र में होता है उसी समय वह विश्लेषण भी आरम्भ कर देता है । इसी कारण उसकी अनुभूति जटिल हो जाती है । यह कवि सम्पूर्ण व्यवस्था को अपने विरुद्ध समझता है । कवि में कहीं भी खोखला आदर्शवाद नहीं है । जीवन का यथार्थ चित्रण कवि ने अपनी कविताओं में किया है । कवि ने एक कविता में जीवन और मृत्यु दोनों को बहुत ही सुन्दर ढग से प्रस्तुत किया है :—

'जन्म को
भविष्य के सपनो में सजा दिया गया है
—व्यर्थ
और मृत्यु
भूत की उपलब्धियों में गाड़ दी गई है ।'[1]

कवि को वर्तमान के प्रति बहुत मोह है । वह इसी क्षण के आनन्द को ही सब कुछ समझता है —

'मैं क्षणों को
जो किसी कालक्रमिक सन्दर्भ में [illegible] है
अपनी इकाई में ही
भोगने में सुरक्षा महसूस करता हूँ ।'[2]

प्रकाश बाथम की कविताओं में दर्शन [illegible] है । इसका कारण कवि का [illegible] है । पर वह अपने दर्शन को [illegible] उलझन प्रस्तुत करता रहता है ।

[illegible]

[illegible] 'सरहदें' ने बहुत [illegible]

---

१ [illegible] पृष्ठ ३०
२ [illegible] पृष्ठ ३०

इन कविताओं का एक संग्रह 'सरहद' प्रकाशित हुआ है। इसमें कुछ तो प्रकृति सम्बन्धी कविताएं हैं, जैसे 'बरसे' दर मौसम' 'भादवो सावण री' 'चिड़, चिड़ [illegible]' आदि, कुछ राष्ट्रीय कविताएं हैं जैसे 'सरहद' 'पहाड़ों का [illegible]', 'आवाज', 'आह्वान', वतन के वास्ते' आदि। शेष शृंगारिक कविताएं हैं, प्रकृति सम्बन्धी कविताएं [illegible] छंदों में लिखी गई हैं। कवि की राष्ट्रीय कविताओं में जनता को जगा देने की शक्ति विद्यमान है। चीन के आक्रमण के समय लिखी कविताओं में भाव की बहुत सशक्तता है और इनमें देश के सिपाहियों का उत्साह बढ़ाया है। पर इस संग्रह में राष्ट्रीय कविताएं अधिक नहीं हैं। शृंगारिक कविताओं में संयोग और वियोग दोनों प्रकार की [illegible] गए हैं। ऐसी कविताओं में बहुत से स्थलों पर भावों की पुनरावृत्ति हुई है। कवि की ये कविताएं सामान्य सी कोटि की हैं। इनमें किसी भी प्रकार की नवीनता नहीं है। कवि पर उर्दू का बहुत अधिक प्रभाव है। इसी कारण इन कविताओं में भी उर्दू जैसा ही शाब्दिक प्रभाव दृष्टिगोचर होता है।

पर कवि की कुछ कविताएं ऐसी हैं जिनके आधार पर यह कहा जा सकता है कि कवि ने बीकानेर के कवियों के स्वर में स्वर मिलाने का प्रयत्न किया है। जैसे उनकी 'नया मोड़' 'प्रश्न चिन्ह' आदि। इन कविताओं के अतिरिक्त कवि की जो राष्ट्रीय भावना की कविताएं हैं वे वास्तव में ही सशक्त कविताएं हैं। इन कविताओं में अधिकतर तो चीन के आक्रमण के समय में लिखी हुई हैं। चीन के आक्रमण के समय जिस प्रकार की राष्ट्रीयता की आवश्यकता थी कवि ने उस राष्ट्रीय भावना को समझा है और जनता में देश प्रेम की भावना को जगाने का प्रयत्न किया है। राष्ट्रीय कविताओं में कुछ तो ऐसी हैं जिनमें भारतवर्ष का गौरव बताया गया है। जैसे :—

> "बहुत पुराना है इतिहास यहां का
> मंदिर, मसजिद, गुरुद्वारे बतलाते,
> सभी एक हैं भारत के हम वासी
> अनुपम सब का देश सभी से न्यारा
> \+ + +
> मानवता का पाठ पढ़ाया जग को
> स्वयम् देवताओं ने जिसे संवारा।"[1]

इसके साथ ही कवि भारत के वीरों को भी नहीं भूला है:-

१— श्रीम केदारिया 'सरहद' —सबनम पृ० ६५

इस धरती के कण-कण मे
उन वीरो की
सुनते है आवाजे
अपना सब कुछ लुटा दिया था
और खेल गये थे प्राणो पर

× × ×

भगतसिंह, शेखर आजाद
राजगुरु, बिस्मिल की
अमर आत्मा राह दिखाती हमको ।"[1]

कीय कविताओ मे कुछ ऐसी है जिनमे शत्रुओ को ललकारा है —

'चट्टानो से टकराए हो
हमे नही पहचाना तुमने
सुनलो कान खोलकर !

+ × ×

गद्दारो को जिन्दा ही हम
अन्तिम नीद सुला देते है ।"[2]

+ + +

सुन लो
संसार सुनेगा विस्फोटो को
रोक नही तुम पाओगे फिर
बढते हुए जवानो को ।"[3]

ने ऐसी कविताओ मे बहुत ही सरल भाषा का प्रयोग किया है ।

मनरेश सोनी

रामनरेश सोनी ने बीकानेर के हिन्दी काव्य मे सन् १९६० मे पदार्पण या है । इन्होने कविता, गीत और मुक्तक लिखे है । इनके गीत और कविताओ

— मोम केवलिया 'सरहदी' —शबनम पृ० ८०
— ,, ,, ,, ,, ,, ६८
— ,, ,, ,, ,, ,, ८१

को देखकर यह कहा जा सकता है कि कवि विषय चयन में तो समय के साथ है, पर शैली प्राचीन है। कवि की प्रारम्भिक रचनाओं पर छायावाद का पूरा प्रभा है। इनके बाद के गीतों पर नीरजवादी प्रभाव स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है।

कवि ने अधिकतर वीर रस की कविताएं लिखी है जैसे:—

"जग को बतला ही दिया कि पौरुष के आगे
विपदाओं की, बाधाओं की औकात नहीं
जो सदा ध्वंस पर एड़ मारते चलते हैं
वे दुविधाओं से खायेंगे क्या मात कहीं।"[1]

इसी प्रकार कवि ने श्रम को लेकर कविता लिखी है। इसमें कवि श्रम का महत्व बताता है। कवि ने एक युद्ध को लेकर कविता लिखी है जो 'प्रस्तुति' में प्रकाशित भी हुई है। इसमें कवि ने युद्ध के आतंक को बताते हुए यह प्रस्तुत करने की कोशिश की है कि मानव चैन से श्वास तभी ले सकता है जब युद्ध का भय बिल्कुल न रहेगा।

"तब ही संसार सुखों के सपने देखेगा
तब ही सपने साकार स्वयं हो जायेंगे।"[2]

इसके अतिरिक्त कवि ने कुछ राष्ट्रीय और प्रकृति सम्बन्धी कविताएं भी लिखी है। 'अचल गढ़ की एक रात' कवि की एक लम्बी वीर रस प्रधान कविता है। जिसके प्रारम्भ में प्रकृति का विस्तृत चित्रण हुआ है। प्रकृति यहां अधिकतर मानवीकरण की शैली में चित्रित किया गया है।

"सो गई धरती गगन की बांह में
सो गई कलिका शिथिल पत्राक में
सो गई सरिता कगारों से कभी
सो गई लतिका वधी तरु अंग में।"[3]

कविताओं की अपेक्षा कवि गीतों में अधिक सफल नजर आता है। की कविताओं में वीर रस की प्रधानता है, पर इनके गीतों के विषय भिन्न हैं। आज मानव को धन कितना प्रिय हो गया है। इसको कवि ने अपने एक गीत

१— रामनरेश सोनी —'मिट्टी के कण' कविता से
२— सं० ज्ञान भारिल्ल, प्रेम सक्सेना —'प्रस्तुति' पृ० २५
३— रामनरेश सोनी —'अचलगढ़ की एक रात' कविता से।

बहुत ही सुन्दर ढंग से प्रस्तुत किया है :—

'बहने बिक जाती है यहां पर रुपयों की झनकार पर
+ + ×
बदल गई है नियम जमाने की माया के नाम पर[1]

इनके गीतों में रोमांस भी मिलता है । प्रसाद की तरह यह कवि भी सौन्दर्य व प्रेम के गीत गाता है ।

"तुम उमड़ो रहो घटा बन कर मेरे नभ पर
मैं गीत प्यार का जनम जनम तक गाऊंगा
× × ×
तुम बिखरा दो घनकेश जरा मेरे मुख पर
मैं हिमगिरि बन रस धार स्वयं बरसाऊंगा ।"[2]

समग्र मे कवि बहुत पीछे है । कविता और गीत दोनों में कवि छायावाद से बहुत प्रभावित है ।

कवि ने कुछ मुक्तक शीर्षक से भी कविताएं लिखी हैं । आज इस वैज्ञानिक युग में यन्त्रों का मूल्य अधिक [redacted] और मनुष्य को उसकी जाति का मनुष्य ही नहीं पहचानता । क्योंकि आज इस युग में मनुष्य की कोई कविता भी नहीं रही है । इसी से सम्बन्धित इनका एक मुक्तक है —

क्या कहूं, मुस्कान मुश्किल हो गई
है सभी इन्सान, पर इन्सान को
इन्सान की पहचान मुश्किल हो गई ।"[3]

कवि ने गीत और कविता दोनों ही लिखे हैं । पर कवि नये शिल्प की चकाचौंध में नहीं पड़ना चाहता । कवि की सभी कविताएं छन्द बद्ध हैं । जिस प्रकार की कविताएं ये लिख रहे हैं उस प्रकार की कविताएं बीकानेर में बहुत पहले लिखी जा चुकी थी । इन कविताओं का उस समय में तो बहुत आदर हो सकता था, पर आज इतना नहीं । पर इतना होते हुए भी कवि की कुछ

१— ,, ,, –एक गीत से
२— ,, ,, ,,
३— रामनरेश सोनी एक मुक्तक कविता

कविताओं के विषय अवश्य ही अपने समय के हैं।

सरल

बीकानेर की नयी पीढ़ी के कवियों में 'सरल' का भी अपना स्थान है। सरल ने कविताएं व गीत दोनों ही लिखे हैं। गीत बहुत कम लिखे हैं। इसके सभी गीत नगर बोध के हैं और वे भी बहुत साधारण जीवन को लेकर लिखे गये हैं'—

> भोर जगी
> घर घर चूल्हे हीटर में
> होड़ लगी।"[1]

सरल की कविताओं के पढ़ने से स्पष्ट होता है कि कवि का स्वर आशावादी है। वह कहीं निराशा के चक्कर में नहीं है। आज इस भौतिकवादी युग में मानव एकाकी होता जा रहा है और उसे अपने पथ में हमराही की कमी का अनुभव होता है। इस बात को कवि ने समझा है और उसे अपनी कविता में अभिव्यक्ति दी है'—

> "कोई भी
> हमराही नहीं जो
> एक तिनका फेंक दे
> सुबह की प्रतीक्षा तक।"[2]

कवि की कुछ एक कविताओं में व्यंग्य भी काफी अच्छा उभरा है।

आज इस युग में औपचारिकता का महत्व बढ़ता जा रहा है। मानव अपना अधिकतर समय इस औपचारिकता में ही नष्ट कर डालता है, पर इस औपचारिकता से किसी का भी काम सफल होना सम्भव नहीं है। इसलिए कवि ने इस औपचारिकता को नकारा है :—

> "क्या होगा मेरे दोस्तो
> मेरी कविता सुनने से
> तालियां बजाने से
> झण्डा लहराने से
> वंदे मातरम गाने से।"[3]

१— वातायन अप्रेल १९६५ पृ० ५०

२— " सितम्बर, १९६६ " २७

३— सरल 'क्या होगा' —? कविता से

कवि इससे यह भी संकेत करना चाहता है कि यदि ऐसा करने से कुछ होता तो पिछले बीस वर्षों में कुछ हो जाता, पर ऐसा न होकर कुछ और ही हुआ है:—

"दिनों दिन भूख और बदनीयति के
दास होते जा रहे हैं।"[1]

इतना ही नहीं कवि आज की वास्तविक व्यवस्था को बताना चाहता है और जिसे बहुत कम लोग जानते हैं:

"रातों रात बहियाँ बदल दी जायेंगी
फाइलें गुम हो जायेंगी
और हर हुकाम की निजी कोठी, कार
और सोहरत बढ़ जायेगी।"[2]

कवि आज की इस वर्तमान व्यवस्था में परिवर्तन के लिये प्रयत्नशील है। इसलिये वह उसमें परिवर्तन करना चाहता है और इसलिये एक हलचल पैदा करना चाहता है:—

"एक पत्थर और फेंका
सोचकर
हलचल मचेगी
लहरें उठेंगी।"[3]

पर ऐसा हुआ नहीं और कवि का सारा प्रयत्न निष्फल हो गया।

"किन्तु
उछला नहीं
बिखरा नहीं
ताल का थर-थर
प्रभाहीन दर्पण सा
चुपचाप देखता रहा
मुझे
जैसे मैंने कुछ किया ही नहीं
जैसे कुछ हुआ ही नहीं।"[4]

---

१. सरल — क्या होगा ......? [illegible]
२. " — " " [illegible]
३. " — लाल [redacted] [illegible]
४. सरल — " "

पर और इनका विकास नहीं होता है। वह भावना यह प्रगट करती रहती है।

कवि ने अपनी प्रत्येक बात को सरल शब्दों में कहा है और कहीं पर भी कविता बोझिलता के भार से नहीं दबी है।

रामपद 'भावुक'

रामपद "भावुक" बीकानेर के प्रगतिवादी कवि हैं। आपकी प्रत्येक कविता में प्रगतिवादी स्वर मुखर हुआ सा रहता है। कवि 'भावुक' समाज की व्यवस्था के विरुद्ध आवाज उठाता है और उसको बदलने के प्रयत्न में है। पर वह आवाज उनकी शान्ति के साथ नहीं निकलती, अपितु बड़े ही गर्जन-तर्जन के साथ मुखरित होती है। जब वे कवि सम्मेलनों में कविता पढ़ते हैं तो ऐसा लगता है कि शायद वे अभी इन सब परिस्थितियों को बदल देंगे। कवि कहीं पर भी दबी जबान से कुछ नहीं कहता है, जो कुछ कहता है स्पष्ट और सशक्त शब्दों के साथ अपने विचारों को पूर्ण विश्वास के साथ व्यक्त करता जाता है:—

"मैं कवि आवाज देता हूँ, तुम्हें विश्वास से"!

कवि ने कुछ राष्ट्रीय भावना की कविताएं लिखी हैं। उनमें देश की रक्षा सिर हथेली पर लेकर अपने आन-मान की रक्षा करता हुआ करता है और यही बात यह अपने देश वासियों से कहता है। ऐसी स्थिति में कवि के सामने मौत भी नहीं ठहर सकती:—

'मौत होगी सामने, सर ले हथेली पर निकलना
मौत खुद देखेगी तेरे, क्रोध का तूफ़ान कर मचलना।'[1]

कवि इस बात को स्पष्ट कर देता है कि जब सब देश वासी ऐसी प्रतिज्ञा कर लेंगे तो किसी भी शत्रु का सामना बड़ी सरलता के साथ किया जा सकता है और ऐसा करने पर शत्रु का ठहरना असम्भव है:—

"सुन के कह दो खा कसम अब, भारती के भाल की।
इस मेरे प्यारे वतन में गर किसी ने चाल की।
तो समझलो, हम उसी का नाम तक छोड़ें नहीं
जिन्दगी का एक क्षण भी, चैन से तोड़ें नहीं।"[2]

कवि ने आज की इस प्रजातान्त्रिक व्यवस्था पर भी बहुत करारी चोट की है। इसके लिए कवि ने शतरंज का रूपक बांधा है और शतरंज की गोटियों के उपमान द्वारा अपनी बात को स्पष्ट करने में सफल हुआ है। इनकी 'शतरंजी

---

१. सम्पादित-संहिता —"विजय हमारी है" पृष्ठ २२
२ " — " " " " २२

मोहरे' कविता में व्यंग्य और हास्य का साथ-साथ निर्वाह हुआ है :—

"जनमतों के वज़ीर तो
    लकड़ी के मोहरे
    में हो गये हैं।
और ये
    प्रजातान्त्रिक घोड़े
दो मही एक बटा दो के मालिक —
    अपने चोकोने में
घुड़ चोरिया लगाकर
    हाथियों से हाथी
भटा कर भी
    निर्णायक मात की
        स्थिति नही।"[1]

यद्यपि लालचन्द भावुक ने बहुत अधिक कविताए नही लिखी है, पर जितनी लिखी है उन सब मे प्रगतिवादी स्वर ही प्रमुख है। इन कविताओ की भाषा बहुत सरल और स्पष्ट है। कही पर भी किसी प्रकार की क्लिष्टता नही है।

नंद किशोर आचार्य

आज इस भौतिक युग मे औपचारिकता ने मानव जीवन को चारो ओर से जकड़ लिया है। इस औपचारिकता के कारण कभी-कभी मनुष्य एक दूसरे का सही मूल्यांकन नहीं कर सकता। नंद किशोर आचार्य की कविताए इस आधुनिक सामाजिक परिवेश को स्वीकार करके लिखी गई है। इनकी कवितायें आधुनिक समाज पर तीखा व्यंग्य है। आज हम पुरानी सामाजिक मान्यताओ को स्वीकार कर रहे है जिनमे बदबू आ रही है, जिनसे घुटन होती है, परन्तु फिर भी उनमे जी रहे है जैसे :—

"जिसकी खोली बदबू मे
सांस भी तो नहीं लिया जाता
पल भर

1— सप्ताहांत — 18 अगस्त 1968 मे

और इस घुटन में
सबूत देते है हम
अपने लिए जीने का।"[1]

वास्तव मे यह जीवन कोई जीवन नही है। आज जीवन के आधारभूत मूल्यों को इतना महत्व नही दिया जाता जितना कि जीवन के छिछलेपन को। यह बात कवि की दृष्टि से बची नही है। आज हम फिल्मी रोमान्स पसन्द करते है। किसी लडकी का मुस्करा कर बोलना, भीड मे किसी लडकी से शरीर स्पर्श करना और रोमानी उपन्यास आदि हमारे लिए आनन्द का विषय बन जाते हैं।

हमारा रोमांस
सिनेमा हाल और सस्ते रोमानी उपन्यासो तक ही।
+ + +
पडोस की किसी लडकी
या दफ्तर की लेडी टाइपिस्ट का
मुस्कुरा कर बात कर लेना
और भीड मे
किसी औरत के शरीर स्पर्श
कोई सनसनीखेज खबर पढने जैसा ही है।"[2]

कवि को सामाजिक जीवन से घुटन है पर उसका स्वर आशावादी है। इसलिए वह इसका सामना करना चाहता है। सफलता और असफलता की उसे कोई चिन्ता नही है। कवि को आधुनिकता में सच्चाई कम दृष्टिगोचर होती है-

"चौदह कैरेट सोने का
रूप रहता है
हमारी आधुनिकता।"[3]

कितनी मिलावट है आधुनिकता मे। इस प्रकार कवि समाज के प्रत्येक पहलू का ध्यान करता है। पर यह कवि जीवन की निराश दृष्टि को लेकर नही चलता है।

१— [illegible] पृ० ६२
२— नन्दकिशोर आचार्य —[illegible] ,, ३१
३— ,, ,, ,, ३४

श्री नन्दकिशोर आचार्य की कुछ कविताओं में शिल्प की उत्कृष्टता होते हुए भी सम्प्रेषणीय तत्व की अल्पता है। इस प्रकार की स्थिति में उनका काव्य दुर्बोध लगता है और कविता शिल्प का आवरण बन जाती है, पर इनकी कुछ कविताओं में चिन्तन पक्ष सबल है और अनुभूति पक्ष भी लगभग वैसा ही है।

बीकानेर में स्वतन्त्रता के बाद के इन कवियों के अतिरिक्त भी कुछ कवि और हैं, जिन्होंने कुछ छुट-पुट कविताएं लिखी हैं। इनमें भी हमें दो प्रकार के कवि दिखाई दे रहे हैं। एक वे जिन्होंने स्वतन्त्रता प्राप्ति के समय एवं कुछ बाद में कविताएं लिखीं और दूसरे वे जिन्होंने इन्हीं कुछ वर्षों से कविताएं लिखनी प्रारम्भ की है। बीकानेर में इन प्रथम प्रकार के कवियों में अम्बिकादत्त शास्त्री, गोविन्दलाल व्यास, कन्हैयालाल गोस्वामी बद्रीप्रसाद पुरोहित, मुरलीधर व्यास का नाम लिया जा सकता है। इन सभी कवियों ने राष्ट्रीय कविताओं के साथ-साथ कुछ अन्य फुटकर कविताएं भी लिखी हैं। गोस्वामी की "यह ताजमहल" कविता जिसमें उन्होंने यह बताया है कि शाहजहां और मुमताजमहल से ताजमहल अमर नहीं है अपितु —

> "इसको तो अमर बनाया है
> मर-मर कर मजदूरों ने
> जो सिर पर पत्थर उठा-उठा
> चढ़ चले ताज के गुंबद पर।"[1]

कवि यह मानता है कि ताजमहल को देख कर हम आज मुमताज और शाहजहां के प्यार को याद करते हैं और उन मजदूरों को कोई भी याद नहीं करता जिन्होंने इसके निर्माण में अपना जीवन बलिदान किया था।

बहरावत मालचन्द, शेखर सक्सेना, धर्मेश शर्मा, बुलाकीदास बावरा, पूरचन्द राजीव, चंचल हर्ष, शिवराज छंगाणी, विश्वनाथ सचदेव तथा बागु-बीकानेरी आदि ने भी कुछ छुट-पुट कविताएं लिखी हैं। इन सभी कवियों की कविताएं 'विजय हमारी है' में प्रकाशित हुई हैं जो सभी राष्ट्रीय कविताएं और भारत पाक के आक्रमण के समय में लिखी हुई हैं। इन कविताओं में इन्होंने या तो अपने देश की महिमा का वर्णन किया है या फिर शत्रु को ललकारा है। देश महिमा में मातृभूमि पर बलिदान होने वाले वीरों को भी याद किया है। इन कविताओं के अतिरिक्त इन कवियों ने कुछ स्फुट कविताएं और भी लिखी हैं

१— कन्हैयालाल गोस्वामी — 'यह ताजमहल' कविता से

जो स्थानीय पत्रों में बिखरी पड़ी है। प्रेम सक्सेना, शिवराम पुनिया, मोहन बिश्नोई, मालीराम शर्मा तथा नरेन्द्र शर्मा आदि कवियों ने भी कुछ कविताएं लिखी है। प्रेम सक्सेना की कुछ कविताओं में वैयक्तिकता है। वैयक्तिक पीड़ा को कवि ने अपनी कविता में बहुत ही सुन्दर ढंग से प्रस्तुत किया है:—

"लेकिन ऐसा हुआ नहीं है
हर बार मास नहीं रात सोई है
और हर बार मेरे घर के एकांत में
सुनसान ने मुझे धाता दिया है।"1

शिवराम पुनिया ने बहुत कम कविताएं लिखी है। एक कविता में उन्होंने पीड़ा को बहुत ही सुन्दर ढंग से व्यक्त किया है। युवती और पीड़ा के रूपक से कविता बहुत ही सुन्दर बन पड़ी है :—

"सभी से
एक युवती
पीड़ा है नाम जिसका
मिलती है
हर गली - हर मोड़ पर
और फिर
बिन बोले
घूमती है साथ-साथ
रात होने तक।"2

कविताओं के अतिरिक्त पुनिया ने कुछ गीत भी लिखे हैं।

आज इस महगाई के समय में मनुष्य का जीना बहुत ही कठिन है। और फिर परिवार की गाड़ी को साथ लेकर चलना तो और भी कठिन है। मनुष्य को मनुष्य का सहारा भी कम मिल रहा है। इसी बात को मोहन ने अपनी कविता में प्रस्तुत किया है और बताया है जब तक मनुष्य-मनुष्य में भेद समाप्त नहीं होगा तब तक जीवन यापन करना कठिन है —

१— प्रेम सक्सेना की एक कविता से
२— शिवराम पुनिया की एक कविता से

गर्मी है
राशन चुक गया है
साड़ी फट गई है
फीस नहीं थी
नाम कट गया है ।
\+ × +
बहुत मुश्किल है जीना
जमी पर
जब तक
आदमी-आदमी में भेद है ।"[1]

आज के यांत्रिक युग ने मनुष्य को यन्त्रों जैसा ही बना दिया है । मनुष्य का जीवन मशीन बन गया है । उसके चारों ओर मशीन ही मशीन है :—

"बोध का बालक
बिक गया
यन्त्रों के पहरुए
खड़े हैं चारों ओर ।"[2]

इन कवियों के अतिरिक्त बीकानेर में और भी कवि सम्मेलनों में कुछ बाल कवि भी सामने आ रहे हैं पर उनकी कविताएं आकार और प्रकार किसी भी दृष्टि से हमारे आलोच्य विषय में नहीं आ सकती । इसलिए उनका यहां वर्णन नहीं किया जा रहा है ।

== ==

१— ज्ञान भारिल्ल : प्रेम सक्सेना	प्रस्तुति	पृ०	५४
२— " "	"	"	५६

बीकानेर जिले के काव्य-रूप

काव्य के तत्व

प्रत्येक मानव में कल्पना, विचारशीलता और अनुभूति विद्यमान है। कविता के लिए भी इन्हीं की आवश्यकता है। इसका अर्थ यह हुआ कि प्रत्येक मानव अपने आप में कवि है। पर वास्तव में ऐसा नहीं है। इसका कारण यह कि कवि साधारण मानव से कहीं अधिक भावुक एवं विचारशील होता है। अपने अनुभवों को अपने तक सीमित न रख कर उन्हें अभिव्यक्त करता है। कवि अपने हृदय के रस को पाठक तक पहुंचाता है। यदि कवि की अनुभूति को पाठक की अनुभूति न बना सका तो उसकी कविता में निश्चय ही कुछ कमी है पर इसके लिए केवल कवि का ही दोष नहीं होता। कभी-कभी पाठक या श्रोता का भी दोष होता है। इस प्रकार से काव्य के दो पक्ष हो गये हैं। अनुभूति पक्ष एवं अभिव्यक्ति पक्ष। जिसे हम भाव पक्ष और कला पक्ष भी कह सकते हैं। काव्य में इन दोनों का अटूट सम्बन्ध है। दोनों का एक दूसरे के बिना कोई महत्व नहीं है। कवि का अनुभूति पक्ष भी प्रबल होना चाहिये और अभिव्यक्ति का पक्ष भी। यदि अनुभूति तीव्र हो और उसे अभिव्यक्त करने के लिए भाषा न हो तो भी वह बेकार है। पाश्चात्य विद्वानों द्वारा प्रतिपादित काव्य के चार तत्व (रागात्मकतत्व, कल्पनातत्व, बुद्धितत्व और शैलीतत्व) इन्हीं दो तत्वों से सम्बन्धित हैं।[1]

काव्य का वर्गीकरण

काव्य को समझने के उपरान्त यह जानना भी आवश्यक है कि काव्य के कितने रूप हैं? काव्य के रूपों की जब हम चर्चा करते हैं तो हमारे सामने पाश्चात्य एवं भारतीय दोनों मत ही आ जाते हैं। दोनों मतों में काफी अन्तर भी है। पाश्चात्य विद्वानों ने काव्य के दो भेद किये हैं - एक विषयीगत (Subj-

[1] पृ. ४११

jective) व विषय गत (Objective)। विषयीगत मे कवि की प्रधानता मिलती है और विषयगत मे वस्तु सृष्टि की। पहले प्रकार के काव्य को लिरिक (Lyric) कहते हैं। इसमे गीत तत्व की प्रधानता रहती है। दूसरे प्रकार के काव्य को प्रबन्धात्मक (Narrative) कहा गया है, जिसमे महाकाव्य आदि काव्य आते हैं।[1]

भारतीय विद्वानो के अनुसार काव्य का विभाजन दृश्य और श्रव्य दो भागो मे हुआ है। जो काव्य अभिनीत होकर देखा जाय वह दृश्य काव्य कहलाता है और जिसे कानो से सुना जाय उसे श्रव्य काव्य कहा जाता है। श्रव्य काव्य के अन्तर्गत गद्य, पद्य और मिश्र तीन भेद रखे हैं।[2]

बन्ध की दृष्टि से काव्य के दो भेद किये जा सकते हैं—प्रबन्ध काव्य और मुक्तक काव्य। प्रबन्ध काव्य वह कहलाता है जिसमे पूर्वापर सम्बन्ध रहता है तथा छन्द एक दूसरे से माला की मनियो से जुड़े रहते हैं। जिस प्रकार माला का एक भी मनका टूटने पर सारी माला बिखर जाती है उसी प्रकार से प्रबन्ध काव्य मे छन्द का महत्व रहता है। प्रबन्ध काव्य मे छन्दों के क्रमो को आगे पीछे नहीं किया जा सकता। मुक्तक काव्य मे पूर्वापर सम्बन्ध नहीं रहता। प्रत्येक छन्द अपने आप मे पूर्ण एव स्वतन्त्र होता है।

प्रबन्ध काव्य के भी दो भेद किए जा सकते हैं—महाकाव्य और खण्ड काव्य। महाकाव्य मे एक विस्तृत कथानक होता है। उसमे मानव जीवन की पूर्ण घटनाओ का चित्रण होता है। महाकाव्य की परिभाषा बताते हुए गुलाब राय ने लिखा है "महाकाव्य वह विषय-प्रधान काव्य है जिसमे कि अपेक्षा कृत बड़े आकार मे जाति मे प्रतिष्ठित और लोकप्रिय नायक के उदात्त कार्यो द्वारा जातीय भावनाओं, आदर्शो और आकांक्षाओ का उद्घाटन किया जाता है।"[3]

खण्ड काव्य मे जीवन की किसी एक घटना का वर्णन रहता है। जीवन की विविधता का इसमे अभाव होता है। इसका क्षेत्र भी महाकाव्य से सीमित होता है।

---

१. गुलाब राय-काव्य के रूप- पृष्ठ १७
२. डा० शकुन्तला दुबे-काव्य रूपो के मूलस्रोत और उनका विकास- पृष्ठ ३३
३. गुलाब राय-काव्य के रूप- पृष्ठ ८४

श्री विश्वनाथ मिश्र ने महाकाव्य तथा खण्ड काव्य के बीच और स्वतंत्र विधा मानी है जिसे एकार्थ काव्य कहते हैं। उनका मत है कि "महाकाव्य में कथा-प्रवाह विविध भंगिमाओं के साथ मोड लेता हुआ आगे बढ़ता है किन्तु एकार्थ काव्य में कथा-प्रवाह के मोड कम होते हैं।"[1] उन्होंने कामायनी, प्रिय प्रवास और साकेत को एकार्थ काव्य माना है।

मुक्तक काव्य के भी दो भेद किये जाते हैं। गेय मुक्तक और पाठ्य मुक्तक। पर वास्तव में देखा जाय तो जो पाठ्य है वह गेय भी हो सकता है और जो गेय है वह पाठ्य भी हो सकता है। पाठ्य और गेय को यदि हम विषयी प्रधान और विषयी प्रधान कहे तो अधिक उचित होगा। गेय पदों में कवि का निजी भावाधिक्य अधिक होता है और पाठ्य मुक्तक में कवि तटस्थ होकर डालता है।

गीति काव्य को अंग्रेजी में लिरिक कहते हैं। इसमें व्यक्तिगत सुख दुख की बात अधिक रहती है। इसमें कवि के व्यक्तित्व की छाप मुख्य रूप से रहती है। भावातिरेक और संगीत इसके मुख्य तत्व है। प्रथम को इसकी आत्मा और द्वितीय को इसका शरीर कहा जा सकता है। गुलाब राय ने गीति काव्य की व्याख्या करते हुए लिखा है "यह काव्य की अन्य विधाओं की अपेक्षा अधिक प्रेरित (Spontaneons) होता है और इसी कारण इसमें कला होते हुए भी कृत्रिमता का अभाव रहता है"[2]

काव्य रूपों की विवेचना करने के उपरान्त हम कह सकते हैं कि काव्य के निम्नलिखित रूप हो सकते हैं—

१. महाकाव्य
२. खण्ड काव्य
३. एकार्थ काव्य
४ गीति काव्य
५ मुक्तक काव्य

बीकानेर में काव्य के रूप

उपर्युक्त काव्य रूपों को ध्यान में रखते हुए यदि बीकानेर को …

---

१. सरोजिनी मिश्र—साहित्यशास्त्र के सिद्धान्त— पृष्ठ ३४१

२. गुलाब राय—काव्य के रूप— पृष्ठ ११०

लिये आज कल कवि सम्मेलन प्रचार के एक साधन बन गये हैं। कवियों का अधिक ध्यान कवि सम्मेलनों की ओर ही रहा है और उनमें अपने गीत और कविताएं सुनाते रहते हैं। इस दृष्टि से प्रबन्ध काव्य लिखने की ओर ध्यान न जाना सम्भव ही है। हिन्दी का जो केन्द्र रहा है और जहां से हिन्दी जगत को प्रेरणाएं मिली है उससे बीकानेर जिला बहुत दूर रहा है। उस क्षेत्र से यहां तक जितनी प्रेरणाएं मिली उतना इस क्षेत्र में काव्य सर्जन भी होता रहा है पर इससे अधिक न ही हो पाया है और न ही इससे अधिक सम्भव था।

राजस्थानी में प्रबन्ध लिखे अवश्य गये थे लेकिन आज के कवि उनसे पूर्णतया अछूते हैं। स्वतन्त्रता के बाद युग की परिस्थितियां बदल गईं और उसके साथ ही साथ समस्याएं भी नवीन पैदा होती रहीं और कवियों का अधिक ध्यान इन बदलती हुई समस्याओं की ओर रहा है। इसलिए किसी प्रबन्ध काव्य लिखने की ओर ध्यान जाना असम्भव ही है। सन् १९४७ से लेकर आज तक देश पर दो-तीन बार आक्रमण हो गये, रुपये का अवमूल्यन हो गया, बेकारी, महंगाई और जनसंख्या की समस्या बढ़ती जा रही है। अतः यहां के कवियों का ध्यान इन समस्याओं की ओर जाना भी स्वाभाविक है। वे इन्हीं विषयों पर कविताएं लिखते रहे और किसी भी प्रकार के प्रबन्ध काव्य लिखने की ओर ध्यान नहीं दिया।

गीति काव्य

काव्य अपने आप में ही हित कर (शिव) एवं आनंद दायक (सुन्दर) होता है। अगर काव्य में लयात्मकता भी समावेश कर दी जाय तो सोने में सुगन्ध हो जाय। काव्य का और संगीत का सम्बन्ध बहुत प्राचीन काल से रहा है और आज भी है। यही कारण है कि हम "विनय पत्रिका" को पढ़कर उससे काव्य का आनंद ले लेते हैं पर साथ ही उसे गा कर संगीत का भी आनन्द लेते हैं। इस दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए यदि हम बीकानेर के काव्य को देखें तो हमारा ध्यान कुछ गीतकारों पर अवश्य जाता है, जिन्होंने कविताएं और गीत दोनों लिखे हैं और उन्हें कवि सम्मेलनों में अच्छी प्रकार सुनाते हैं। गीतकारों और उनके गीतों को जानने से पहले यह जरूरी है कि हम गीति काव्य को अच्छी तरह से समझ लें।

जैसे कि पहले लिखा जा चुका है कि मुक्तक के दो भेद होते हैं, पाठ्य और गेय। इसी गेय को ही गीति काव्य (प्रगीत काव्य) कहते हैं। अंग्रेजी में

प्रगीत काव्य को लिरिक (lyric) कहते है। महादेवी वर्मा के अनुसार "साधारणत. गीत व्यक्तिगत सीमा मे तीव्र सुख दु खात्मक अनुभूति का वह शब्द रूप है जो अपनी ध्वन्यात्मकता मे गेय हो सके ।"[1] गुलाब राय ने प्रगीत काव्य की परिभाषा बताते हुए लिखा है "संगीतात्मकता और उसके अनुकूल सरस प्रवाहमयी कोमल कान्त पदावली, निजी रागात्मकता (जो प्राय: आत्मनिवेदन के रूप मे प्रकट होती है), संक्षिप्तता और भाव की एकता। यह काव्य की अन्य विधाओं की अपेक्षा अधिक स्वत:प्रेरित (Spontaneous) होता है और इसी कारण इसमें कला होते हुए भी कृत्रिमता का अभाव रहता है ।"[2]

उपर्युक्त परिभाषाओं के अनुसार गीति काव्य के निम्नलिखित तत्व निर्धारित किये जा सकते हैं —

१. आत्माभिव्यक्ति
२. विचारों की एकता
३. जीवन की मार्मिक अनुभूति
४. संक्षिप्तता
५. कोमल कान्त पदावली
६. संगीतात्मकता

साधारणतया गीत दो प्रकार के होते हैं। एक साहित्यिक गीत और दूसरा लोक गीत। साहित्यिक गीतों में रचयिता का निजीपन अधिक रहता है। लोक गीतों में रचयिता का निजीपन भी रहता है किन्तु इन में साधारणीकरण और सामान्यता कुछ अधिक रहती है अत वे वैयक्तिक रस की अपेक्षा जन रस उत्पन्न कर सकते हैं। साहित्यिक गीत भी मुख्य रूप से दो प्रकार के होते हैं। प्रथम शुद्ध संवेदनात्मक गीत जैसे कबीर मीरा और तुलसी की 'विनय पत्रिका" और दूसरे कथाश्रित गीत, जैसे सूर के लीला सम्बन्धी पद [3]

डॉ० शकुन्तला दुबे ने गीति काव्य का विषय के आधार पर छ भागों मे विभाजित किया है—प्रेम के गीत भक्ति प्रधान गीत विचारात्मक और बुद्धि प्रधान गीत प्रकृति के गीत और सामाजिक गीत ।[4]

पाश्चात्य विद्वानों द्वारा भी गीति काव्य के कुछ रूप निर्धारित किए

---

१. महादेवी वर्मा का विवेचनात्मक गद्य— पृष्ठ [illegible]
२. गुलाब राय–काव्य के रूप " [illegible]
३ गुलाब राय–काव्य के रूप– पृष्ठ [illegible]
४. डा० शकुन्तला दुबे–काव्य के रूप [illegible] और उनका विकास पृष्ठ [illegible]

१,

गए हैं।[1]

१. चतुर्दशपदी, सानेट (Sonnet)
२ संबोधन गीत, ओड (Ode)
३ शोक गीत, ऐलिजी (Elegy)
४ व्यंग्य गीत, सेटाइर (Stue)
५ विचारात्मक, रिफ्लेक्टिव (Reflective)
६ उपदेशात्मक, डिडेक्टिव (Diadactive)

इन सब गीत प्रकारों में केवल सानेट में आकार की प्रधानता होती है (चौदह पंक्तियां होती हैं) और शेष सब में विषय की प्रधानता रहती है। पाश्चात्य विद्वानों ने जो गीति काव्य के रूप माने हैं प्रायः सभी हिन्दी में मिल जाते हैं।

सन १९४७ से लेकर अब तक बीकानेर जिले में गीति काव्य ने कविता का साथ दिया है। कविता की तरह गीति काव्य में भी समय पर मोड़ आते गये हैं। यहां के लगभग सभी कवियों ने गीत लिखे हैं।

प्रेम जीवन की सबसे मधुर सबसे सुन्दर सबसे सबल और सबसे मनोबी अनुभूति है। इसी प्रेम की भावना से प्रभावित होकर मानव कवित्वमय बना और उसे गीत काव्य निर्माण की प्रेरणा मिली। गीति काव्य प्रेम पूर्ण हृदय की सच्ची वाणी है। जिस कवि ने प्रेम की ज्वाला में अपने को तपाया नहीं उसमें सच्चे गीति काव्य लक्षण नहीं प्राप्त हुए। गीति काव्य जितना प्रेम भावना को लेकर निर्मित हुआ है उतना अन्य किसी भाव को लेकर नहीं। प्रेम प्रधान गीति काव्य एक ओर शृंगारिक और दूसरी ओर देश भक्ति की भावना से आपूर्ण है।

प्रेम के दो पक्ष होते हैं एक संयोग और दूसरा वियोग पक्ष। किसी ने प्रेम की मादकता का वर्णन किया है तो किसी ने उसकी विरह व्यथा का। बीकानेर के काव्य में दोनों प्रकार के गीत मिलते हैं.—जैसे

"हम रहे न रहे बात चलती रहे
प्यार जिसको मिला जिन्दगी आ गई।
तुम रहो न रहो पर यही सच रहे
रूप जिसको रोशनी आ गई।
देवता कुछ दिव्यता कुछ नहीं
रूप देखा तुम्हारा मजा आ गया।"[2]

---

१. गुलाब राय—काव्य के रूप— पृष्ठ ११२
२ मंगल सक्सेना—मैं तुम्हारा स्वर— पृष्ठ ५६

इसी प्रकार का यह प्रेम सम्बन्धी गीत है —

"पाकर तेरा प्यार प्यास मैं
नई बहारें लाना चाहूँ
तूने गीत दिये जो मुझको
नये राग मे गाना चाहूँ
पर सांसों के तार टूट जाते हैं
मेरे गीत अधूरे रह जाते हैं ।"[1]

पर मानव हृदय को जितना विरह प्रभावित करता है उतना संयोग नहीं । इस दृष्टि से जो विरह व्यथा को लेकर लिखे गये गीत हैं वे कहीं अधिक प्रभाव शाली हैं । संयोग की सीमा बांधी जा सकती है पर वियोग की नहीं —

"परिधि बांध लिया करती है
सीमाएं संयोग की,
किन्तु गगन तक खिंच जाती है
रेखा विधुर वियोग की ।"[2]

यहां तक कि कवि ने पीड़ा को जीवन का एक मात्र सहारा बना लिया है:—

"पीड़ा का हर एक इशारा
जीने का बन गया सहारा ।"[3]

प्रेम प्रधान गीति-काव्य मे दूसरी ओर देश प्रेम के गीत भी आते हैं । जब कोई कवि देश प्रेम एवं राष्ट्रीय भावना से परिपूर्ण होकर गीत लिखता है तब उसी भावना के अनुरूप हम उसे देश प्रेम या राष्ट्रीय गीत कहते हैं । इस प्रकार के गीतों मे प्राय: वर्णनात्मकता रहने के कारण अन्य गीतों से लम्बे होते हैं । इन गीतों के साथ युद्ध के गीत भी लिखे जाते हैं । इन राष्ट्रीय गीतों मे अतीत वैभव की स्मृति व भविष्य का उज्ज्वल चित्र एवं युद्ध गीतों मे उन वीरों की स्मृति की प्रधानता रहती है जिन्होंने देश की रक्षा के लिए अपने प्राण दे दिये । ऐसे गीतों मे कवि शोक प्रकट नहीं करता अपितु श्रद्धाञ्जलि के रूप मे उनकी सराहना करता हुआ वीरों का उत्साह बढ़ाता है ।

बीकानेर मे देश प्रेम एवं राष्ट्रीय भावना के गीत लिखे गये हैं ।

---

१ हरीश भादानी—अधूरे गीत—पृष्ठ ६४
२ [illegible]

अधिकतर ये गीत चीन आक्रमण और पाक आक्रमण के समय के हैं। इसके अतिरिक्त भी समय-समय पर इस प्रकार के गीत सामने आते रहे हैं।

"डिक्टेटर का प्रथम शत्रु है मेरा हिन्दुस्तान
मेरा हिन्दुस्तान मुक्ति के दूतों का भगवान
प्रेम का मन्दिर स्नेह का उपवन ये है सत्य का गीत
इसके कण-कण में गूंजा नित मिलन भरा संगीत।"[1]

कवि की दृष्टि मे भारत सर्व त्याग की मूर्ति है। यह ऐसा देश है जिसने स्वयं कष्ट झेल कर दूसरों को सुख, शान्ति और सम्मान दिया है।

"मेरे देश ने संसार को सम्मान दिया है
सुख, शान्ति, स्नेह, शक्ति का वरदान दिया है
माना कि ये रहा है खुद हमेशा कष्ट में
इस पर भी इसने चैन का सामान दिया है।"[2]

देश प्रेम के गीतों में समूह गान भी गाये जाते हैं। जब वीर युद्ध को जाते हैं तो इस प्रकार के गीत गाये जाते हैं—

"हमारी दोस्ती में जो हमें चाहे वही कह दे
मगर जब हम बिगड़ते हैं दिशाएं धड़क जाती है
हमारे दुश्मनों की छातियां भी तड़क जाती है।"[3]

कवि वीरों के शरीर में बहने वाले रक्त की महिमा बताता है—

"हमारी देह में वीरांगनाओं का लहू बहता
गया जो धाम से गैयों उन्हीं का दूध यह कहता
[illegible] के ऊपर [illegible] का कुछ हो नहीं सकता
हमारी शान्ति का दुश्मन घरों में भी नहीं रहता।"[4]

इस प्रकार हरीश भादानी, रामनरेश सोनी आदि ने भी राष्ट्रीय गीत लिखे हैं।

प्रकृति और मानव का सम्बन्ध आदि काल से ही रहा है और [illegible] के आदि काल से ही मानव प्रकृति के बीच [illegible] रहा है। [illegible]

---

१. हरीश भादानी—[illegible]—पृष्ठ-[illegible]
२. हरीश भादानी—[illegible]—पृष्ठ-[illegible]
३. [illegible]—पृष्ठ ३२
४. " " " " " ३४

में आलम्बन की अपेक्षा उद्दीपन का चित्रण अधिक हुआ है। कवि के सुखद भाव प्रकृति को सुखद रूप में और उसके दुःखद भाव प्रकृति में दुःखद भाव का प्रतिबिम्बित देखते हैं। इन कवियों ने प्रकृति सम्बन्धी गीत लिखे हैं —

"नीलिमा आकाश की, सागर तरंगों पर उतर कर
पूर्व दृष्टा नयन की, बन वाष्प जो छा जाय भू पर।"[1]

प्रकृति सम्बन्धी गीत "अधूरे गीत" और "मैं गीत सुनाता जाऊंगा" आदि में भरे पड़े हैं। इन गीतों में अधिकतर छायावादी ढंग के गीत हैं।

इन गीतों के अतिरिक्त बीकानेर में कुछ प्रगतिवादी गीत भी लिखे गये हैं। इस प्रकार के गीतों में अधिकतर शोषितों की वास्तविक स्थिति का चित्रण है और साथ ही विद्रोह का स्वर भी जैसे —

"ये धूल भरे काले नंगे गोदी के लाल सिसकते हैं।"[2]
मां की छाती से लाल रक्त, जब पानी बन उड़ जाता हो।
फूलों की तरह हंसी हंसता, जब शिशु रो-रो मर जाता हो।[3]

आज समय बदल गया है और समय के साथ-साथ काव्य का बदलना भी आवश्यक हो जाता है। आज के गीतों के विषय में भी परिवर्तन आ गया है। जहां पहले प्रेम गीत और प्रकृति के गीत लिखे गये वहां आज नगर-बोध के और सामान्य जीवन का चित्रण गीतों में होने लगा है। आज अन्न प्राप्ति की एक समस्या बनी हुई है उसके साथ ही देश की बढ़ती हुई जनसंख्या इस समस्या को और जटिल बनाती जा रही है।

नगर-बोध के गीतों में आज शहरी जीवन का चित्रण है —

'भोर जगी
घर-घर में चूल्हे हीटर में
होड़ लगी।'[4]

"शहर को सदा है
जो रंग देते
कंगूरों छतों पर
बिछती हुई शाम ने

---

१. मेघराज मुकुल–उमंग — पृष्ठ ८
२. हरीश भादानी–अधूरे गीत — पृष्ठ १८
३. मेघराज मुकुल–उमंग — पृष्ठ १८
४. वातायन—आज का गीत अंक, अक्टूबर, १९६३–पृष्ठ ५०

चिमनियों से उठा धुंआ
पसर सो गया है।"[1]

नगर-बोध के इन गीतों में हर प्रकार के जीवन का चित्रण हुआ है। जहां एक ओर सायरन बजने पर हलचल सी मच जाती है—

"समय पर बजा
ट्यून के पोल सा सायरन
+ + +
बेतहाशा इधर से उधर
इकेली उभरती अलग थाप।"[2]

वहां दूसरी ओर रात के सन्नाटे में होने वाला दुष्कर्म भी नहीं बचा है—

"कितने बढ़े हाथ काले
कुंआरे सिन्दूर पर
बासती रात की मदिर सांसे
प्यास पर प्यास से आग भर
मसल दी गई नव कली।"[3]

भूख ने मानव को आज किस तरह से व्यस्त कर दिया है। इसका चित्रण भी गीतों में हुआ है। साथ ही आज के युग में मानव-मानव के लिए अजनबी बन रहा है। गीतकार उससे दिल खोल कर मिलना चाहता है।

"आदमी अजनबी आदमी के लिये
तुम्हें मन खोल कर मिलने बुलाया है।"[4]

बीकानेर के काव्य में इन गीतों में एक स्वाभाविक ढंग से विका दृष्टिगोचर होता है। प्राकृतिक गीतों में स्वयं का मन ही बहल सकता है किसी प्रकार की उपलब्धि उसमें होना सम्भव नहीं है। लेकिन आज बीकानेर उस प्रकार के गीत नहीं लिखे जा रहे हैं अपितु ऐसे गीत लिखे जा रहे हैं जिन या तो सामान्य जीवन का चित्रण है या किसी समस्या का बखान है। इन गीतों

१. वातायन–आज का गीत एक प्रसंग, १९६५–पृष्ठ ३१
२. „ – „ „ „ „ पृष्ठ ३५
३. „ – „ „ „ „ पृष्ठ ३७
४. – गीत अंक, प्रसंग, १९६६–पृष्ठ

बाह्य प्रलंकरण की ओर भी रहता है। इसमें कवि बाह्य सौन्दर्य की ओर अधिक सचेष्ट रहता है। गीति काव्य में आन्तरिक हृदयावेग को स्थान देना उसका प्रमुख कार्य होता है। अतः स्पष्ट है कि मुक्तकों मे आत्मनिष्ठता का प्रभाव हो जाता है। कवि अनेक प्रकार से अभिव्यजित रूप को संवारने लग जाता है जिससे अनुभूति पीछे रह जाती है। यही आत्माभिव्यंजना का तत्व गीति काव्य को मुक्तक से भिन्न करता है।

पर इसका यह अर्थ नही है कि मुक्तक मे किसी भी प्रकार का भाव पक्ष नही होता। भाव पक्ष के अभाव मे किसी भी काव्य की कल्पना करना ही व्यर्थ है। मुक्तक मे कवि के भावों पर कवि कर्म का आवरण रहता है। मुक्तक में गूढता भी रहती है। कवि अपना पांडित्य इसी में समझता है कि वह अपनी बात को अधिक से अधिक गूढ बनाने मे किस प्रकार से सफल हो सकता है। इस प्रकार से उसमे चमत्कार की प्रधानता आ जाती है। कला पक्ष की प्रधानता हृदय नहीं बुद्धि का हल्का सा सहारा लेकर अनुभूति का महल खडा करता है। परन्तु मुक्तककार के यहां तो बुद्धि के नीचे अनुभूति दब जाती है। नीति, उपदेश और आचार सम्बन्धी बातों से हृदय का नही बुद्धि का सम्बन्ध है।

मुक्तक मे भाषा का बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। मुक्तककार की भाषा को समास युक्त होना आवश्यक है। क्योंकि कवि को छोटे से आकार में गागर में सागर भरना होता है। कवि को सक्षेप रूप मे प्रत्येक बात को कहना आवश्यक हो जाता है। मुक्तक मे चमत्कार और सौन्दर्य के लिए मुहावरों का प्रयोग भी किया जाता है।

बीकानेर के कवियो ने गीतो के साथ-साथ मुक्तक भी लिखे हैं। यहां पर अधिकतर मुक्तक राष्ट्रीय, प्रेम सम्बन्धी, जीवन दर्शन सम्बन्धी और नीति सम्बन्धी मुक्तक है।

राष्ट्रीय मुक्तको मे कुछ तो राष्ट्रीय गौरव के हैं। राष्ट्रीय एकता की ओर कवि ने अपने मुक्तको मे इशारा किया है :—

"एक वेश, एक देश, एक भाग है,
एक मान, एक सांस एक राज है
मान के लिये पचास कोटि प्राण में,
एक जोश, एक रोश, एक आग है।"[1]

१— हरीश भादानी — हमिनो याद की पृ० — ६

कुछ ऐसे मुक्तक हैं जिनमे दुश्मनो को चेतावनी दी गई है :—

> हम उत्तर दिशा को छोड़ना,
> तुमको बहुत महंगा पड़ेगा,
> सिर्फ हमसे ही नही तुमको,
> हवाओ मे भी लड़ना पड़ेगा ।"[1]

कवियो ने परम्परागत मान्यताओ को भी मुक्तको के माध्यम से झकझोरा है :—

> "जब जब भी गया मन्दिर लगा ऐसा,
> आदमी भला है देवता ठगो से।"[2]

कुछ मुक्तक आत्म परक भी लिखे गये हैं। इसमे कवि अपनी ही बात कहता है। चाहे वह अपने प्रेम की हो, चाहे दर्द की और चाहे अपने विश्वास की। कवि को अपने पर पूर्ण विश्वास है कि वह अपने उद्देश्य को छोड़ नहीं सकता चाहे कुछ भी क्यों न हो जाय, इसलिए वह कहता है .—

> "तुम मेनका बनो चाहे रम्भा
> मेरी कलम रूप की दास नही
> कितनी भी सिंगार करो, महको
> डिगा सकता मेरा विश्वास नही ।"[3]

कवि अपने आप को दर्द से जकड़ा हुआ समझता है और उसी दर्द मे उलझ गया है ।

> "सुखो के आकड़े सभी बोले बिना निकल गये,
> और हम उलझ रहे हैं सिर्फ दर्द के हिसाब मे ।"[4]

बीकानेर मे प्राय' सभी कवियो ने जिन्दगी की व्याख्या करने का प्रयत्न किया है, कभी जिन्दगी उसे फूल दिखाई देती है तो कभी वह शूल दिखाई देती है —

> "जिन्दगी है फूल भी और शूल भी ।
> जिन्दगी ऊंची शिला है भूल भी ।।

१— हरीश भादानी — हंसिनी याद की पृ० ८६
२— योगेन्द्र किसलय का एक मुक्तक
३— " " "
४— हरीश भादानी — हंसिनी याद की " ६७

जिन्दगी को देख दोनो आंखों से –
जिन्दगी मझधार भी है कूल भी ।।"[1]

इनके अतिरिक्त कुछ अन्य विषयो पर भी मुक्तक लिखे गये हैं, गरीबी पर, प्रकृति पर, धार्मिक पाखण्डों आदि पर । परन्तु ऐसे मुक्तकों की अधिकता नही है । कुछ मुक्तक तो ऐसे हैं जो केवल शब्दों के चमत्कार में ही समाप्त हो जाते है । इनमें पाठक शब्दों के चमत्कार को ही देख पाता है अन्य किसी वस्तु को प्राप्ति नही कर पाता । यहा के मुक्तकों में कही पर क्लिष्टता नही है । इसका कारण यह है कि इन मुक्तकों की भाषा बहुत ही सरल है । मुहावरो आदि का प्रयोग यहा के मुक्तकों में नहीं हुआ है । बीकानेर म अधिकतर चतुश्पदी, मुक्तक लिखे गये है । यहां के अधिकांश मुक्तकों में प्रथम तीन पक्तियो मे सीधी-सादी बात कही जाती है और चौथी पंक्ति में बात को इस प्रकार से घुमाकर कहा जाता है कि वह प्रभावशाली हो जाती है । इस प्रकार यहा के मुक्तको की चौथी पंक्ति बहुत ही महत्वपूर्ण एवं प्रभावशाली होती है । कुछ मुक्तक ऐसे भी है जिनकी चारो पंक्तियां समान महत्व की होती है । यहा पर कुछ दो पदी मुक्तक भी लिखे गये हैं ।

यहा के कवियों ने इन मुक्तको मे परम्परागत छन्दो को छोड दिया है और किसी भी प्रकार के नवीन बन्धन को भी स्वीकार नही किया है । यहां के मुक्तक लय और तुक मे बधे हुए हैं परन्तु लय और तुक परम्परा से मेल न खाती ।

1— रामनरेश जोशी का एक मुक्तक

कबीर काव्य की अन्तश्चेतना (कथ्य)

कवि अपने युग का चितेरा होता है। युग में जो-जो सामाजिक घात प्रतिघात, सांस्कृतिक उत्थान-पतन, ऐतिहासिक उत्कर्ष-अपकर्ष और धार्मिक हेर-फेर आदि चलते रहते हैं कवि उन पर दृष्टि रखता है और कभी तो वह उनका यथार्थ चित्र प्रस्तुत कर देता है कभी वह उन्हें इस रूप में प्रस्तुत करता है जिस ओर वह उस समाज को ले जाना चाहता है और कभी-कभी वह परम्परा ग्रस्त होकर युग से बहुत पीछे रह जाता है — अतीत में या किसी प्रवृत्ति-विशेष में फंसा रह कर उसी पर मुग्ध रहता है। इस प्रकार उसका भारी सामाजिक दायित्व है और सर्जक होने के नाते वह इसका जितनी कुशलता से निर्वाह करता है उतना ही वह अपेक्षणीय बन भी जाता है। उस पर समाज अपनी दृष्टि लगाये रहता है और वह समाज को अपनी दृष्टि में समाये रहता है। ऐसी पारस्परिक स्थिति में कवि का महत्वपूर्ण दायित्व हो जाता है।

समाज व्यक्तियों की समष्टि है, व्यक्ति प्रतिपल परिवर्तनशील है। उसके विचारों में, चिंतन में भावनाओं में प्रत्येक क्षण परिवर्तन होता रहता है और जब यह परिवर्तन समस्त समष्टि में व्याप्त हो जाता है तब वह सामाजिक चेतना का अंग बन कर प्रकट होता है और यह सामाजिक चेतना भी व्यक्ति के साथ गतिशील होकर अपने युग को आगे बढ़ाने चलती है, पर इसकी गति उतनी तीव्र नहीं होती जितनी की व्यक्ति की।

व्यक्ति की गति और समाज की गति का क्रम यह है कि प्रथम अधिक गतिशील होता है और द्वितीय मन्थर गति से आगे बढ़ता है। इससे समाज व्यक्ति से बहुत पिछड़ जाता है, जब यह दूरी विस्तृत हो जाती है तब कवि या किसी सामाजिक नेता का कर्त्तव्य हो जाता है कि उसे समाप्त करे। इसलिए समाज में जब — जब ऐसी अवस्थाएं उत्पन्न हुई हैं तब-तब ऐसे व्यक्तियों ने आकर ऐसी सामाजिक क्रान्तियां उत्पन्न की जिससे समाज और व्यक्ति में सामंजस्य हो सका है। महात्मा गांधी, दयानन्द सरस्वती हमारे युग के हो ऐसे

जिन्दगी को देख दोनों आंखों से –
जिन्दगी मझधार भी है कूल भी ॥"[1]

इनके अतिरिक्त कुछ अन्य विषयों पर भी मुक्तक लिखे गये हैं, जैसे गरीबी पर, प्रकृति पर, धार्मिक पाखण्डों आदि पर । परन्तु ऐसे मुक्तकों की अधिकता नहीं है । कुछ मुक्तक तो ऐसे हैं जो केवल शब्दों के चमत्कार में ही समाप्त हो जाते हैं । इनमे पाठक शब्दों के चमत्कार को ही देख पाता है, अन्य किसी वस्तु की प्राप्ति नही कर पाता । यहा के मुक्तकों में कहीं पर क्लिष्टता नही है । इसका कारण यह है कि इन मुक्तकों की भाषा बहुत ही सरल है । मुहावरों आदि का प्रयोग यहा के मुक्तकों में नहीं हुआ है । बीकानेर में अधिकतर चतुष्पदी, मुक्तक लिखे गये हैं । यहां के अधिकांश मुक्तकों मे प्रथम तीन पंक्तियो में सीधी-सादी बात कही जाती है और चौथी पंक्ति में बात को इस प्रकार से घुमाकर कहा जाता है कि वह प्रभावशाली हो जाती है । इस प्रकार यहा के मुक्तको की चौथी पंक्ति बहुत ही महत्वपूर्ण एवं प्रभावशाली होती हैं । कुछ मुक्तक ऐसे भी हैं जिनकी चारो पंक्तियां समान महत्व की होती है । यहा पर कुछ दो पदी मुक्तक भी लिखे गये हैं ।

यहा के कवियों ने इन मुक्तकों मे परम्परागत छन्दों को छोड़ दिया है और किसी भी प्रकार के नवीन बन्धन को भी स्वीकार नहीं किया है । यहां के मुक्तक लय और तुक में बधे हुए हैं परन्तु लय और में भेद नहीं जाती ।

१— र

प्रतीत करते से तथा अपने कवि-रूप की हत्या करते से प्रतीत होते थे। ऐसी विषम परिस्थितियों में भी जिन कवियों ने काव्य जैसी पुनीत प्रतिमा की सेवा करने का प्रयत्न किया है उनमें शम्भुदयाल सक्सेना आदि का उल्लेख पहले हो चुका है। इन सभी कवियों ने या तो अपनी कविता के लिये ऐसे विषय चुने जो अतीत से सम्बन्ध रखते हैं अथवा जिनका तत्कालीन सामाजिक चेतना से कोई सम्बन्ध नहीं. और जहां कहीं उन्होंने ऐसे विषयों को भी चुना है जिन पर शेष भारत में निर्भीकता से कविता लिखी जा रही थी वहां उन्होंने कुछ ऐसी साहित्यिक युक्तियों को अपनाया है जो इन परिस्थितियों में अपेक्षित होती है।

पर ऐसे युग में भी कुछ ऐसे विचारक और कवि जन्म लेते हैं जो केवल अपने हृदय की सच्चाई पर जीते हैं, उनकी अभिव्यक्ति को किसी भी प्रकार अवरुद्ध करना राजतन्त्र की शक्ति की परे की बात होती है। समाज में ऐसे व्यक्तियों ने क्रांतियां की है और काव्य में ऐसे ही व्यक्ति नवीन दिशा प्रस्तुत करते हैं। आचार्य काशीदेव प्रभृति कवि ऐसी श्रेणी के हैं। उन्होंने वही कहा जो उनके हृदय की अनुभूति थी और उनकी शैली में भी प्रच्छन्नता और परोक्षता के स्थान पर प्रत्यक्षता और ऋजुता मिलती है। ऐसे ही कवियों ने इस क्षेत्र के काव्य को शेष हिन्दी काव्य से सम्बद्ध किया और इस प्रकार हिन्दी साहित्य में जो कुछ हो रहा था उसका संक्षिप्त स्वरूप यहां भी देखने को मिलता है।

देश की स्वतन्त्रता के साथ जब राज्य में भी स्वतन्त्रता मिली तो अनेक हृदय सहसा अनेक दिशाओं में बह चले और इसलिए अनेक प्रकार [illegible] विषयों पर कविता लिखी जाने लगी। जिन राजनैतिक विषयों को छूना तक पाप था उन पर अब उन्मुक्त वाणी [illegible] प्रकट हुआ। सामाजिक विषयों में भी अनेक [illegible] आयी। कवि के अभिमान का [illegible] और [illegible] प्रेम और वेदना, घृणा और क्रोध आदि अनेक भाव अनेक दिशाओं में बह चले — [illegible] विविध [illegible] को छोड़ कर नव पथ निर्माण में [illegible] हुए। [illegible] तेजी के साथ व सभी विषय और काव्य [illegible] प्रविष्ट हुए जो अब तक यहां प्रवेश नहीं पा सकते थे। इस प्रकार [illegible] मुक्त होकर प्रकट हुई और इनके [illegible] मिले और इन्हीं ओर [illegible]

व्यतीत करते से तथा अपने कवि-रूप की हत्या करते से प्रतीत होते थे। ऐसी विषम परिस्थितियों में भी जिन कवियों ने काव्य जैसी पुनीत प्रतिमा की सेवा करने का प्रयत्न किया है उनमें शम्भुदयाल सक्सेना आदि का उल्लेख पहले हो चुका है। उन सभी कवियों ने या तो अपनी कविता के लिये ऐसे विषय चुने जो अतीत से सम्बन्ध रखते हैं अथवा जिनका तत्कालीन सामाजिक चेतना से कोई सम्बन्ध नहीं. और जहां कहीं उन्होंने ऐसे विषयों को भी चुना है जिन पर शेष भारत में निर्भीकता से कविता लिखी जा रही थी वहां उन्होंने कुछ ऐसी साहित्यिक युक्तियों को अपनाया है जो इन परिस्थितियों में अपेक्षित होती हैं।

पर ऐसे युग में भी कुछ ऐसे विचारक और कवि जन्म लेते हैं जो केवल अपने हृदय की सच्चाई पर जीते हैं, उनकी अभिव्यक्ति को किसी भी प्रकार अवरुद्ध करना राजतन्त्र की शक्ति की परे की बात होती है। समाज में ऐसे व्यक्तियों क्रान्तियां की है और काव्य में ऐसे ही व्यक्ति नवीन दिशा प्रस्तुत करते हैं। आचार्य चन्द्रदेव प्रभृति कवि इसी श्रेणी के हैं। उन्होंने वह कहा जो उनके हृदय की अनुभूति थी और उसकी शैली में भी प्रच्छन्नता और परोक्षता के स्थान पर प्रत्यक्षता और ऋजुता मिलती है। ऐसे ही कवियों ने इस क्षेत्र के काव्य को शेष हिन्दी काव्य से सम्बद्ध किया और इस प्रकार हिन्दी साहित्य में जो कुछ हो रहा था उसका संक्षिप्त संस्करण यहां भी देखने को मिलता है।

देश की स्वतन्त्रता के साथ जब राज्य को भी स्वतन्त्रता मिली तो अनेक हृदय सहसा अनेक दिशाओं में बह चले और इसलिए अनेक काव्य विषयों पर कविता लिखी जाने लगी। जिन राजनैतिक विषयों को छूना तब पाप था उन पर एक उन्मुक्त वाणी वैभव प्रकट हुआ। सामाजिक विषयों में भी अनेक [illegible] पाये। कवि के अभिमान का हर्ष और उल्लास, प्रेम और वेदना, घृणा और क्रोध आदि अनेक भाव अनेक दिशाओं में बह कर—अपने विशिष्ट [illegible] का छोर कर नव पथ निर्माण में अग्रसर हुए। [illegible] शैली के साथ वे सभी विषय और काव्य रूप [illegible] में प्रवेश नहीं पा सकते थे। इस प्रकार कविता की [illegible] मुखी होकर प्रकट हुई और इसमें एक ओर [illegible] किये और दूसरी ओर इस क्षेत्र में नवीन कविता का उदय हुआ।

बीकानेर के काव्य में प्रकृति चित्रण :—

मानव और प्रकृति का सम्बन्ध आदि काल से रहा है। जन्म से मृत्यु तक मानव प्रकृति के प्रांगण में ही सांस लेता है। प्रारम्भ से प्रकृति अपनी ममतामयी क्रोड में मानव को धारण करती है और उसका पोषण करती है। प्रकृति के नाना रूपों के साथ कवियों ने अपना रागात्मक सम्बन्ध स्थापित किया है और काव्य रचनाओं में प्रसंगानुकूल प्रकृति का उपयोग भी किया है। प्रकृति की गति विधि में मानव की गति विधि है और मानव की गति विधि में प्रकृति की गति विधि प्रारम्भ से ही मिलती है। कविता कामिनी के शृंगार में प्रकृति ने अपना सर्वाधिक योग प्रदान किया है। हिन्दी काव्य में छायावाद से पूर्व भी प्रकृति चित्रण हुआ है, पर इस काल में कवियों का मन प्रकृति – चित्रण में विशेष रमा है। इस काव्य में प्रकृति पर चेतनता का आरोप किया गया है।

बीकानेर प्रकृति की अनुदारता का क्षेत्र है। इसलिए जहां देश के अन्य कवियों ने सरिता, निर्झर और पर्वतों के सौन्दर्य पर मुग्ध होकर प्रकृति का मनोहारी वर्णन किया है वहां बीकानेर का प्रकृति प्रेमी कवि यहां के रेत के बड़े-बड़े टीबों पर ही मुग्ध हो जाता है और उन्हीं में उसे सौंदर्य दिखाई देता है :—

"तुम इन्द्र पुरी से सुन्दर थे
मेरे मरुधर के सुखद ग्राम
तेरे रेतीले धोरों पर
उल्लास बिछाती सुबह शाम।"[1]

बीकानेर में श्रावण का महीना बहुत ही सुहावना माना जाता है।[2] इस महीने में यहां की मरुधरा पर एक विशेष प्रकार का सौन्दर्य सा छा जाता है, चारों ओर की हरियाली प्रत्येक के लिए सुखदायी होती है और इस हरियाली से बीकानेर का कवि भी अछूता नहीं रहा है। राजस्थान में "सावणियारी तीज"

---

१. मानदान मनुज – विप्लव गान, पृष्ठ—३३–३४
२. यहां के श्रावण मास के लिए एक लोकोक्ति भी प्रसिद्ध है :—
"सियाळो खाटू भलो, ऊनाळो अजमेर,
नागौर तो नित रो भलो, सावण बीकानेर।"

प्रकृति पर से मानवीकरण के पर्दे को हटा कर उसको स्वतन्त्र रूप में भी चित्रित किया है:—

"तरु तरु पर है हिममय छाया
शाद्वल है बसन्त लहराया"[1]

इसके अतिरिक्त भी इन कवियों ने प्रकृति को अन्य रूपों में भी चित्रित किया है। छायावादी काव्य में प्रकृति के जिन रूपों का चित्रण हुआ है उन सभी रूपों का वर्णन बीकानेर के काव्य में हुआ है। इस प्रकृति चित्रण की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें स्थानीय रंग की स्पष्ट झलक दिखाई देती है।

नारी एवं प्रेम का चित्रण

नारी और प्रेम को लेकर विश्व में जितना साहित्य रचा गया है उतना अन्य विषयों को लेकर नहीं लिखा गया। वीर गाथा काल में नारी युद्ध का केन्द्र बिन्दु थी। उस समय के अधिकतर युद्ध नारी को लेकर ही हुए हैं। भक्ति काल में नारी को विषयासक्ति का मूल हेतु होने से उससे विरक्त होने की ओर कवियों ने संकेत किया है। रीति काल में कवियों की दृष्टि उसके नख-शिख से दूर नहीं गई। नवीन काल में छायावादी कवियों ने नारी के सौन्दर्य एवं प्रेम का वर्णन किया है, जिसमें सूक्ष्मता और कोमलता है।

नारी का सौन्दर्य अनमोल है। बीकानेर का कवि कली में व्याप्त लाली का कारण नारी सौन्दर्य ही मानता है:—

"कितनी सुन्दर हो, भोली हो, बड़ी निराली
कली-कली पर सुध तुम्हारी निखरी लाली"।[2]

कवि को आज का फैशन पसन्द नहीं है वह तो अवगुण्ठन को ही पसन्द करता है:—

"लाज तुम्हारी बची रहे प्रिये! अवगुण्ठन में ही शरमाओ"।[3]

नारी के सौन्दर्य वर्णन का रूप भी बदल गया है। कवि लोग बहुत पहले से नारी के अंगों की उपमा कमल खंजन पक्षी आदि से देते आये हैं। पर

---

१. आचार्य चन्द्रमौलि— वीथिका—पृष्ठ ७८
२. माणक चन्द रामपुरिया— संदीप्ति— " ११०
३. आचार्य चन्द्रमौलि— वीथिका— " २६

नारी है व... ... यह ... ... में इसी सभी हुआ है। बीकानेर
कवियों ने नारी के सभी ही रूपों का चित्रण किया है परन्तु अधिकतर उन में इसी रूप को है। अन्य रूपों का चित्रण तो केवल राष्ट्रीय कविता में हुआ है यहां नारी का प्रधान रूप राष्ट्रीय भावना से ओत-प्रोत है और वह देश के लि[illegible] अपने भाई, पति पुत्र सभी को न्यौछावर होने को कहती है। ऐसी कविता में मा[illegible] अपने बेटे से कहती है —

> "बेटा मेरी कुख उजागर तब ही होगी
> जब तू मेरी भारत मा पर मर मिट जाएगा।"2

मानव को नारी कभी देवी के रूप में दिखाई देती है तो कभी नागिन के रूप में और कभी अन्य रूपों में। इतने अधिक रूपों के कारण वह नारी को समझने में असमर्थ है और वह सदैव मनुष्य के लिए एक पहेली बनी हुई है, जैसे —

> "कौन हो तुम ?
> जो कभी तो सुरभिमय करती
> धरा को, गगन को, कदराओ को—
> अपनी केसरिया–कस्तूरी गंध से,
>
> × × ×

---

1. रामदेव आचार्य — अक्षरों का विद्रोह — पृष्ठ ७३
2. मेघराज मुकुल — अनुगूंज — " ३८

"कैसी तुम सुन्दरी रही तुम कल की
जैसे बंद घर के कमरों में भरी हो सुगंध,
* * *
क्यों तुम बसन्त की माती
[illegible] के [illegible] हम [illegible]
जैसे हो गई हो [illegible]

इसके अतिरिक्त आज के कवि ने भी नारी को स्वतन्त्रता का समर्थन किया है —

'भारत-माता और नारी
ये समान-धर्मी सदा है
दोनों एक देश भारत के।
भारत-माता-समान नारी,
नारी सदैव भारत-माता।'[2]

स्वतन्त्रता प्राप्ति के उपरान्त नारी की समानता का प्रश्न उठा और उसे संविधान से समानताधिकार का अधिकार प्राप्त हुआ। इससे नारी आत्म-निर्भर हो गई और साथ ही उसमें पुरुष से आगे बढ़ने की भावना प्रबल हुई। अब कवि का दृष्टिकोण भी परिवर्तित हुआ और वह उसे प्रतिद्वन्द्वी के रूप में देखने लगा —

"साथ-साथ रह मुझे बहुत अब चले विरुद्ध दिशाओं को हम
प्रतिद्वन्द्विनी बनो तुम नर की, अधिकारों को तुम अपनाओ"।[3]

अधिकार-लिप्सा में डूबी हुई आज की नारी मानव से हर क्षेत्र में आगे बढ़ना चाहती है।

नारी वर्णन के साथ-साथ बीकानेर के कवियों ने प्रेम का चित्रण भी किया है। प्रेम जीवन की सबसे सुन्दर, सबसे सबल और सबसे अनोखी अनुभूति है। प्यार का आनन्द बहुत मधुर होता है:—

"मधुर है प्यार की माया
जिसे कहता सदा कोई

---

१. हरीश भादानी— सपन की गली— पृष्ठ २३-२४
२. रामदेव आचार्य — अंगारों का विद्रोह— " ७२
३. शम्भूदयाल सक्सेना— नीहारिका— पृष्ठ ८१

"मेरे देश के मजार को सम्मान दिया है
युग-शांति और [illegible] का वरदान दिया है
माना कि वे रहा है सद हमेशा वरद स
इस पर भी इसने चैन का सामान दिया है"2

स्वतन्त्रता के उपरान्त देश पर दो देशों के आक्रमण हुए हैं और इन [illegible] अवसरों पर बीकानेर के कवियों ने बहुत सी कविताएं लिखी हैं। अपनी म[illegible] भूमि की रक्षा करने के लिए तथा वीरों में नया उत्साह भरने के लिए कवियों [illegible] अपनी मातृ-भूमि पर न्योछावर होने वाले वीरों को याद किया है :—

"यहां शिवाजी, लक्ष्मी बाई, बलिदानों की बड़े कहानी
यह प्रताप की जन्म भूमि, सपनों को दे रही जवानी।"3

वह अपनी मातृ-भूमि पर आंख उठाने वाले शत्रु को कुचल देना चाहता है। वह अपने वीरों से यही कहता है —

"नेफा और लद्दाख बुलाते
आज तुम्हें भारत के वीर,
आते हुए लुटेरों की तुम
बढ़ कर देना छाती चीर।"4

आक्रमण के समय की कविताओं में शत्रु को भी चेतावनी दी है और

. शम्भूदयाल सक्सेना – नीहारिका—
बल्लभेश दिवाकर – मैं एकाकी नहीं चलूंगा
३ मेघ राज मुकुल — अनुगूंज पृष्ठ १३
४. मोम केवलिया " ३३

उस उसकी दुर्बलता और भारतवर्ष से युद्ध करने पर क्या फल मिलेगा यह
पहले से ही बता दिया है। कवि अपने शत्रुओं को कोसता है :—

"जाने कौन सी मां ने जन्म दिया था तुमको,
जाने किस धरती ने पाला तुम्हारा अंग

+ +

भूल तुम्हारा जनक था तुम्हारी है जननी
कपट ज्ञान में गर्भ धारणा हुई तुम्हारी"।

कवि अपने शत्रु को पहले से ही सचेत कर देना चाहता है :—

"सुन लो
मगर सुनेगा विस्फोट को
रोक नहीं तुम पाओगे फिर
बढ़ते हुए जवानों को"[२]

इस प्रकार से बीकानेर में बहुत सी राष्ट्रीय कविताएं लिखी गई है। काल में देश के प्रत्येक नागरिक का ध्यान देश की ओर रहता है व्यक्तिगत स्वार्थों को छोड़ दिया जाता है। इस दृष्टि से कवियों का कर्तव्य हो जाता है कि वे भी अपने देश की जनता में राष्ट्रीय भावना का करें। जिससे जनता देश की सुरक्षा में अधिक से अधिक योग दान कर बीकानेर के कवियों ने भी इन दोनों अवसरों पर अपने कर्तव्य का पालन कि और नागरिकों में राष्ट्रीय भावना का विकास भी किया है।

शोषक-शोषितों के प्रति प्रगतिवादी दृष्टि

यहां के कवि ने समाज को दो वर्गों में रख कर देखा है—शोषक एवं शोषित वर्ग। शोषक वर्ग पूंजीवादी व्यवस्था को बनाये रखना चाहता जब तक पूंजीवादी व्यवस्था बनी रहेगी तब तक शोषण भी चलता रहेगा जब तक शोषण चलता रहेगा तब तक शोषित वर्ग अपना जीवन सुख से व्यतीत नहीं कर सकता। ऐसी स्थिति में शोषक और शोषितों के बीच गहरी खाई बनी रहेगी। यहां के प्रगतिवादी कवि यह नहीं चाहते कि एक व्यक्ति तो वातानुकूलित

१. मेघ राज मुकुल — अनुगूंज — पृष्ठ ४५
२. ओम केवलिया — शबनम — " ८१

ओं में विश्राम करे और दूसरा सड़कों पर भोजन और वस्त्र के अभाव में सर्दी में ठिठुरता रहे। इस प्रकार से एक मनुष्य का खून चूस कर दूसरा मनुष्य सुख की नींद सोता रहे, ऐसे व्यक्ति इन कवियों की दृष्टि में मानव कहलाने के योग्य नहीं :—

"मानव होकर जो दानव का
है रूप लिये फिरते कराल।"[1]

कवि ऐसे मानव को कवि 'नरक कीट', वासना पंक में सने, कलुषदाग आदि ओं में देखता है:—

"अरे नरक के कीट।
वासना-पंक निमज्जित।

× × ×

"वसुधा के वपु पर रे, कलुष दाग तुम निश्चल
शोषक रे, दुर्दान्त-दस्यु, गर्वोन्नत प्रतिपल"।[2]

की दृष्टि में शोषकों की स्थिति कौए और चील से श्रेष्ठ नहीं है —

"कौए और चील से शोषक,
भूखों का ले मांस उड़ रहे।
प्रभुता के वरदान दीन की
मांस खींच कर पेट भर रहे।"[3]

इन शोषकों का वीभत्स चित्र प्रस्तुत करता हुआ कहता है कि ये मानव को खाने तथा लोहू पीने वाले हैं —

"क्या कभी सुना भी है तुमने
मानव, मानव को खाता है,
पीकर लोहू, चाटकर जीभ,
ए[illegible] [illegible]।"[4]

[illegible] हो रहा है— पृष्ठ २६
[illegible] " ३२
[illegible] " ३८

इस प्रकार से इन कवियो को समाज के उस वर्ग से अत्यन्त घृणा है जो समाज के दूसरे वर्ग का शोषण करता है और उन्हे मानव नही समझता है। इनकी दृष्टि मे सबसे नीच व्यक्ति शोषक है। इसलिए इन्होने अपनी कविताओं मे इनके प्रति खूब घृणा व रोष प्रकट किये है।

इन प्रगतिवादी कवियो ने जितनी अधिक घृणा और रोष शोषक वर्ग के प्रति प्रकट किया है, उतनी ही शोषित वर्ग के प्रति सहानुभूति दिखाई है और कारुणिक स्थिति का चित्रण किया है। शोषण से बढकर मानव के लिए और कोई अभिशाप नही है। आज के युग मे शोषण की चक्की के पाटो मे पिसने वाले मजदूर, किसान, और पीडितों की विपन्न स्थिति का इन्होने वर्णन किया है:—

"नंगी पडी धरा थी पहले, भूख स्वय अब नंगी है।
मा की छाती से चिपटे, शिशु को जीने की तंगी है॥
प्यासी आँखें बता रही है, खून चूसता जाता है।
नंगा भूखा ऐयाशी पर, आज थूकता जाता है॥"[1]

शोषक वर्ग द्वारा शोषित वर्ग को इतना अधिक कुचल दिया जाता है कि उसके बडे से बड़े शोषण का भी विरोध नही कर सकता। ऐसी स्थिति मे शोषित वर्ग अपनी विवशता के कारण उनके शोषण को सहन करता रहता है:—

"देखो वह शैशव पिसता है,
शोषण के तीखे आरो मे,
देखो वह यौवन बिकता है
गली-गली मे बाजारो मे।"[2]

शोषित अपग है और विवश है वे तो केवल आह भर सकते है उसी का प्रभाव कवि ने दिखाया है:—

"शोषित जन के उच्छ्वासों मे
चढ बोल रहा बढ़ती अम्बर।"[3]

इस प्रकार से शोषितो का जीना तो वैसे ही बहुत दूभर हो जाता है और उनका

---

१. हंसराज मधुप— उभार—
२. बालदास देवाशय मधुर— दिग्मडल—

"कपट विलास के नेत्रो ..
मादक-स्वप्न फहराती है
दलन व ज्ञान-मान हरण
कर मानवता मरती है।"2

...योनियों के बरबस नाश के साथ-साथ शोषक का प्रभाव नारी के चारित्रिक पतन पर भी दिखाया गया है। उनके इस हीन कार्य के पीछे गरीबी का हाथ अवश्य रहता है। अपनी पेट की ज्वाला को शान्त करने के लिए उन्हें यह सब कुछ ...रना पड़ता है और उसको बढ़ावा देते हैं पैसे वाले —

"वे उस दुकान पर जाते हैं
जिस पर यौवन बिकता रहता है
पैसे-पैसे के बदले में
जो मिट्टी में मिलता रहता है।"3

× × ×

...प का बाजार लगता है यहां पर, नित नई होकर बिका करती जवानी।"4

...प्रकार इन कवियों ने अपने चारों ओर तथा देश में व्याप्त शोषक का चित्रण

...चार्य चन्द्र देव— पंडितजी गजब हो रहा है— पृष्ठ ५२

...लदान देपावत मनुज— विप्लवगान— " ३१

" " " " " ३६

...चार्य चन्द्रदेव पंडितजी गजब हो रहा है— पृष्ठ २७

किया है।

रूढ़ियों एवं परम्पराओं का खंडन तथा सामाजिक क्रान्ति की भावना

बीकानेर के प्रगतिवादी कवियों ने सामाजिक और धार्मिक रूढ़ियों का खंडन किया है। समाज में जितनी भी रूढ़ियां एवं परम्पराएं हैं, ये सभी कवि इनसे मुक्त होना चाहते हैं। वास्तव में इस विज्ञान के युग में इन रूढ़ियों का तर्क सम्मत समाधान नहीं मिलता है इसलिये ये पग-पग पर प्रगति बाधक प्रतीत होती हैं। अतः जब समाज उनको त्याग कर नवीन पथ का अनुसरण करता है तब कवि भी आनन्दमय स्वर में कह उठता है—

"जीर्ण-पुरातन-परम्परा से पल्ला छूटा।
आज व्योम का प्रथम बार ध्रुवतारा टूटा।"[1]

× × ×

शंकित सो बैठी पुरानी मान्यताएं
आ रही संघर्ष करती सफलताएं।।[2]

ये कवि लकीर के फकीर नहीं हैं। मूर्ति पूजा, धर्म के अन्य उपकरण इनकी दृष्टि में तुच्छ हैं। वे इन सबको मिटाना चाहते हैं। वे मन्दिर में भगवान की मूर्ति को पत्थर से अधिक कुछ नहीं समझते —

'मन्दिर में जो बसता ईश्वर
वह तो पत्थर है पत्थर है,"[3]

बड़ी-बड़ी सभाओं में पंडित जी बैठे-बैठे भगवान के रूप का वर्णन करते रहते हैं परन्तु बीकानेर का प्रगतिवादी कवि इस रूप को स्वीकार नहीं करता है। उनके अनुसार तो आज भगवान की स्थिति कुछ इस प्रकार की हो रही है—

"अब बिक गया है ईश्वर का
उसका मजहब, उसका मन्दिर,
मर गया आज,
कर रहे बड़े बीहड़ [illegible]

---

१. मेघराज मुकुल — उमंग — पृष्ठ [illegible]
२. ,, ,, ,, ,, [illegible]
३. [illegible] — [illegible] — पृष्ठ [illegible]

मुजदंड सूख बलहीन हुए—
छाती भीतर को सिकुड़ गई।"[1]

इन कवियों की दृष्टि में यदि आज किसी का महत्व है तो वह है मानव का। मानव स्वयं अपना भगवान है। वह स्वयं सब कुछ कर सकता है। उसे ईश्वर पर निर्भर रहने की कोई आवश्यकता नहीं है:—

"मानव खुद अपना ईश्वर है
साहस उसका भाग्य विधाता"[2]

रूढ़ियों से ग्रस्त मानव को मानव एवं पत्थर की मूर्ति को भगवान स्वीकार नहीं करना चाहता है:—

"कायर रूढ़िवाद का कैदी
क्या उसको इन्सान समझ लूं ?
परिवर्तन-पथ का वह पत्थर
क्या उसको भगवान समझ लूं ?"[3]

इसलिए कवि इस पत्थर के भगवान को पूर्णतया समाप्त ही कर देना चाहता है जिससे मानव गुमराह एवं आलसी न बन सके —

"उस पत्थर के परमेश्वर का अभिमान मिटाने आया हूँ।"[4]

ये कवि धर्म, समाज तथा उस तथाकथित ईश्वर द्वारा निर्मित नियमों और उपनियमों को छिन्न-भिन्न कर देना चाहते हैं। इनके लिए मन्दिर, मस्जिद, गीता और कुरान आदि का कोई महत्व नहीं है और न ही ये कवि स्वर्ग, नरक, आत्मा-परमात्मा आदि में विश्वास रखते। इन सभी बातों का ये घोर विरोध करते हैं और इनका उन्मूलन कर देना चाहते हैं। विद्रोह करने में तो यमदूत से भी नहीं डरते —

"ठहरो, ठहरो—मैं बोल उठा
मैं नरक भला क्यों जाऊंगा।"[5]

---

1. आचार्य चन्द्रदेव —
2. मालदास देवावन मनूर — पढ़िनवी नजब हो रहा है — पृष्ठ ३
3. ,, ,, ,, [illegible] — ,, २१
4. ,, ,, ,, ,, — ,, ३४
5. आचार्य चन्द्रदेव — नरक [illegible] — ,, ३४

इस प्रकार से ये कवि एक ओर तो समाज में व्याप्त रूढ़ियों, परम्परा और धार्मिक पाखण्डो का विरोध करते हैं और उन्हें समाप्त कर देना चाहते हैं, दूसरी ओर धार्मिक शोषकों को भी समाप्त कर देना चाहते हैं। इन सब के लिए सामाजिक क्रान्ति की आवश्यकता है। इसके साथ ही ये किसी भी प्रकार के समझौते या हृदय परिवर्तन में विश्वास नहीं रखते। ये फोड़े पर मरहम लगाकर उस अन्दर दबाना नहीं चाहते, अपितु उसे जड़ से नष्ट कर देना श्रेष्ठ समझते हैं। ये गीत भी गाते हैं तो प्यार के नहीं, अपितु प्रलय के गाते हैं:—

"मैं प्रलय वह्नि का वाहक हूँ
मिट्टी के पुतले मानव का ससार मिटाने आया हूं।'[1]

और इस कार्य में वह अन्य सहकर्मियों को भी सहयोगी बनाना चाहता है—

"लोहित मसि में कलम डुबा कर
कवि तुम प्रलय छन्द लिख डालो।'[2]

किसी भी प्रकार की क्रान्ति करने से पूर्व उस क्रान्ति की तैयारी करना आवश्यक हो जाता है, इसके लिए वह मानव को एकता के सूत्र में बांधना चाहता है, जिससे क्रान्ति सफल हो सके—

"आओ पहले इन हाथों में, वज्र थमाले एक साथ हम।
और धरा पर अंगद का सा, पांव जमाले एक साथ हम।'[3]

इस प्रकार कवि पहले समाज में क्रान्ति के लिए हर प्रकार की तैयारी करता है और वह चाहता है कि इस प्रकार की क्रान्ति हो जिससे पूंजीपतियों के ये गगनचुम्बी महल, धर्म के ठेकेदार, सामाजिक रूढ़िया और धार्मिक पाखण्ड आदि सभी नष्ट हो जाय। इन सब की समाप्ति के लिए इस क्रान्ति के अतिरिक्त दूसरा कोई मार्ग भी नहीं है, जिसमें समाज इन सब बुराइयों से, शोषक और शोषित की खाई भी दूर करने का यह एक ही उपाय है।

बीकानेर में धार्मिक प्रपंच कुछ अधिक है। अतः इन कवियों ने इन धार्मिक पाखण्डो और आडम्बरों को समाप्त करने का प्रयत्न किया है। साथ ही में कवियों का ध्यान देश में व्याप्त शोषण की ओर भी है। अत. देश में व्याप्त

---

१. मानदान देपावत मनुज— विप्लवगान— " ५५
२. " " " " ५५
३. मेघराज मुकुल— उमग— " ६

जीवन को भी ये कवि स्पष्ट करना चाहते हैं।

सामयिक वस्तुओं का चित्रण :—

समय परिवर्तनशील है। समय के साथ-साथ समाज भी बदल जाता है। एक समय में जो बात किसी समाज के लिए आदर्श होती है वही बात कुछ समय बाद उसी समाज के लिए अभिशाप बन जाती है। इस दृष्टि से यदि हम हिन्दी साहित्य के इतिहास पर दृष्टि डालें तो यह पूर्णतया स्पष्ट हो जायेगा कि किस प्रकार से कविता के विषय बदलते जा रहे हैं। वीर गाथा काल में कवियों की लेखनी राजाओं की वीरता और युद्ध वर्णन से दूर नहीं हटी और भक्ति काल में वही लेखनी भगवान के गुणों के वर्णन में प्रवृत्त हुई। रीतिकाल में अपने आश्रयदाता की प्रशंसा और नख-शिख वर्णन में कवियों ने अपनी सफलता समझी। इस समय की कविता एक वर्ग की कविता थी। इसके अतिरिक्त आधुनिक काल की कविता जनता की कविता बनी। भारतेन्दु युग की कविता में राष्ट्रीय भावनाओं का वर्णन है, तो द्विवेदी युग में समाज सुधार कविता का विषय बना। छायावाद में कवि कल्पना लोक में खो गया और प्रगतिवाद में वह तोड़-फोड़ में ही लगा रहा।

इस समय का कवि समसामयिक वस्तुओं तथा व्यापारों का वर्णन कर रहा है। आज छोटी से छोटी वस्तु भी कविता का विषय बनी हुई है। बीकानेर के कवियों ने अपने चारों ओर की वस्तुओं का वर्णन अपनी कविताओं में किया है। यहां का कवि चाय का, रेलवे स्टेशन की भीड़, सड़क पर चलती मोटरगाड़ी, होटल आदि का वर्णन कर रहा है। चीनी के बर्तनों का प्रयोग आज काफी बढ़ रहा है तो कवि ने उसी का वर्णन कर दिया है।

''चीनी मिट्टी के बर्तनो
मानता हूं
तुम्हारा दूधिया रंग
किनार की सुनहरी बार्डर
बेल बूटों की डिजाइन
ग्राहक को
अपनी ओर खींच लेती है।''[1]

---

१. शंकर [illegible]
—[illegible] कविता से

कवि कटी हुई पतंग और उसके पीछे दौड़ते हुए बच्चों का ही वर्णन करने लगता है :—

> "कटी पतग
> पीछे दौड़ते बच्चे।"[1]

आज कवि यह मानता है कि संसार में कोई भी वस्तु निरर्थक नहीं है। इसीलिए कवि भी वस्तु के वर्णन करने में संकोच नहीं करता है :—

> "मैं एक सिगरेट हूँ
> मुझे पीते है लेखक, कवि या वियोगी,
> × × ×
> मुझे पीते हैं बाबू, लाला या अफसर
> शौक फरमाने के लिए,
> रोब जमाने के लिए,
> शान दिखाने के लिए।"[2]

आज इस समय में चाय का महत्व बहुत ही बढता जा रहा है। मनुष्य का जीवन ही चाय मय बन गया है। इसलिए कवि ने चाय को भी अपनी कविता का विषय बना लिया है और उसी का वर्णन उसने अपनी कविताओं में किया है :—

> "चाय की ठंडी सी प्याली का
> पकड लेता हूँ हाथ"[3]

संस्कृति और परम्पराओं जैसे गम्भीर विषयो पर भी यहाँ के कवियों ने प्रतिदिन के जीवन के आस पास बिखरे साधारण से साधारण बिम्बों द्वारा व्यंग किया है :—

> "घिर गया है
> परम्पराओं का बुड्ढा शरीर
> कि जिसे

१. शिवराम पुनिया की एक कविता से।
२. रामदेव आचार्य — अंगारों का विद्रोह — पृष्ठ ४२
३. नन्द किशोर आचार्य —संवेदन दर्शन — " ११

[illegible] —

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

इस प्रकार की बौद्धिकता को देख कर आज के कवियों की अहम् भावना स्पष्ट रूप से सामने आ जाती है। यह ठीक है कि कविता को समझने के लिए पाठक को कुछ प्रयत्न करना पड़ता है परन्तु इसका यह तो अर्थ नहीं कि पाठक चाहे जितना भी प्रयत्न करे तो भी इन कविताओं का अर्थ न समझ सके, और जब पाठक इन कविताओं का अर्थ नहीं समझता है तो कवि पाठक की बुद्धि की कमजोरी बताकर अपने महत्त्व को स्थापित करता है। वास्तव में देखा जाय तो वह कविता ही निरर्थक है जिसे कोई पाठक समझ न सके। बौद्धिकता की यह बात बीकानेर के कवियों में ही नहीं अपितु हिन्दी के अन्य कवियों के साथ भी है।

वैयक्तिकता एवं अहं की भावना —

आज के कवि की आत्मा में अहंनिष्ठ व्यक्तिवाद इस रूप में बद्धमूल है कि वह सामाजिक जीवन में किसी प्रकार का सामंजस्य और गठबंधन नहीं कर सकता। कवि अपने समाज और आस पास को छोड़कर अधिकतर अपनी ही बात करता है। इसका अर्थ यह नहीं कि यह वैयक्तिकता की प्रधानता और किसी काव्य धारा में नहीं हुई परन्तु उसका रूप यह नहीं था, क्योंकि उस वैयक्तिकता में लोकव्यापक भावना भी थी। परन्तु आज का कवि तो अपने आप को समाज से भी दूर समझता है और अपनी ही बात करता है समाज के प्रति वह अपने उत्तरदायित्व को स्वीकार करने को तैयार नहीं है। इस बात में बीकानेर का कवि दूर नहीं है। कवि अपनी कविता में व्यक्तिगत पीड़ा का वर्णन कर रहा है —

अभी अभी
अध्ययन करके उठा हूँ

ऐंठ गई रीढ़ की हड्डी
पसलियां दुख रही हैं।"[1]

परन्तु इससे भी अधिक बात यह है कि कवि इस युग में अपने जन्म को ही एक अच्छी घटना और इस सदी का सबसे उज्ज्वल दिन मानता है। यह निरा व्यक्तिवादी दृष्टिकोण है।

"हमारे जन्म से अच्छा
और क्या घटित होता
इस सदी में।
+ + ×
इस सदी का
एक केवल एक उजला दिन
कि जनमे हम।"[2]

निष्कर्ष रूप से यह कहा जा सकता है कि इस प्रकार की यह भावना बीकानेर के आज के कवि में मिलती है। और वह अपने आप को ही सब कुछ समझता और उसकी दृष्टि में दूसरे का जीवन कुछ भी नहीं है।

अनास्था और आस्था का स्वर —

बीकानेर के आज के कवियों की कविताओं पर यदि एक दृष्टि डालें तो यह स्पष्ट हो जायेगा कि कुछ कविताओं में तो आस्था का स्वर है और कुछ में अनास्था का। इन कवियों का इस संसार, इस जीवन आदि से कोई सम्बन्ध नहीं है। वे सब इस जीवन से ऊब चुके हैं। उन्हें घुटन होती है इस संसार और जीवन से। अनास्था का यह स्वर इस कविता में द्रष्टव्य है —

"जिन्दगी केवल [illegible] है
कि जिसको
[illegible] मेरे मित्र
[illegible] मेरे मित्र"[3]

कवि को इस संसार में कुछ भी दृष्टिगोचर नहीं होता —

"बचा ही क्या है इस बौनी दुनिया में ऐ दोस्त
जिसे प्यार किया जा सके ।"[1]

आज इस संसार में उसका कहीं भी तो मन नहीं लगता । न वह पढ़ सकता है और न वह रेडियो सुनना चाहता है :–

'कि कहीं भी जी नहीं लगता
पढ़ते तो ध्यान कहीं और जाता है
×   ×   ×
मन न रेडियो सुनता है
मन न सिनेमा देखना चाहता है
घूमो तो घूमना नहीं चाहता"[2]

कुछ ऐसी भी कविताएं हैं जिनमें अनास्थावादी स्वर ऊपरी है, उसके मूल में कवि का आस्थावादी स्वर भी है ।

'लेकिन जो भी मुझे छलेगा
उस अपने ही धक को
अस्तित्व में समाप्त कर दूंगा"[3]

परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि धर्मवीर भारती की कविता में केवल अनास्था का ही स्वर हो, उसमें आस्थावादी स्वर भी है । यहां का कवि नगर सभ्यता में आक्रान्त होते हुए भी कभी-कभी कविता में भटक जाता है, परन्तु उसकी आगे चौराहे पर आस्था के स्वर को देखनी ही पड़ती है । यह उसकी आस्था का प्रमाण है –

"[illegible]

आस्थावादी स्वर में कवि पर पड़ी हुई प्रत्येक चोट स्वयं टूट जाती है इस तरह से वह कुछ नहीं बिगाड़ सकती :-

"फिर जब अपने चारों ओर देखता हूँ
तो पाता हूँ
कि मुझ पर पड़ी प्रत्येक चोट
स्वयं टूट गई है
बिखर गई है"[2]

यहां के कुछ कवियों में इतनी आस्था है कि 'कभी कुछ' सुरज (आस्था) को देखने के लिए वर्षों से राहु द्वारा ग्रसित सूरज की कालिमा को मिटाने के लिए भी वह अपने खून तक को फेंकते हैं —

"फेंकते हैं खून
कि कहीं कुछ सुरज तो दीखे
वर्षों से काले पड़े सूरज पर
कुछ लाल छींटे तो पड़े"[3]

और भी कविताओं में आस्थावादी स्वर मिल जाता है । यह आस्थावादी स्वर ही ऐसा है जो दुनिया में रहने योग्य और जिन्दगी को जीने योग्य बना देता है । इस प्रकार से बीकानेर के काव्य में अनास्था और आस्थावादी दोनों स्वर ही मिलते हैं परन्तु आस्थावादी स्वर ही यहां पर अधिक मुखरित हुआ है ।

इस प्रकार से बीकानेर जिले में इस आलोच्य काल में काव्य की विभिन्न प्रकार की प्रवृत्तियों का विकास हुआ है । एक ओर जहां प्रकृति-चित्रण और नारी को लेकर कविताएं लिखी गई तो दूसरी ओर धार्मिक पाखण्ड सामाजिक रूढ़ियों और परम्पराओं के खण्डन का भी प्रयास किया है । इसी प्रकार जहां राष्ट्रीय कविताए लिखी गई वहा प्रत्येक छोटी से छोटी वस्तु को भी कविता का विषय बनाया गया है और साथ ही वहां हंसी के फुव्वारे भी फेंके हैं । आज बीकानेर के काव्य में आधुनिक हिन्दी काव्य की सभी प्रवृत्तियों को देखा जा सकता है । इस प्रकार से बहुत बाद में प्रारम्भ होने वाला काव्य काव्यों के साथ चल रहा है ।

२— रामदेव आचार्य — अक्षरों का विद्रोह
३— हरीश भादानी — सुलगते पिण्ड

रसः—

यद्यपि रस का विवेचन काव्य के भाव पक्ष के अन्तर्गत जाता है । परन्तु हम उसका विवेचन काव्य के बहिरंग पक्ष के अन्तर्गत हे रहे हैं।

रस को काव्य की आत्मा माना जाता है । "वाक्यं रस काव्यम्"[1] सर्व प्रथम साहित्य में रस के महत्व का प्रतिपादन करने वाले मुनि है। साहित्य दर्पण में रस की परिभाषा इस प्रकार से दी है :—

"विभावेनुभावेन व्यक्तः सचारिणा तथा ।
रसतामेति रत्यादि स्थायीभाव. सचेतसाम्"

अर्थात् सहृदय-हृदय में (वासना रूप से विराजमान) रत्यादि रूप स्थायी जब (कवि वर्णित) विभाव, अनुभाव और व्यभिचारी के द्वारा अभिव्यक्त उठते हैं तब आस्वाद अथवा आनन्द रूप हो जाते है और उसे रस कहा है ।[2] रस नौ माने गये है ।

"शृंगार हास्य करुण रौद्र वीर भयानका:
बीभत्सोऽद्भुत इत्यष्टौ रसा शान्तस्तथा मतः"[3]

शृंगार, हास्य, करुण, रौद्र, वीर भयानक, बीभत्स, अद्भुत और शान्त माने गये हैं।

रस की इस विवेचना के बाद हमें यह देखना है कि बीकानेर के में कौन कौन से रस आये हैं। शृंगार रस को रसराज माना जाता है।

शृंगार रस.—

शृंगार रस का मूल आधार रति या प्रेम होता है । इसी के आधार पर इसकी सर्वव्यापकता सिद्ध होती है कि प्रेम एक ऐसी वृत्ति है कि जिस सपरण पशु-पक्षियों तक में देखा जाता है। प्रेम के विभिन्न रूप होते हैं पर शृंगार के अन्तर्गत जिस प्रेम की अभिव्यक्ति होती है वह दाम्पत्य प्रेम कहलाता है। जहां दोनों प्रेमियों का मिलन होता है वहां संयोग शृंगार और जहां दो

१— साहित्य दर्पण प्रथम परिच्छेद — — ११
२— " " " "
" " " "

एक दूसरे से दूर रहते है वहाँ वियोग शृंगार होता है।

संयोग शृंगार मे युगल प्रेमियो की विभिन्न क्रीडाए, मनोविनोद, रति प्रसंग, संयुक्त दिनचर्या आदि का वर्णन होता है। रति का प्रमुख कारण सौंदर्य हुआ करता है। यही कारण है कि कवि लोग अपने शृंगार रस के परिपाक मे सौंदर्य का मनोमुग्धकारी वर्णन करते हैं। बीकानेर के काव्य मे इस प्रकार ग शरीर का स्थूल वर्णन कम हुआ, मिलन वर्णन ही अधिक हुआ।

"तारो की छाया के नीचे
मिला रहे मौन दो तरल हृदय,
भावो की उठती आंधी मे
जीवन का प्रारम्भिक अभिनय"[1]

इसी प्रकार प्रारम्भिक मिलन मे प्रेमी व प्रेमिका जीवन और संसार तक भूल जाते है।

"वह वय मदिर का प्यार विमल
मस्ती का मादक भवर जाल
जिसमे भूले है दो भावुक
जीवन का जग का हाल चाल"[2]

संयोग का अभाव वियोग है। आचार्यों ने चार प्रकार का वियोग माना है – पूर्वानुराग, मान, प्रवास और करुण। पूर्वानुराग का वर्णन यहा नही के समान है। मान का प्रसंग ही वर्णन हुआ है। यह वियोग क्षणिक रहता है —

"क्या पता, क्या कर रहा तुम आज मुझसे मान
स्वप्न सी पुकार, क्या हर बन गई पावस।

परन्तु यहा पर अधिक वर्णन 'प्रवास' का ही हुआ है। प्रवास काल मे संयोग की सुखदायी वस्तु कष्टमय बन जाती है —

[illegible] समान लगी बादली, मोरम [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] काट दिए है [illegible] [illegible] [illegible]"[3]

1— मालदान देपावत मधुप — [illegible] —
2— " " "
3— [illegible] चन्द रामपुरिया — [illegible] पृ० २१
4— शम्भूदयाल सक्सेना — [illegible] २३
[illegible] [illegible]

वियोग मे संयोगकालीन घटनाएं एक-एक करके मानस-पटल पर उभर और इनके स्मरण आने से वियोग और अधिक बढ़ता रहता है :—

"प्रथम मिलन में क्या जादू था हुए नयन जब चार सखी
तो क्षण-भर में रही मुग्ध-सी सकी न तन सम्हार सखी
तन को, मन को और प्राण को भूली मैं उस बार सखी
कितना सत्य और सुन्दर-सा था वह नश्वर प्यार सखी'[1]

प्रवास काल मे आंखों से आंसू बहते हैं और आहें निकलती रहती हैं और और पतझर ही दिखाई देता है .—

"आंसू बहते आहे उठती
पतझर दिखलाई देता है
यौवन का उन्माद कहा
मधुमास विदाई लेता है ?"[2]

अभिलाषा भी प्रवास की एक दशा है । इसमें अपने आप को प्रियतम पर न्योछा की आशा ही प्रमुख रहती है:—

"मलय पवन बन कर आयें वे
प्राणो की अमराई मे,
तो पिक बन कर कूक उठूंगी
उनकी मुदित बधाई मे ।"[3]

प्रवास मे न रात को नींद आती है और न दिन को चैन मिलता है और प्रतीक्षा मे आंखे पथरा जाती है ।

'रात रात भर रोती रही
दिन दिन भर जागती रही
पर वह न आया, सो न आया
प्रतीक्षा की आंखें पथरा गई
आतुरता के डैने शिथिल हो गये ।"[4]

१— शम्भूदयाल सक्सेना	नीहारिका	पृ० ५१
२— प्रेम बेवलिया	शबनम	,, ४
३— शम्भूदयाल सक्सेना	नीहारिका	,, १४
४— ,, ,,	रत्न रेणु	,, ३८

इस प्रकार के त्यौहार की अनेक हलचलों का वर्णन यहां के काव्य में मिल जाता है।

हंसी का जीवन में बहुत महत्व है। यह जीवन का एक विटामिन है। हास्य रस बीकानेर के काव्य में यत्र-तत्र बिखरा पड़ा है —

"जब दरवाजों में घुसे यार तिरछे ही अन्दर आते हैं।
अपनी खटिया को लातों से स्पेशल ही बनवाते हैं॥
और रहते हैं चाप नाक में बाजा बजता जाता है।
जब कभी बदन लेते करवट खटिया की सीमा गिर जाती"[1]

कवि खटमल का वर्णन करता हुआ हास्य बिखेर रहा है —

"पर मुरारजी खटमलजी तो सोने पर टैक्स लगाते है
वे स्वर्ण-नियन्त्रण करते है ये शयन-नियन्त्रण करते हैं
वे कामराज से डरते हैं ये काम रात को करते हैं
ये खटमल है या नट खटमल ये जिनके पीछे पड़ जाते
तो पिंड छुड़ाना मुश्किल बीमा के एजेन्ट नजर आते हैं "[2]

वीर रस की कविताए तो यहां बहुत लिखी गई। प्रायः प्रत्येक कवि ने ऐसी कविताए लिखी है —

'वतन के सिपाही सजग वीर प्रहरी
धरा ने तुम्हे आज फिर से पुकारा।
उठो वज्र हाथो मे हथियार साधो
तुम्हारा सदा मातृ भू को सहारा।"[3]

"विजय हमारी है" संग्रह इसी प्रकार की कविताओं का है। इनके अतिरिक्त वीभत्स रस की कविताए भी यहां लिखी गई है :—

"सर पिचक गया है ईश्वर का
उसका मस्तक उसका ललाट
सड़ गया आज
कर रहे वहां कीड़े किलबिल"[4]

१— भवानी शंकर व्यास	हास्यमेव जयते	पृ०	४४-४५
२— ,, ,, ,,	,,	,,	२
३— मेघराज मुकुल	अनुगूं ज	,,	२८
४— आचार्य चन्द्रदेव शर्मा	पहिचानो मजल हो रहा है		३

× × ×

मानव-मानव को खाता है
पीकर खोहू चाट कर जोम
फिर हंस कर दांत दिखाता है।"[1]

इन रसो के अतिरिक्त बाकी रस भी बीकानेर की कविताओं में देखे जा सकते हैं और साथ ही मे आज की कविता में बौद्धिक रस का समावेश हो गया है और इस रस की कविताओं की भी बीकानेर मे कोई कमी नही है।

बीकानेर के काव्य में अलकार:—

मनुष्य स्वभावतः सौन्दर्यो-पासक प्राणी है। वह प्रत्येक वस्तु मे स को ढूंढना चाहता है। इसी भावना से काव्य मे अलकार का आविर्भाव हुआ अलकार शब्द का अर्थ आभूषण है। जिस प्रकार से आभूषण नायिका का सौ बढाते हैं उसी प्रकार अलंकारो का प्रयोग भी काव्य की शोभा बढाने के किया जाता है। जैसा कि दण्डी ने लिखा है :—

"काव्य-शोभा करान् धर्मानलकारान् प्रचक्षते।"[2]

अर्थात् काव्य मे शोभा वृद्धि करने वाले धर्म को अलकार कहते हैं। काव्य अलंकारो का क्या महत्व है। इस बात को लेकर बहुत विवाद हुआ है औ संस्कृत साहित्य मे इसके दो वर्ग बन गये। एक वर्ग तो अलकारो को काव्य का अनिवार्य धर्म मानता है और अलकार विहीन काव्य को काव्य नही मानता। दूसरा वर्ग उन विद्वानो का है जो काव्य मे अलकारों को अनिवार्य नहीं मानता। अलंकारो को काव्य का अनिवार्य धर्म के रूप मे तो नही परन्तु इनके सहज प्रयोग काव्य मे रमणता का उत्कर्ष ही होता है। जिस प्रकार से स्वाभाविक सौन्दर्य आभूषणो की अपेक्षा नही होती और यदि उनका प्रयोग कर लिया जाय तो सौन्दर्य और अधिक बढ जाता है। ठीक इसी प्रकार यदि सत्काव्य मे अलकारो प्रयोग न किया जाय तो कोई अन्तर नही पडता और प्रयोग हो जाय तो की शोभा दुगनी हो जाती है।

अलकार शब्द मे, अर्थ मे तथा शब्द और अर्थ दोनो मे भी होते हैं। दृष्टि से अलकारों को तीन वर्गों मे विभाजित किया गया है :—

मानदान देरावर मनुज— विप्लवगान— पृ० ३६
काव्यदर्श ,, २–१

१—शब्दालंकार
२—अर्थालंकार
३—उभयालंकार

अलंकार की इस विवेचना के बाद हमें यह देखना है कि बीकानेर के काव्य में किस-किस प्रकार के अलंकार मिलते हैं।

आज अलंकार प्रधान कविताओं का युग नहीं है। परन्तु इसका यह अर्थ नहीं है कि अलंकारों का प्रयोग आज की कविताओं में होता ही नहीं है। अलंकारों का प्रयोग होता अवश्य है पर वह स्वाभाविक रूप से होता है। बीकानेर की कविता में भी यत्र-तत्र अलंकारों का प्रयोग देखा जा सकता है। अनुप्रास, उत्प्रेक्षा और उपमा आदि अलंकारों का प्रयोग यहां की कविताओं में विशेष रूप में मिलता है।

अनुप्रास :—

"मरमर मरमर ध्रु मरर मरर कुछ ऐसा करने लग जाती"[1]

जहां तक अनुप्रास अलंकार का प्रश्न है वह प्रत्येक कवि की कविताओं में मिल जाता है। उपर्युक्त उदाहरण में अनुप्रास के साथ-साथ ध्वन्यात्मकता (   ) भी उत्पन्न हुई है। उत्प्रेक्षा का एक उदाहरण यह है —

"दिन भर जो सूर्य चढ़ा नभ पर
जग पर शासन करता करता
उद्दण्ड प्रचण्ड पृथ्वी को पलपल
रौद्र भीति भरता भरता।
पगली सी बीते बीते में
मानो लवर का लेश नीरव।
उन्मीलित हो आया था।"[2]

परन्तु बीकानेर के काव्य में सबसे अधिक उपमा अलंकार का प्रयोग है और आज की कविता में भी इसका प्रयोग और अधिक बढ़ता ही जा रहा है —

"बादर के नभ पर घिर आई ज्यों [illegible]"[3]

१ [illegible]
२ [illegible]
३ [illegible]

"सीली लकड़ी सा
सुलग रहा मन"[1]

\+ \+ ×

"कुंआरे बाप सा भीरु सवेरा"[2]

इन अलंकारों के अतिरिक्त अन्य अलंकारों का प्रयोग भी यहां की कविता में हुआ है :—

रूपक :—

"बढ़ता आता था नर पिशाच"[3]

× × ×

"कल्पना की इस विस्तृत सड़क पर"[4]

सन्देह :—

"या गर्म घड़ा हो पनघट का या तू था एक [illegible] हो"[5]

पुनरुक्ति :—

"हरदी हरदी हरदी दुनिया [illegible] [illegible] है।"[6]

इसके अतिरिक्त [illegible], उल्लेख आदि अन्य अलंकार भी [illegible] कविताओं में देखे जा सकते हैं। [illegible] की कविताओं में जितने भी अलंकारों का प्रयोग हुआ है वह स्वाभाविक रूप से हुआ है। अलंकारों के लिए कोई कविता नहीं लिखी गई है।

उपमानों की नवीनता :—

किसी भी वस्तु के [illegible] प्रयोग करके [illegible] [illegible] [illegible] कवि लोग बहुत [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] उपमानों का प्रयोग करते [illegible] हैं। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] कवि ने [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] उपमानों को [illegible] [illegible] है।

1\. [illegible] — [illegible] पृ० [illegible]
2\. [illegible] — [illegible] [illegible]
3\. [illegible] — [illegible] पृ० [illegible]
4— [illegible] — [illegible] पृ० [illegible]
5— [illegible] — [illegible] [illegible]
6— [illegible] — [illegible]

बीकानेर की नई पीढ़ी के सभी कवियों ने अपनी कविताओं में उपमानों का प्रयोग किया है। पोस्टर, पेपरवेट आदि को उपमान बनाया गया है :—

'मेरी वेदना कोई पेपरवेट तो नहीं है
कि दाब दूं

\+ + +

"मेरा दर्द कोई पोस्टर तो नहीं है
कि चिपका दूं।"[1]

उपर्युक्त विदेशी वस्तुओं को उपमानों के रूप में स्वीकृति मिली, पर आस पास के वातावरण से भी कवि ने उपमान चुने हैं —

घास की मेहमानी
किरणों की लम्बी झाडू लेकर"[2]

प्रकृति से भी उपमान चुने हैं पर वे भी परम्परागत न होकर नवीन दृष्टि की स्वीकृति से प्राप्त हैं।

इससे यह स्पष्ट होता है कि इन कवियों ने अपनी कविताओं में बासी उपमानों को ग्रहण नहीं किया है। जितने भी उपमान ग्रहण किये वे सब के सब नवीन हैं। चन्द्रमा और कमल आदि से कोई उपमान ग्रहण नहीं किया गया है। आज से पहले जो एक परम्परागत उपमान हिन्दी साहित्य में चले आ रहे थे वे आज सब समाप्त हो चुके हैं। अब से पहले कविता में उपमानों के क्षेत्र में एक बंधी-बधाई परम्परा रही है। परन्तु अब नये विषयों के आने के कारण कवियों ने उपमान भी नवीन ग्रहण किये हैं।

आज की
मान र

दृश्य (अथवा गोचर) वस्तु के लिए किया जाता है जो किसी अदृश्य का विम्ब प्रति विधान उसके साथ अपने साहचर्य के कारण करती है । अमूर्त, अदृश्य, अप्रस्तुत विषय का प्रतीक – प्रतिविधान, मूर्त, दृश्य, श्रव्य प्रस्तुत विषय द्वारा करता है ।"[1] हम अपने दैनिक जीवन मे प्रतीकों का ही आश्रय देकर बोलते, सुनते और समझते रहते हैं । प्रतीक विस्तार को संक्षेप मे कहने का एक माध्यम है । काव्य और प्रतीक का बहुत घनिष्ट सम्बन्ध रहा है । काव्य मे प्रारम्भ से ही प्रतीकों का प्रयोग होता आ रहा है । यह दूसरी बात है कि उनके स्वरूपों का समय के साथ-साथ परिवर्तन होता रहा है । कैलाश वाजपेयी ने प्रतीकों को तीन भागो मे विभाजित किया है – सांस्कृतिक प्रतीक, प्रकृति प्रतीक और सैद्धांतिक प्रतीक ।[2]

बीकानेर के काव्य मे प्रतीको का प्रयोग हुआ है । प्रतीकों के तीनों रूप स्वतन्त्रता से लेकर आज तक के काव्य मे देखे जा सकते हैं :—

"पर घिरे हुए तो तुम अब भी
लक्ष्मण-लकीर से
रुद्ध हो गया जीवन का
अविकल प्रवाह तो,"[3]

इसी प्रकार आज की कविताओं मे भी इसी प्रकार के सांस्कृतिक प्रतीकों को देखा जा सकता है :—

"न ईसा हूँ, न बुद्ध
और न कोई मसीहा
कि अपनी समझ का ही
कोई नया स्वर गढ़ कर"[4]

× × ×

"[illegible]"[5]

यों की प्रारम्भ की और आज की कविता में देखे जा सकते हैं।

बीकानेर काव्य में सबसे अधिक प्रकृत प्रतीकों का प्रयोग हुआ है। जिसका प्रयोग आलोच्य काल के प्रारम्भ से हो रहा है :—

"पूरी बरसे नैर रहो है
टर्रावें है बचे-कुचे कुछ दुबंल दादुर"[1]

आज की कविता में भी इनका प्रयोग देखा जा सकता है.—

"या तो बिजलियां तड़प गयी है
या किसी आग का उदास कोना'[2]

× × ×

बालू महरिया, गोह, कमलपत्र, राजहंस, शिलानेख, नयी-लिखावट, तम खोली, मरघट, रात वाली मछली, सर्प होठन्न, अडियल बैल, आदि प्रतीकों का प्रयोग बीकानेर की कविताओं में देखा जा सकता है।

सैद्धांतिक प्रतीकों का प्रयोग प्रकृत प्रतीकों की अपेक्षाकृत कम हुआ है—

'पीत ईथर के अमोघित
तप किनारों पर लहराकर"[3]

× × ×

भरे जाने को

एक चौथा आयाम"[4]

इसी प्रकार रोटी, चाय, ऐश्म, हाराकिरी, स्लेज आदि प्रतीकों की योजना बीकानेर की कविता में हुई है। उपर्युक्त सभी प्रकार के प्रतीकों का प्रयोग सभी प्रकार की कविताओं में हुआ है।

बिम्ब विधान:—

बिम्ब योजना का सम्बन्ध कवि की भाव विधायिनी कल्पना से होता है। बिम्ब और काव्य का गहरा सम्बन्ध है। रामचन्द्र शुक्ल ने भी बिम्ब को

१— मालदान देपावत 'मनुज'	विप्लवगान	पृ०	८७
२— सं० नन्दकिशोर आचार्य	संवेदनाहति	,,	४८
३— मालदान देपावत 'मनुज'	विप्लवगान	,,	३०
४— सं० नन्दकिशोर आचार्य	संवेदनाहति	,,	२१

अनिवार्यता को स्वीकार किया है । "काव्य मे अर्थ ग्रहण मा
चलता, बिम्ब ग्रहण अपेक्षित है ।"[1] डॉ॰ कुमार विमल ने
करते हुए लिखा है, "बिम्ब-विधान कला का क्रिया पक्ष है, जो क
होता है । कला-जगत मे कल्पना के विकास की एक सारणी है ।
का अविर्भाव होता है, तब बिम्बों की सृष्टि होती है और जब
या व्युत्पन्न अथवा प्रयोग के पौनः पुन्य से किसी निश्चित अर्थ
जाते हैं, तब उनसे प्रतीको का निर्माण होता है । अतः कला विवे
दृष्टि से बिम्ब कल्पना और प्रतीक का मध्यस्थ है ।"[2]

बिम्बो का वर्गीकरण भी अनेक विद्वानो ने विभिन्न प्रका
वस्तु चित्रण, व्यंजना तथा अलंकृति के आधार पर जो कैलाश वाज
को तीन वर्गों मे रखा है[3] :—

(१) वस्तु प्रधान बिम्ब
(२) भाव प्रधान बिम्ब
(३) अलंकार प्रधान बिम्ब

वस्तु प्रधान बिम्बो मे यथार्थ की दृढ रेखाओं द्वारा कलात्मक मूर्ती
है । भाव प्रधान बिम्बो मे अभिव्यक्ति पक्ष दुर्बल होता है किन्तु
तीव्रता के कारण ये चित्र संवेद्य अधिक होते हैं । अलंकार प्रधा
अलकृति और सज्जात्मकता की प्रधानता होती है । वैसे तो प्रत्येक
अंशो मे अलकार पूर्ण होता है परन्तु इनमें सज्जात्मकता की प्रधान
अनुभूति की नही ।

बीकानेर की कविताओ मे भी बिम्बों का प्रयोग हुआ है ।
बिम्बो का आग्रह जितना आज के कवि मे दिखाई देता है उतना पूर्व
नही रहा था । यही दृष्टि बीकानेर के काव्य मे प्रारम्भ से लेकर आ
कविता मे देखी जा सकती है ।

वस्तु प्रधान बिम्ब का यह उदाहरण दृष्टव्य है :—

१— रामचन्द्र शुक्ल — चिन्तामणि (पहला भाग)
२— डॉ॰ कुमार विमल — सौन्दर्यशास्त्र के तत्व
३— ... वाजपेयी — आधुनिक हिन्दी कविता शिल्प

मन्दिर मे एक सभा बैठी
पण्डितजी कथा सुनाते थे,
श्रोता कुछ ऊंघे जाते थे,
कुछ बैठे पान चबाते थे ।"१

आज की कविताओ मे वस्तु प्रधानता की योजना है परन्तु उसका प्रयोग अधिक नही हुआ है :—

आक्रमण का कारण जानना चाहा मैंने
पास था एक पेड़
पेड़ पर था घोंसला
घोंसले मे होंगे अनेक शिशु"२

वस्तु बिम्बो के अतिरिक्त भाव बिम्ब भी यहा की कविता मे देखे जा सकते है । ये बिम्ब भी प्रारम्भ से लेकर आज तक की कविताओ मे है —

"नंगी पड़ी धरा थी पहले, भूख स्वय अब नंगी है ।
माँ की छाती से चिपटे, शिशु को जीने की लगी है ।
प्यासी आखें बता रही है, खून सूखता जाता है'३

आलोच्य कविता मे गरीबी और भूख का यह बिम्ब सुन्दर रूप से प्रस्तुत किया गया है :—

'आस फूली हुई
पेट चिपका हुआ
हाथ ताने हुए
प्यास मे सुखिया'४

वस्तु बिम्ब और भाव बिम्बो के साथ अलकृत बिम्ब योजना भी बीकानेर की कविता मे है —

१— आचार्य चन्द्रदेव	पडित जी गजब हो रहा है	पृ०	१
२— रामदेव आचार्य	अक्षरो का विद्रोह	,,	४६
३— मेघराज मुकुल	उमग	,,	२०
४— हरीश भादानी	सुलगते पिण्ड	,,	११

"तनपटो पर पायगी झंवार
केवल एक बूंद की प्यास
कोई चातकी मनुहार
लहराई घटाओं से
रिमझिम बरसता सावन
फिर कौन से आकाश आता है
गांग"[1]

× × ×

"जीवन की इस विस्तृत सड़क
अभावों की धुन्ध शाखाओं से लिपटी
कुण्ठाकार हो विचरती
कल्पना की ये जवान किशोरियां"[2]

इस प्रकार से बीकानेर की कविताओं में बिम्ब योजना का भी पूरा निर्वाह हुआ है और सभी तरह के बिम्बो का समावेश किया गया है।

शैली:—

कविता में कल्पना, भाव और भाषा के साथ-साथ शैली का भी महत्व कम नहीं है। काव्य में शब्द या वाक्य का वही महत्व है जो शरीर में अस्थियां और शिराओं का है। शैली वाक्यो का ही समन्वित रूप है" वह एक प्रकार भाषा का वह गुण है जो भावना और विचारो को साकार करता है। जहा कही भाषा मे विचार प्रमुख होता है वहा कलाकार अपने को गद्य मे अभिव्यक्त करता है और जहा भाषा मे भावपूर्ण अनुभूति का प्राधान्य होता है वहा अभिव्यक्ति काव्य रूप मे होती है।"[3] रस को काव्य की आत्मा माना जाता है परन्तु शरीर के अभाव मे आत्मा का अस्तित्व सम्भव नहीं। जिस प्रकार से आत्मा के लिए शरीर की आवश्यकता है उसी प्रकार कविता के लिए शैली की आवश्यकता है। वास्तव मे शैली के अभाव मे साहित्य के अस्तित्व की कल्पना भी नही की जा सकती। शैली केवल काव्य के बाह्य रूप को अलंकृत नही करती, उसके भावगत रूप को भी विकसित करने का कार्य करती है। भाव सौंदर्य की

1— हरीश भादानी सुलगते पिण्ड पृ० ६३
2— सं० नन्दकिशोर आचार्य संवेदनशील „ ५९
3— कैलाश वाजपेयी आधुनिक कविता मे शिल्प „ ७२

साहित्य का सुन्दर शैली ही है। इसी रूप में नाना प्रकार के भावों का उदय होता है परन्तु उनको तब तक अभिव्यक्त नहीं कर सकते जब तक उनके लिए कोई उचित भाषा न हो।" श्यामसुन्दर दास के शब्दों में कहा जा सकता है" किसी कवि या लेखक की शब्द योजना, वाक्यांशों का प्रयोग वाक्यों की बनावट और उसकी ध्वनि आदि का नाम ही शैली है।"[2]

इस प्रकार से यह स्पष्ट है कि काव्य में भावों के साथ ही साथ शैली का महत्व कम नहीं है। अच्छी शैली के अभाव में काव्य प्रभावशाली नहीं बन सकता। काव्य को प्रभावशाली बनाने में शैली का बहुत हाथ रहता है। काव्य प्रवृत्तियों के साथ ही साथ शैली का भी रूप परिवर्तन हो रहा है।

बीकानेर जिले की कविता में शैली के कई रूप देखे जा सकते हैं। प्रारम्भ में यहां पर कुछ प्रकृति सम्बन्धी कविताएं लिखी गई और वह भी प्रकृति को कई स्थानों पर मानवीकरण के रूप में चित्रण किया है ऐसी कविताओं में प्रगीतात्मक और चित्रात्मक शैली का प्रयोग हुआ है। प्रगतिवादी रचनाओं में उद्बोधनात्मक शैली का प्रयोग हुआ है। इसमें किसी को सम्बोधन किया जाता है।

कवि युग-रवि को सम्बोधन करते हुए लिखता है —

'तुम उन गीत भरे छालों में
रंग का अनुसंधान कर रहे
मौत घड़ी पर नाच रही
तुम योवन का आह्वान कर रहे।"[1]

उद्बोधन शैली के साथ यहां पर वर्णनात्मक शैली का प्रयोग भी हुआ है —

'ये काले घन जब जब बरसे
सन सिए पावन पुरवाई
नभ की गोदी में स्पन्दन हो
सद्या मोती ले अमराई"[3]

१— सरोजिनी मिश्रा — साहित्य शास्त्र के सिद्धान्त — पृ० ८२
२— श्यामसुन्दर दास — साहित्य लोचन — ,, ३०२
३— माणकदान देपावत 'मनुज' — विप्लवगान — ,, ४१

बीकानेर के आज का कवि प्रतीकों, संकेतों आदि के माध्यम से अपने भावों को अभिव्यक्त कर रहा है और साथ ही से व्यंग्य का स्वर भी काफी सशक्त रूप से निखरा है। यह व्यंग्य कहीं तो समाज पर है और कहीं आज की व्यवस्था पर है.—

"जैसे कोई तेज स्पीड से भागती हुई मोटर
जैसे तेजी मोटर के पहियों में
फसकर कुचल गया कबूतर
जैसे कबूतर के लोथड़े पर
अपनी समझदार गरदन उठाये
बुभुक्षित कौए
वैसी ही यह आधुनिकता
वैसा ही यह परिवेश
वैसे ही ये सभ्य लोग।"[1]

आज के समाज और उसमें कहे जाने वाले सभ्य लोगों पर इससे अधिक करारा व्यंग्य और क्या हो सकता है। आधुनिकता पर एक करारा व्यंग्य और देखने योग्य हैं:—

"चौदह केरट सोने का
एक गहना
हमारी आधुनिकता"[2]

यह व्यंग्य बीकानेर के आलोच्य काल के पूर्वार्द्ध की कविताओं में भी है। आचार्य चन्द्रदेव की कविताएं इसका प्रमुख उदाहरण है। इन व्यंग्यात्म कविताओं की भाषा भी बहुत तीखी बन जाती है जिससे व्यंग्य का स्वर ब पैनी और गहरी मार करता है। इन्हीं के साथ ही साथ उपमानों ने भी नवीन का रूप धारण किया है। उपमानों का प्रयोग काव्य में प्रारम्भ से ही हो रह परन्तु आज उनके रूपों में परिवर्तन हो गया है। नवीन उपमानों के साथ की कविता में बहुत विदेशी शब्दों का प्रयोग हो रहा है।

---

१. रामदेव आचार्य — अक्षरों का विद्रोह — पृष्ठ ..
२. नन्दकिशोर आचार्य —संवेदन इति " ३४

बीकानेर जिले के काव्य की भाषा

स्वतन्त्रता के पश्चात से आज तक बीकानेर के काव्य में कई परिवर्तन हुए। इसी परिवर्तन के साथ ही साथ भाषा में भी परिवर्तन होता रहा है। काव्य और भाषा का बहुत गहरा सम्बन्ध है। अनुभूति जब अपनी चरम सीमा पर पहुँच जाती है तो वह अभिव्यक्ति चाहती है और उस अभिव्यक्ति के लिए भाषा की आवश्यकता होती है। कवि अनुभूति के साथ-साथ भाषा का भी धनी होता है, जिससे वह अपनी अनुभूति को सही और समर्थ अभिव्यक्ति देता है। यदि अनुभूति अच्छी है और भाषा ने उसका पूर्ण साथ नहीं दिया है तो यह स्पष्ट है कि कवि की वह अनुभूति उस रूप में पाठक तक नहीं पहुँच पायेगी और इसलिए वह अभीष्ट के प्रभाव को उत्पन्न नहीं कर पायेगी। इस दृष्टि से यह कहा जा सकता है कि काव्य के लिए समर्थ भाषा का होना बहुत आवश्यक है।

भाषा से सम्बन्धित इन सब बातों को दृष्टिगत रखते हुए हमें बीकानेर के काव्य की भाषा पर विचार करना है। किसी भी कवि द्वारा अपनी रचना में केवल एक ही भाषा के शब्दों का प्रयोग करना बहुत कठिन है। अतः उनकी रचनाओं में दूसरी भाषाओं के शब्दों का आना भी स्वाभाविक बात है।

(क) बीकानेर-कविता : शब्द समूह

खड़ी बोली के शब्द : तद्भव और तत्सम

बीकानेर की कविता में तत्सम शब्दों का प्रयोग प्रारम्भिक कविता में अधिक हुआ है, पर आज भी [illegible] कविताओं में हो रहा है। [illegible] की कविताओं में तो बड़ी-बड़ी पंक्ति भी संस्कृत की है —

> "[illegible]
> [illegible]"[1]

[illegible] प्रयोग हुआ है। तत्सम शब्दों का प्रयोग [illegible] हुआ है। आज तद्भव शब्दों का प्रयोग बढ़ता जा रहा है —

> "मुझ से ऐसा क्या है
> कि मैं दूसरा नहीं हूँ
> [illegible] विश्वास करो ?

१— [illegible]

[illegible] लगा नहीं रह सकता । इससे अच्छा
का उपयोग [illegible] है । [illegible] एक ऐसा क्षेत्र है जहाँ की
राजस्थानी [illegible] है [illegible] के साथ हिन्दी को साहित्य के क्षेत्र
[illegible] है फिर भी राजस्थानी भाषा के जो शब्द बहुत पहले से ही रचना
हो रही थी, और [illegible] यह बोल-चाल के प्रयोग में आ रही है । साहित्यिक
और बोल चाल की भाषा में [illegible] रहा है परन्तु इन दोनों भाषाओं के
बीच में एक विभाजक रेखा नहीं खींची जा सकती । इस दृष्टि से बोल-चाल के
भाषा के ऊपर भी [illegible] स्वाभाविक है । इसलिए बीकानेर जिले
कवियों की कविताओं में राजस्थानी भाषा के शब्द यत्र-तत्र आ गये हैं। पर इन
प्रयोग से कविता में किसी भी प्रकार की क्लिष्टता नहीं आयी है, यद्यपि इ
प्रयोग से कविता का कुछ सौन्दर्य ही बढ़ा है । राजस्थानी शब्दों के प्रयोग का एक
कारण और भी है, यहां के कुछ कवियों ने पहले राजस्थानी में कविताएं लिखनी
प्रारम्भ की और बाद में हिन्दी में । अतः राजस्थानी का प्रभाव आना स्वाभाविक
है । राजस्थानी शब्दों का जहां प्रयोग हुआ है, वह कविता अपने स्थान विशेष का
बोध कराती है । यदि उस शब्द को वहां से हटा कर दूसरा खड़ी बोली का या
अन्य भाषा का शब्द प्रयोग करें तो उससे कवि अभीष्ट सफल नहीं हो सकता—

"घर का ही था राज काज सब रमा घणी कहते थे ।"[2]

× × ×

"तेरे रेतीले धोरों पर
उल्लास बिछाती सुबह-शाम"[3]

इस प्रकार से यहां पर तुड़ा, मोटे सगड़े, लिपता, थेपड़ी, सुरगा महघर आदि शब्दों को यहां की कविताओं में देखे जा सकते हैं । एक बात और स्पष्ट है यह

१— रामदेव आचार्य अक्षरों का विद्रोह पृ० २४
२— चन्द्रदेव शर्मा महाराज युनियन कविता से । ,, ३४
३— मालदान देपावत 'मनुज' विप्लवगान

था कि राजस्थानी शब्दों का प्रयोग जिस प्रकार प्रारम्भ के कवियों ने किया है उतना प्रयोग आज के कवि नहीं कर रहे है।

विदेशी शब्दावली

भारतवर्ष पर अंग्रेजों से पहले मुगलों ने शासन किया और हिन्दुओं के साथ उनका सम्बन्ध काफी समय तक रहा है। इतने समय में एक साथ रहने के कारण से दोनों संस्कृति परस्पर प्रभावित हुई है और भाषा का भी आदान-प्रदान हुआ है। काव्य की भाषा भी उससे अप्रभावित नहीं रह सकी है। यहाँ तक कि संस्कृत के साथ कविता लिखने वाले कवियों तक की भाषा में (प्रिय-प्रवास) उर्दू के शब्द आ गये है। कुछ कवियों की कविताओं में इनका प्रयोग अधिक हुआ है -

कहीं गम के खजाने है
कहीं पर जाम चलते है

× × ×

गुलशन में फिजाओं को, कहीं बिकती है शीशों मे"[1]

हाँ प्रारम्भिक कविताओं में इनका उपयोग कुछ कम हुआ है। हास्य कविताओं में भी इनका प्रयोग यत्र तत्र देखा जा सकता है —

'तो खुदा हसीनों की दुनिया में इनका भी नम्बर लाये।"[2]

इस प्रकार से यहां की कविताओं में जन्नत जुल्फें हकीम आदि शब्दों को यत्र-तत्र देखा जा सकता है।

भारतवर्ष पर अंग्रेजों ने करीब सौ वर्ष तक राज्य किया। अत उनकी भाषा सीखना भी यहां के लोगों के लिए आर्थिक दृष्टि से आवश्यक हो गया था। इतने अधिक समय के कारण अंग्रेजी शब्द हमारी भाषा में बहुत अधिक घुल-मिल गये हैं और बहुत अधिक ही प्रचलित है। प्रयोगवाद के साथ हिन्दी कविता में अंग्रेजी शब्दों का प्रचलन हो गया है। बीकानेर की कविता में अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग भी हुआ है। यह प्रयोग प्रारम्भ की अपेक्षा बादकी कविता में अधिक हो रहा है —

१— ओम केवलिया — शबनम — पृ० ६१
२— भवानी शंकर व्यास — मुझे हंसी आती है — पृष्ठ १२

वह दनुज-विनिन्दक बन बैठी
युग की मनोरंजन का कायर"[1]

× × ×

वह उठे सभी मुझको कह कर "था गया गधा सो एक नया
है यहाँ इधर का पूत बना पर सब भी मैंने बहुत सहा।"[2]

आज की कविता में इसका प्रयोग कुछ और अधिक हो रहा है :—

'सर्वत्र सिनेमा "नो स्मोकिंग इन ऑडिटोरियम" कहे मत्ते
इक प्लाटफॉर्म पर बाई को पैसेंजर्स, नो स्मोकिंग इन ट्रेन कहे।"[3]

परन्तु ऐसा प्रयोग अंग्रेज कविता में नहीं हुआ है और न ही कवियों ने ऐसा प्रयोग किया है।

इस प्रकार से बीकानेर के काव्य में राजस्थानी, संस्कृत, उर्दू और अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग यत्र-तत्र देखने को मिलता है। परन्तु इन शब्दों से किसी भी प्रकार से कविता में क्लिष्टता नहीं आयी है, अपितु उसका सौन्दर्य बढ़ा ही है।

(ख) मुहावरों का प्रयोग

डॉ० ओमप्रकाश गुप्त के अनुसार "प्रायः शारीरिक चेष्टाओं, अस्पष्ट ध्वनियों, कहानी और कहावतों अथवा भाषा के कतिपय विलक्षण प्रयोगों के अनुकरण या आधार पर निर्मित और अभिधेयार्थ से भिन्न कोई विशेष अर्थ देने वाले किसी भाषा के गठे हुए रूढ़-वाक्य, वाक्यांश अथवा शब्द इत्यादि को मुहावरा कहते हैं।"[4] मुहावरों के प्रयोग से काव्य में एक अनूठा सौन्दर्य आ जाता है। भावों की अभिव्यक्ति को मर्मस्पर्शी एवं हृदयग्राही बनाने में मुहावरे बहुत सहायक सिद्ध होते हैं। डॉ० मनोहर लाल गौड के अनुसार "मुहावरेदार वाक्यों में वाचक वाक्यों की अपेक्षा चमत्कार और अर्थद्योतन की विस्तृत भूमि तो अधिक होती है पर लक्षणाओं की सी दुरूहता इनमें नहीं होती। इसलिए इनका

१— भवानी शंकर व्यास — मुझे हंसी आती है — पृ० ७
२— आचार्य चंद्रदेव — पंडित जी गजब हो रहा है — पृ० १४
३ — योगेन्द्र किसलय की कविता से।
४— डॉ० ओमप्रकाश गुप्त — मुहावरा मीमांसा — ,, ४१

सर्व साधारण में प्रयोग किया जा सकता है।"[1]

बीकानेर की कविता में भी यत्र-तत्र मुहावरों का प्रयोग हुआ है। मुहावरों का प्रयोग अन्य कविताओं की अपेक्षा हास्यरस की कविताओं में अधिक हुआ है, अन्य प्रकार की कविताओं में इनका प्रयोग हुआ अवश्य है पर इतना नहीं :—

सावन के अन्धे मीत हमरंग कुछ समझ न पाते क्या होगा"[2]

राष्ट्रीय कविताओं में भी मुहावरों का प्रयोग हुआ है :—

'युग-युग तक तो तपा रहा है भारतीय मे
दांत उखाड़े ही जायेंगे उस विषधर के
सौ सुनार की, फिर लुहार की आखिरी"[3]

हास्यरस की कविताओं में तो मुहावरों ने इसी को और अधिक बढ़ा दिया है :—

"जो बात बात करते हो तो कुपके से बात लगाती है
हो जाय लड़ाई घर की तो माथों पर आफ़त आ जाती है।"[4]

× ×

'जो भी हम पकाते थे न मिले जो और दिखाते थे न मिले
यह मजा प्राप्त हो फिर फिर कर कम दाम दिखाते थे"[5]

इस प्रकार से इन मुहावरों का प्रयोग आज हास्य की कविताओं और राष्ट्रीय कविताओं में तो हो ही रहा है परन्तु अब अन्य प्रकार की कविताओं में इनका प्रयोग कुछ कम हो रहा है

(ग) शब्द शक्तियां व काव्य गुण

काव्य में तीन प्रकार की शब्द शक्तियां [illegible] है और तीन प्रकार के गुण भी —

शक्तियां

१) अभिधा

१ — डॉ० मनोहर लाल गौड़ [illegible] पृ० [illegible]
२ — [illegible] [illegible] [illegible]
३ [illegible] [illegible]
४ — भवानी शंकर [illegible] [illegible] [illegible]
५ —

२) लक्षणा

३) व्यंजना

गुण :—

१) ओज

२) माधुर्य

३) प्रसाद

आज की कविता ने भाषा के प्रयोग में क्रांतिकारी परिवर्तन किये हैं। उसने अभिव्यक्ति के ऐसे-ऐसे अनेक मार्ग खोज निकाले हैं, जिनसे पूर्व कवि परिचित नहीं थे। उन मार्गों के अनुसंधान में लक्षणा शब्द शक्ति ने भी काफी योगदान दिया है।

बिम्ब-विधान को भी अधिक बल मिला है। ऐसे कुछ लाक्षणिक प्रयोगों के उदाहरण यहां दिये जा रहे हैं :—

''तेरा नफरत से मुसकाना
मुझ से अंगारे भरना है'' 1

× + +

जो तलवार से कटे नहीं
मैं तो वह बहता पानी हूं।' 2

हास्य की कविताओं में भी लक्षणा शब्द शक्ति का प्रयोग हुआ है :—

'जयपुर अजमेर रोड चलती कितनों के बीचों बीच यहां''3

व्यंजना की क्रिया तो यत्र-तत्र बिखरी पड़ी है :—

''एक स्वस्थ व सुन्दर घोड़े पर
आसन जमाये
जब एक कुरूप गधे ने

१. आचार्य चन्द्रदेव शर्मा —पण्डित जी गजब हो रहा है पृष्ठ ५५
२. ,, ,, — ,, ,, ,, ,, १६
३. भवानी शंकर व्यास —मुझे हंसी आती है पृष्ठ ६

घोड़े पर चाबुक चलायो
वो घोड़ा तिलमिला उठा।"[1]

अभिधा शब्द शक्ति का तो कहीं भी अभाव नहीं है। निष्कर्ष रूप से यही कहा जा सकता है कि बीकानेर के काव्य में तीनों ही शब्द शक्तियों का प्रयोग हुआ है।

बीकानेर के काव्य की भाषा में ओज-माधुर्य और प्रसाद तीनों गुण हैं। राष्ट्रीय कविताएं यहाँ बहुत लिखी गई हैं और इन कविताओं में ओज गुण ही है और इसके अतिरिक्त अन्य कविताओं में भी इस गुण को देखा जा सकता है :—

"मैं वह अंगारे फेंकूंगा
मैं वह ज्वाला धधकाऊंगा
जो धधक उठेगी धांय धांय
जिससे मैं जगत मिटाऊंगा।"[2]

"विजय हमारी है" संग्रह की भाषा ओज गुण प्रधान है। वीर रस प्रधान इस संग्रह की कविताओं में भाषा में महाप्राण व्यंजनों से युक्त शब्दावली, जिसमें अनुरणनात्मकता होती है, अधिक मिलती है। ओज के साथ माधुर्य गुण की भी यहाँ कमी नहीं है —

'सावन लिपट त्रिवेणी उर पर
[illegible] है कौन
[illegible]
[illegible] कौन।'[3]

ओज और माधुर्य के साथ प्रसाद [illegible] है [illegible] कविताओं में [illegible] हुआ है —

'[illegible]
[illegible]
[illegible]'

[illegible]

अर्घ्य हो स्वीकार दीन की, चरण-शरण में आन पड़ा हूं ।"[1]

× × +

उपनिषदों की इस भूमि में धर्म कर्म सब फूले
संस्कृति भूली यहीं डाल कर ऊंचे-ऊंचे झूले ।"[2]

इस प्रकार बीकानेर की कविताओं मे कवि ने भाषा के गुण द्वारा उस प्रभाव को उत्पन्न करने की चेष्टा की है जो उसके अन्तरंग द्वारा उ... करना कवि का अभीष्ट होता है और उसे उसमे पर्याप्त सफलता भी मिली है ।

बीकानेर काव्य में छन्द योजना

छन्द और काव्य का आदि काल से ही सम्बन्ध है । आदि मानव के कंठ मे जब कविता फूटी होगी तो उसका रूप भी छन्दोबद्ध ही होगा । इससे यह तो स्पष्ट है कि छन्द का जन्म बहुत पहले हो गया था परन्तु कब हुआ इसके बारे में निश्चित रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता छन्द शास्त्र के आदि प्रवर्तक महर्षि पिंगल माने जाते हैं । इसलिए छन्दशास्त्र को पिंगल भी कहते हैं । मात्रा, वर्ण, विराम, गति, लय तथा तुक आदि के व्यवस्थित सामंजस्य को ही छन्द की संज्ञा दी जाती है ।

ऐतिहासिक दृष्टि से छन्दो के दो भेद हैं — वैदिक और लौकिक । लौकिक छन्द को भी दो भागो मे बाटा जाता है — मात्रिक और वर्णिक । मात्रा के आधार पर रचे गये छन्द मात्रिक और वर्ण के आधार पर रचे हुए छन्द वर्णिक कहलाता है ।"[3]

अब यह देखना है कि बीकानेर के काव्य मे किस प्रकार के छन्दो का प्रयोग किया गया है । बीकानेर के काव्य में मात्रिक छन्द ही लिखे गये हैं और वे भी आलोच्यकाल की सभी कविताओ मे नहीं मिलते अपितु शम्भूदयाल, आचार्य चन्द्रमौलि, मेघराज मुकुल, मानकचन्द रामपुरिया आदि कवियो की कविताओ मे विशेष रूप से देखे जा सकते हैं । इन कवियो मे भी छन्द योजना प्रारम्भिक कविताओं मे है, बाद की कविताओ मे अभाव है ।

१— आचार्य चन्द्रमौलि — विविधा — पृ० १२
२— शम्भूदयाल सक्सेना — नीहारिका — ,, ८५
३— कैलाश वाजपेयी — आधुनिक हिन्दी कविता में शिल्प — ,, २३

मात्रिक छन्दों में ही सबसे अधिक १६ मात्राओं वाले छन्दों की रचना हुई है। यह सभी कवियों की कविताओं में है।

पद्धरि छंद

"परिवर्तित ध्वनि बहना समीर
विहगावलि के स्वर में विलास।
वेदना-मदन, अभिनव-हीन,
कण कण में छाया मधुर हास।"[1]

चन्द्रकला

"वह मदन-मरम में बनी हुई,
वह छवि-सुषमा की छुई मुई
वह आसमान की चादर के
नीचे सोती से निकलता।"[2]

आचार्य चन्द्रमौलि, की "वीथिका" और माणकचन्द रामपुरिया के 'आभास' में इसी छंद का प्रयोग अधिक हुआ है। इसी प्रकार 'मधुज्वाल' और 'स्वरालोक' में भी १६ मात्राओं के छंद का प्रयोग हुआ है। १६ मात्राओं के अतिरिक्त अन्य मात्राओं के छंद भी हैं —

राधिका

"यह अर्थहीन कल्पना स्वप्न-द्रष्टा की,
मानस में यह व्यभिचार किया करती है।
कुछ महल हवा में बनते और बिगड़ते,
विद्रूप जीवन की माला यहां जलती है।"[3]

सार छन्द :—

आजे कौन भाव में मैंने सोची थी यह रेखा
मेरी मधुर कल्पना को किस दिव्य दृष्टि ने देखा।"[4]

---

१ आचार्य चन्द्रमौलि वीथिका पृ० १
२ शम्भूदयाल सक्सेना रैनबसेरा " १२
३. मेघराज मुकुल उमंग " ३१
४ शम्भूदयाल सक्सेना नीहारिका पृ० ३१

ताटक छन्द :—

भाई रण को चले, बहिन । तुम रक्षा-बन्धन लाओ तो।
हृद दृग तिलक करो जब आवें गीत विजय के गाओ तो।
और चले जाने पर बन कर देश-सेविका धाओ तो।
पग-पग पर आहत हो किन्तु न तुम घबराओ तो।"[1]

उपर्युक्त छन्दों के अतिरिक्त और छन्द भी काव्य में देखे जा सकते हैं। परन्तु वह केवल प्रारम्भ की कविताओं में ही है आज की कविताओं में नहीं।

इस प्रकार से जहां बीकानेर जिले में स्वातन्त्र्योत्तर काव्य-चेतना आयी उससे काव्य का बहिरंग पक्ष भी अछूता नहीं रहा है। यहां के कवि ने जहां स्थानीय विषयों का वर्णन किया है वहां पर स्थानीय शब्दों का भी यत्र-तत्र प्रयोग किया जिससे विषय की स्थानीयता अधिक प्रभावशाली बन कर पाठक के सम्मुख उपस्थित हुई। इसके साथ ही जहां बीकानेर के काव्य ने कुछ समय तक हिन्दी काव्य का अनुकरण किया और आज वह उसके कदम से कदम मिलाकर चल रहा है यही बात यहां के कला-पक्ष के बारे में कही जा सकती है। यहां का कवि केवल भाव-पक्ष की दृष्टि से ही आगे बढ़ने में सफल नहीं हुआ है अपितु उसने कला-पक्ष को भी साथ रखा और उसमें भी नवीनता का प्रयोग कर रहा है।

= =

हिन्दी साहित्य में बीकानेर काव्य का वैशिष्ट्य और योगदान

हिन्दी काव्य के इतिहास पर यदि हम दृष्टि डालें तो उससे यह स्पष्ट हो जायेगा कि हिन्दी काव्य में आज तक बहुत सी प्रवृत्तियां जन्म ले चुकी हैं। किसी प्रवृत्ति का समय कुछ अधिक रहा है और किसी का कम। आधुनिक युग में ही कविता ने कई करवटें बदली है। रीतिकाल की समाप्ति पर जहां से आधुनिक काल (सं० १६००) प्रारम्भ होता है वहां कविता का एक अलग स्वरूप है जिसे भारतेन्दु काल की कविता कहा जाता है। उसके बाद कुछ समय तक द्विवेदी युग की कविता का बोलबाला रहा है और फिर छायावाद, प्रगतिवाद और प्रयोगवाद का समय रहा है। इस प्रकार आधुनिक काल में स्वतन्त्रता से पूर्व हिन्दी काव्य में कई प्रवृत्तियों ने जन्म लिया है।

सन् १६४७ को भारत स्वतन्त्र हुआ और रियासतों का एकीकरण हुआ तथा इससे आपस में सम्पर्क बढ़ने लगा। देशी राज्यों में वाणी पर लगा हुआ प्रतिबंध भी इसी परतन्त्रता के साथ चला गया। जो भावनाएं स्वतन्त्रता से पूर्व दबी पड़ी थीं उनको अब अभिव्यक्ति मिलने लगी। बीकानेर में यद्यपि स्वतन्त्रता से पूर्व भी कविताएं लिखी जा रही थीं परन्तु स्वतन्त्र होते ही यहां के लोगों का ध्यान साहित्य-सर्जना की ओर गया और सभी ने अपनी-अपनी रुचि के अनुकूल पर [illegible] हिन्दी के विषयों के अनुसार कविताएं लिखनी प्रारम्भ कर दी। यही कारण है कि यहां थोड़े समय में सभी प्रवृत्तियों की कविताएं एक साथ लिखी जाने लगी। किसी ने छायावादी ढंग की रचनाएं प्रारम्भ की, तो किसी ने प्रगतिवादी कर दी। और इस प्रकार एक साथ ही बहुत-सी दबी हुई वाणी को अभिव्यक्ति प्राप्त हुई।

साहित्य का वातावरण तो यहां पर प्रारम्भ से रहा है चाहे वह संस्कृत साहित्य परक हो और चाहे वह हिन्दी साहित्य परक हो। स्वतन्त्रता से पू

[illegible]

भाव वैशिष्ट्य और योगदान

स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद हिन्दी काव्य में प्रयोगवाद चल रहा था और बीकानेर में हिन्दी कविता की यह शैशव अवस्था थी। इसी समय में यहाँ एक साथ कई प्रवृत्तियों का प्रचलन हुआ। हिन्दी काव्य के अनुकरण पर यहाँ जो छायावादी कविताएं लिखी गईं वे कविताएं उस स्तर तक नहीं पहुँच पायीं जिस प्रकार की हिन्दी काव्य में छायावादी कविताएं अपने समय में लिखी जा चुकी थीं। इसका कारण यह है कि बीकानेर में तो यह हिन्दी कविताओं का प्रारम्भिक काल था और हिन्दी साहित्य में छायावादी कविता उसके विकास की स्थिति की द्योतक है। परन्तु इससे यह अवश्य हुआ कि बीकानेर में हिन्दी कविता का एक ऐसा वातावरण सा बन गया था, जिससे अन्य प्रवृत्तियों और कवियों का भी प्रोत्साहन और मार्ग-दर्शन हुआ। इस समय में अधिकतर कविताएं प्रकृति चित्रण और राष्ट्रीय भावना को लेकर ही लिखी गई थीं। राष्ट्रीय कविता के रूप में कवियों के जो उद्‌गार प्रस्फुटित हुए उसमें उनकी राष्ट्रीय भावना झलकती है और प्रकृति-चित्रण में स्थानीय रंग का पुट दिखाई दे रहा है। परन्तु इस प्रवृति का प्रचलन अधिक समय नहीं रहा और प्रगतिवादी स्वर अधिक मुखरित होने लगा। इसका यह अर्थ नहीं कि छायावादी स्वर पूर्णतया ही लुप्त हो गया।

समाज में चली आ रही मान्यताओं, परम्पराओं और रूढियों आदि सभी का विरोध करना वास्तव में कठिन काम है। सामाजिक इतिहास पर दृष्टिपात [illegible] होता है कि समाज में व्याप्त इन परम्पराओं का विरोध

करने वालों में बहुतों को अपने प्राणों तक से हाथ धोने पड़े हैं। बीकानेर में भी इस प्रकार की पुरानी परम्पराओं, धार्मिक अन्धविश्वास और सामाजिक रूढ़ियों आदि ने समाज को बुरी तरह से जकड़ रखा था। बीकानेर के कुछ कवियों ने धार्मिक आडम्बर, सामाजिक रूढ़ियों आदि के विरुद्ध आवाज उठायी और उन्हें समाप्त करने की घोषणा की। इसका यह अर्थ नहीं कि प्रगतिवादी काव्य में इन सबके विरुद्ध ही आवाज लगाई जाती है, अपितु यहां के कवि को वास्तव में अपने आस-पास के समाज और धर्म में ये सब बातें नजर आ रही थी अतः वह विद्रोहात्मक स्वर से इन सभी का नष्ट-भ्रष्ट करने लगा और साथ ही क्रान्ति का आवाहन भी उसने किया क्योंकि बिना क्रान्ति के इन सबका नष्ट होना सम्भव नहीं है। इन कवियों ने मूर्ति पूजा का खंडन किया और पत्थर के भगवान का अस्तित्व ही समाप्त करने की घोषणा की और यह बताया कि मन्दिर में बसने वाला ईश्वर साधारण पत्थर के सिवाय कुछ नहीं है। इन धार्मिक पाखण्डों के विरोध के साथ इन्होंने शोषकों का भी विरोध किया और इनको समाज का सबसे बड़ा शत्रु घोषित किया। इस प्रकार से इन कवियों ने धार्मिक पाखण्डों, सामाजिक रूढ़ियों और परम्पराओं का घोर विरोध किया है और इन सबको नष्ट करने के लिए सामाजिक क्रान्ति का नारा लगाया। इस प्रकार की कविताएं लिखने वाले कवियों में अधिकतर वे थे जो स्वतन्त्रता से पूर्व ही दबी जबान से कुछ बोलते थे, परन्तु स्वतन्त्रता के उपरान्त ये पूर्ण मुखर होकर बोले। जब इस प्रकार की कविताएं बीकानेर में लिखी जा रही थी तो इसी समय में नये कवियों ने काव्य के क्षेत्र में पदार्पण किया।

जिस प्रकार की अस्पष्ट अभिव्यक्ति, रोमानियत और छुटके-फुटके भाव आदि किसी भी कवि की प्रारम्भिक कविताओं में होना स्वाभाविक है। वैसी ही दृष्टि बीकानेर की नयी पीढ़ी की प्रारम्भिक कविताओं में है। पर नयी पीढ़ी का कवि इस समय पीढ़ी की प्रवृत्ति का अनुकरण नहीं करना चाहता था। वह जल्दी से जल्दी हिन्दी काव्य के साथ चलना चाहता था और इसी भावना से उसने अपना मार्ग भी कुछ तय किया जिसके परिणाम स्वरूप वह आज हिन्दी काव्य के साथ चल रहा है, पीछे नहीं है। इससे यह बात निःसंकोच रूप से कही जा सकती है कि आगे आने वाले काल में बीकानेर का कवि हिन्दी काव्य को बहुत कुछ दे सकेगा।

बीकानेर में हास्य की कविताएं भी लिखी गई हैं। प्रारम्भ में आचार्य चन्द्रदेव शर्मा ने ऐसी ही कविताएं लिखीं परन्तु वही हास्य की अपेक्षा व्यंग्य की

प्रधानता है। आगे चलकर भवानी शंकर व्यास ने शुद्ध हास्य की कविताए लिखी है और उनके दूसरे संग्रह की कविताओं मे यद्यपि कहीं-कहीं व्यंग्य भी है, पर हास्य की कमी नहीं है। हास्य रस की इन कविताओं का हिन्दी के हास्य रस में विशेष योगदान माना जा सकता है।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद देश पर दो बार आक्रमण हो गये और दोनों अवसरों पर ही देश भर मे बहुत सी राष्ट्रीय कविताए लिखी गई है। इन कविताओं मे कहीं राष्ट्रीय गौरव की बात है तो कहीं अपनी मातृभूमि पर बलिदान होने वाले वीरों की गाथा है। कहीं शत्रुओं को ललकारा है तो कहीं उनकी दुष्टता को कोसा है। इन दोनों अवसरों पर बीकानेर मे भी इसी प्रकार के काव्य की रचना हुई है। ऐसे समय मे यहां के पिछड़े हुए काव्य ने हिन्दी काव्य के साथ ही कदम बढ़ाने प्रारम्भ कर दिये है।

शिल्प वैशिष्ट्य और योगदान

बीकानेर मे स्वतन्त्रता से पूर्व संस्कृत और डिंगल मे बहुत-कुछ लिखा गया है। अतः उनका प्रभाव आलोच्य काल पर पड़ना स्वाभाविक ही है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात उसी समय मे लिखने वाले कवियों की भाषा में तत्सम शब्दों का प्रयोग बहुत अधिक हुआ, परन्तु कालान्तर मे यह बात नहीं पायी जाती और उसके बाद निरन्तर यहां के काव्य मे तद्भव शब्दों का प्रयोग बढ़ रहा है। नयी पीढ़ी के कवियों की कविताओं मे विदेशी शब्दों का प्रयोग भी बहुत बढ़ रहा है और यह प्रयोग केवल बीकानेर मे ही नहीं अपितु आज की हिन्दी कविता मे भ[illegible] ऐसा हो रहा है। अतः इस प्रभाव से बीकानेर के काव्य का अछूता रह[illegible] असम्भव है।

बीकानेर काव्य की भाषा सम्बन्धी एक विशेषता यह है कि बहुत [illegible] कवियों ने उक्त स्थानीय जीवन व प्रकृति का चित्रण किया है तो उनके [illegible] स्थानीय शब्दावली का प्रयोग आवश्यकतावश किया है क्योंकि कुछ वस्तुओं [illegible] लिए हिन्दी मे शब्द है ही नहीं। इस प्रकार से इन शब्दों का अधिक प्रयोग [illegible] पर ये वास्तव मे हिन्दी कोष के शब्द बन जायेंगे और इस दृष्टि से इनका योगदान हिन्दी भाषा के लिए प्रशंसनीय ही माना जायगा। वास्तव मे देखा [illegible] तो भाषा के विकास मे इस प्रकार के कवियों का योगदान बहुत होता र[illegible] [illegible] ने शब्द मिलाने के लिए या फिर अपने ढंग की आवश्यकता [illegible] [illegible] परिवर्तन कर उन्हें कविता मे प्रयोग किया है [illegible]

प्रकार के धीरे-धीरे प्रयोग मे चलने लग गये है ।

राजस्थानी के 'मादक' 'अमरजान', 'मदा सुरंगा' मरवणा और 'भूगे का पुट' आदि ऐसे शब्द है जो यहां की संस्कृति से सम्बन्ध रखते है और उनके पीछे इस परम्परा है ऐसे शब्द लाकर हिन्दी की भी वृद्धि कर रहे है। इसी प्रकार अनेक शब्दों का प्रयोग हुआ है। जिसमे एक ओर तो स्थानीय वातावरण अवश्य मिलती है और दूसरे नये शब्दो का प्रयोग भी हुआ है। इस प्रकार अनेक नये शब्दो का निर्माण यहां पर हुआ है और होता जा रहा है। धीरे-धीरे इन शब्दों के प्रयोग करने पर एक दिन ये हिन्दीकोश मे अवश्य ही वृद्धि करेंगे।

बीकानेर जिले मे, कविताओं के साथ-साथ गीत भी लिखे गये हैं पर कविताओं की अपेक्षा गीत कम लिखे गये हैं। बीकानेर के प्रारम्भिक गीत अवश्य छंद मे बंध कर आये हैं, परन्तु आगे चल कर इस बन्धन को गीतकार तोड़ता हुआ दृष्टिगोचर होता है। आज किसी भी प्रकार से गीत छन्द के बंधन में नहीं है उसमे अपनी एक लय है। यद्यपि यहां पर लम्बे गीत भी लिखे जा रहे हैं पर साथ ही गीतों को छोटे-छोटे टुकड़ो मे तोड़ कर भी गाया जा रहा है। यहां के गीत राजस्थानी संस्कृति का चित्र प्रस्तुत करते हैं, और उसमे सहायता इसमे प्रयुक्त शब्द देते हैं, जिससे उनमे स्थानीय रंग आ जाता है।

बीकानेर के काव्य मे उद्बोधनात्मक, वर्णनात्मक, प्रतीकात्मक, व्यंग्यात्मक आदि शैलियों का प्रयोग रहा है। प्रतीकात्मक शैली का प्रयोग अब और अधिक बढ़ रहा है। व्यंग्यात्मक शैली यहां पर प्रारम्भ मे ही रही है। आज भी इसका प्रयोग बढ़ता ही जा रहा है।

इस प्रकार से बीकानेर मे काव्य का जन्म यद्यपि हिन्दी काव्य जगत मे बहुत बाद मे हुआ और इस दृष्टि से जन्म के उपरान्त इस काव्य ने हिन्दी काव्य से बहुत कुछ सीखा है और कुछ समय तक उसी के चरण-चिन्हों पर चलता रहा है परन्तु इसके चलने की गति काफी तेज रही है और इस प्रकार से जिस रास्ते को पार करने के लिए हिन्दी काव्य जगत को बहुत से वर्ष लो देने पड़े उसी रास्ते को बीकानेर काव्य ने बहुत ही कम समय मे पार कर लिया और इसी गति के कारण आज वह हिन्दी काव्य से पीछे नहीं है, अपितु साथ-साथ चल रहा है।

आधार पुस्तकें

आचार्य चन्द्रदेव शर्मा
आचार्य चन्द्रमौलि
" "
श्रीम केवलिया
स० नन्दकिशोर आचार्य
बल्लभेदा दिवाकर
" "
" "
भरत व्यास
भवानी शंकर व्यास 'विनोद'
" " " "
मंगल सक्सेना
माणकचन्द रामपुरिया
" "
" "
" "
" "
" "
मालदान देपावत 'मनुज'
मेघराज 'मुकुल'
" "
रामदेव आचार्य
संहिता द्वारा सम्पादित
शम्भूदयाल सक्सेना
" "
" "
" "
"

—पंडित जी गजब हो रहा है
—वीथिका
—वैजयन्ती
—शबनम
—संवेदन इति
—नई वाणी
—मैं एकाकी नहीं चलूंगा
—मैं गीत सुनाता जाऊंगा
—मरुधरा
—मुझे हंसी आती है
—हास्यमेव जयते
—मैं तुम्हारा स्वर
—आभास
—कल्लोल
—मधुज्वाल
—संदीप्ति
—संवेग
—स्वरालोक
—विप्लवगान

का विद्रोह
हमारी है।
ता

रवा
रिम

—मन्वन्तर
—रत्न रेणु
—रैन बसेरा
—अधूरे गीत
—एक उजली नजर की सुई
—सपन की गली
—सुलगते पिंड
—हंसिनी याद की
—प्रस्तुति

म सक्सेना

सहायक पुस्तकें

—मुहावरा मीमांसा
—राजस्थान का इतिहास
—बीकानेर राजघराने का केन्द्रिय सत्ता से सम्बन्ध
owlett — Gazetteer of the Bikaner State
—सौन्दर्य शास्त्र के तत्व
—आधुनिक हिन्दी कविता में शिल्प
गुप्त —साहित्यिक निबन्ध
—काव्य के रूप
र्य —बीकानेर परिचय
चन्द ओझा —बीकानेर राज्य का इतिहास— पहला भाग
" " —बीकानेर राज्य का इतिहास— दूसरा भाग
ी —संस्कृत साहित्य को बीकानेर की देन (अप्रकाशित)
—[illegible]